# परख-सिरजण

डा. पुरुषोत्तम आसोपा

मरुधर साहित्य मन्दिर, बीकानेर

राजस्थानी भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी रे आर्थिक सहयोग सू-प्रकाशित



प्रकाशक
मरुधर साहित्य मंदिर
124, बिन्नाणी बिल्डिंग,
अलखसागर बीकानेर
संस्करण पैलडो, 1987
मूल्य पैंतीस रुपिया
आवरण शिवजी
कलापक्ष काइदमली
मुद्रक
साखला प्रिंटस, बीकानेर

Parakh Sirjana By Dr Purushottam Asopa Rs 35 00

# आमुख

- राजस्थानी भाषा मे आलोचना री अखरण आळी कमी है। साहित्य रे विकास सारू इण कनी कोशिश करण री मोकळी जरूरत है।
- आ पोथी इण लिहाज सू राजस्थानी साहित्य री पैली व्यवस्थित, शास्त्रीय आलोचना री पोथी कैही जाय सके।
- इण रा सगळा निबन्ध पत्रिकावा मे प्रकाशित है या जुदी-जुदी सगोष्ठिया सारू शोध परचा रे रूप मे प्रस्तुत कियोडा है। गोष्ठिया माय इणा माथे मोकळी चर्चावा हुय चुकी है। अर लोगा ने ऐ खासा आकर्षित कर चूका है।

—डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा

# क्रम

# राजस्थानी भाषा, समस्यावां अर उणां रो निराकरण

राजस्थानी भाषा री समस्यावा री चर्चा करणै सू पहली सामान्य रूप सू किणी भी भाषा रै माय समस्यावा क्यू उपज्या करै, इण बात री जाणकारी जरूरी है। भाषा रो सिरजण समाज करया करै, पण उण रो प्रयोक्ता व्यक्ति हुवै है। अेक अकेलो आदमी भाषा रो ना तो सिरजण कर सकै अर ना उणनै आपरी सगळी ताकत लगायर भी नूवो रूप देय सकै। जिण समाज मे बो जनम लेवै, सिर्फ उणी समाज सू दियोडी भाषा नै उणनै अनुकरण सू सीखणी पडै। इण रै बावजूद हर आदमी आपरी निजू पिछाण कायम करण खातर भाषा रै सागै प्रयोग करण सू पाछो कोनी रैवै। आदमी री आपरी बुद्धि रो स्तर भी भाषा रै सामान्य प्रचलित रूप नै नूवा-नूवा अदाज देवतो रैवै। यू भाषा रै सागै जाण बूझ'र कियोडा प्रयास अर अणजाण तरीका सू हुयोडी भाषा री भूला रै माय सू हीज भाषा री समस्यावा पैदा हुया करै।

समाज जिण भाषा नै शताब्दिया माय जाय'र निर्मित करै उण नै मिनख नै आपरे टाबर पणै माय न केवळ सीखणी पडै बल्कि जीवण रै थोडा सा बरसा माय हीज आपरी सगळी परिस्थितिया माय उणरो हीज असरदार इस्तेमाल करण री कोशिश करणी पडै। इण कोशिश माय उण रा आपरै विचारा री अभिव्यक्ति, निजी अनुभूतिया रो अकण अर सम्प्रेषण भाषा सू मोकळी अपेक्षावा करै। विचारा नै सुहावणै अदाज माय सम्प्रेषित करण री बात हीज भाषा रै कोण सू व्यक्ति अर समाज रै अनोखै सम्बन्ध री व्याख्या किया करै। समाज री सत्ता जिण आचार-विचार-शीलता, मूल्य मर्यादा या रीति नीति माथै निर्भर करै, उणा मू हीज उण समाज री भाषा निर्मित हुया करै। जद कै आपरी रुचि, सस्कार, शिक्षा, मानसिक बणगट अर कार्य क्षेत्र री आवश्यकतावा रै मूजब मिनख उणरो इस्तेमाल किया करै है। अै सगळी बाता 'मुडे मुडे मतिभिन्ना' रै सिद्धात रै कारण अेक ही भाषा रै खातर सैकडू रूपा मे दबाव नाखती रैवै। भाषा भला ही अेक हुवो पण उण रा प्रयोक्ता अनेक हुया करै। भाषा रा प्रयोक्ता व्याकरण रा पडित भी हुवै जिका कै उण रै व्याकरण-सम्मत स्वरूप सू अेक इच भी आगै को सरकणो चावै नी, तो उणरा प्रयोक्ता मोकळो तादाद वाळा अनपढ लोग भी हुवै जिका नै व्याकरण सू कोई

प्रयोजन कोनी हुवै । कबीर जेहडा लट्ठमार आदमी भी भाषा रो प्रयोग करै अर उण सू तानाशाह जेहडा व्यवहार करै, भाषा री गुलामी करण री जागा उण सू हर भात री स्वतन्त्रता लेवणी चावै । तो कल्पना री सूक्ष्मतर कोरा नै अर भावा री बारीक-सी अणदीसती रेख नै पकडण री कोशिश करणिया कवि-साहित्यकार भी भाषा रा प्रयोक्ता हुया करै । अ लोग अनुभूति रा फूठरा चितराम खैचण खातर उण सू मोकळै लचीलैपण री आशा राख्या करै ।

इणी तरयां सू दार्शनिक री भाषा-अपेक्षावा वैज्ञानिक री भाषा-अपेक्षावा सू जुदी हुवै तो व्यापारियां री अपेक्षावा शिक्षका री अपेक्षावा सू मोकळो आतरोपण राखै ।

किणी भी जीवत भाषा री सैंगाऊ वडी चुनौती समाज रै लोगा री अै सगळी भिन्न-भिन्न अपेक्षावा नै पूरी करण रै रूप मे रैया करै । हर क्षण बदळती सामाजिकता रै सागै-सागै आगै वैवती रैवण रै वास्ते भाषा नै रोजीनै भात-भात री कठिनाइया सू सामनो करणो पडै । अगर किणी भाषा री जडा गहरी हुवै अर बा आपरै पगा चालण रो माजनो राखती हुवै तो समस्यावा भलां ही जनमती रैवो, बा उणा सू पार पावण रो रस्तो हमेसा मोघतो रैवै । पण अगर भाषा रै माय हीज कमजोरया हुवै, जीवण रै सगळा क्षेत्रा री ताकीद नै पूरण रो जुगाड नी कर सकै तो बा मोकळो विस्तार को कर सकै नी ।

इण सगळी बाता नै ध्यान मे राख'र जद आपा राजस्थानी भाषा माथै निजर दोडावा तो अेकै कानी इण री जूनी साहित्य-परम्परावा, ऊजळी काव्य-रूढिया, वीरता अर तेज रो उजास, गद्य और पद्य री मोकळी रचनावा, जुदा-जुदा बोल्या री निजू खासियता चित्त नै आनन्द सू भर देवै । पण दूजै कानी राजस्थानी रै वास्तै सगळी आत्मीयता अर अपणापै, प्रेम व श्रद्धा रै बावजूद इण री मोकळी कमजोरया भी ध्यान मे आया बिना कोनी रैवै । राजस्थानी री अै न्यूनतावा हीज उण री घणकरी समस्यावा नै निपजावती रैवै । अठै उणा री विगतवार चरचा की जा रैयी है ।

**भाषा रै केन्द्रीय रूप रो अभाव**—आपरी सगळी खूबिया रै वावजूद राजस्थानी भाषा ओजू ताईं आपरै केन्द्रीय रूप रो निर्धारण कोनी कर सकी है । भाषा री अेकरूपता रै विना उणरो ना तो निर्दोष व्याकरण हीज बणायो जा सकै अर ना प्रादेशिक सकीर्णता री समस्या सू ही पार पायो जा सकै । ऊपर सू हालाकै राजस्थानी री इण बोल्या माय की खास आतरोपण कोनी है पण उच्चरित शब्दा रै उच्चारण रो भेद अर सहायक क्रियावा री प्रयोगशीलता इणा नै अेक-दूजै सू जुदा कर रैयी है । हाडोती रै माय शब्दा रो उच्चारण मेवाडी सू अलग अन्दाज मे करीज्या करै तो शेखावाटी रो ढूढाडी सू । अेक ही शब्द इण वास्ते जुदी-जुदी

गैल्यां रै माय आपरै निराळै ढग सू उच्चरित हुय रैयो है। इण खातर भाषा री अेकरूपता अ-निर्धारित ही है। इणी तरचा सू मारवाड़ी मे सहायक क्रिया 'है' रो प्रयोग हुवै तो दूजी जागां 'छै' रो। जूनै साहित्य मे भी आ भेद मौजूद हो। इण कारण राजस्थानी रो आपरो केन्द्रीय रूप ऊभर कोनी पाय रैयो है। मतभेद मोकळी समस्यावा निपजाय रैया है। इणा रै मौजूद रैवता राजस्थानी रो तेजी सू विकास सम्भव कोनी दीखै।

**व्याकरण री समस्यावां**— राजस्थानी व्याकरण री पहलड़ी समस्या भाषा री आधारभूत ध्वनिया सू ही निपज रैयी है। भाषा विचारा री अभिव्यक्ति रो माध्यम है, ओ अेक सर्वमान्य सिद्धात है पण विचार दरअसल वाक्या रै रूप में प्रकट हुया करै। इण वास्तै भाषा रो आधार ध्वनिया हुया करै। भाषा रो सर्वमान्य स्वीकृत स्वरूप इण भांत ध्वनि रै सूक्ष्म रूप माय हर ठौड विदयमान रैया करै। सामर्थ्यवान् भाषा व्यापक परिवेश अर भात-भात रै लोगां री आवश्यकतावा नै पूरी करण री, ध्वनि-समूह नै समेटण री ताकत स्वय मे राख्या करै। राजस्थानी रो परपरागत ध्वनि समूह आपरी निजी विधाण राखै। पण आज हर भाषा रा रूप दूजी भाषा सू तेजी सू प्रवेश करता शब्दा री आमद रै सागै तेजी सू वदळ रैया है। उणां री ध्वनिया री खूबिया आज हर भाषा नै स्वय मे जगावण री पुरजोर कोशिश करणी पड रैयी है, राजस्थान मे भी आज शब्दा रो मोकळो आयात हुय रैयो है। पण इण रो पौरुष पूर्णता कानी भुकियोड़ो ध्वनि आधार मोकळी ध्वनिया सजोय कोनी पाय रैयो है। डिंगळ रै वगत सू ही आ समस्या राजस्थानी मे मौजूद ही। शायद ओहीज कारण रैयो हुवै कै कवियां राजस्थानी री इण कमजोरी सू मजबूर हुय नै ब्रजभाषा कानी भुकगा, जिण सू पिंगळ भाषा रो विकास हुयो।

आज भी राजस्थानी म सस्कृत रो 'ऋ' स्वर अर उण सू वण्योड़ा शब्दा रो उच्चारण कोनी हुय सकै। कृष्ण, कृपा, गृहस्थ जेहड़ा शब्दां नै इणी मजबूरी रै कारण क्रिसन, क्रिपा, गिरस्थ रै रूप मे इस्तेमाल करणो पड़ै। अग्रेजी री मोकळी ध्वनिया जिकी कै 'आ' अर 'ओ' रै विचाळै री है, उणा नै ओकार रूप देवणो पड़ै। कोलेज होस्टल, जेहड़ा दोषा आळा उच्चारण सामै आवै। जूनी राजस्थानी मे 'ओ' अर 'अऊ' रै रूप माय वदळण री जिकी प्रवृति ही, जिण सू 'रासो' रो उच्चारण 'रासउ' ज्यू हुवतो। आ प्रवृत्ति हिन्दी-अग्रेजी सू आवणिया ओकरात शब्दा रै उच्चारण मांय मोकळी वाधा घातै है। इणी भांत 'न' वर्ण नै 'ण' रे रूप मे उच्चारण री प्रवृत्ति 'पाणी' 'धणिक', जिसा रूप दे देवै, जिण सू हिंदी रो 'कहानी' जिसै सरळतम शब्द रो उच्चारण करण माय राजस्थानी आळा नै खासी कसरत करणी पड़ै। राजस्थानी रो मूर्धन्य 'ल' अर्थात् 'ळ' वर्ण इण भाषा री आपरी खास ध्वनि है

पण आ आज हिंदी, सस्कृत रा लकार युक्त शब्दा रै सागै मोकळी भ्राति पैदा कर रैयी है।

सयुक्त अक्षरा रै वास्तै राजस्थानी म अणूतै सरळीकरण री प्रवृत्ति निजर आवै है। इण सू भी परस्पर विरोधी वाता दीसै है। अेक उदाहरण देवणो हीज मोकळो हुसी। राजस्थानी माय 'र' वर्ण री सयुक्तता हमेशा सरळीकृत हीज हुवै। कदै भी उणनै रेफ रै रूप रै माय प्रयोग कोनी कियो जा सकै। 'आर्डर' नै 'ओरडर' 'सिर्फ' नै 'सिरफ' 'कार्यालय' नै 'कारियालय' रूपातरण इण प्रवृत्ति री हीज सूचना देवै पण आ प्रवृत्ति हमेशा रै वास्तै अेक अनिवार्यता हुयगी है, जिकी भाषा नै घणी हानि पहुचा रैयी है। इण तरया री मोकळी कमजोरया राजस्थानी रै शब्द-भण्डार नै सीमित कर रैयी है।

ध्वनि रै पीछै शब्दा री स्थिति हुया करै है। राजस्थानी मे शब्दा नै लेयर भी मोकळी दिक्कता पेश आवै। नूवा शब्दा रै आमद री कोशिशा माय राजस्थानी भाषा ओजू ताई मध्य-युगीन सस्कारा री बेडया मू जकडीज्योडी है। मुसळमानी शासनकाळ मे शब्दा रै आमद री दिशा सस्कृत सू नी हुयर अरबी-फारसी सू ज्यादा हुवण लागगी ही। इण रो ओ दोष राजस्थानी माय पनपगो कै इण रो रुझाण आज भी अरबी-फारसी रै शब्दा नै सजोय राखण कानी है। सवाददाता री जागा अखबार नवीस, निवेदन रै स्थान पर अरज, प्रार्थना री जागा अरदास जेहड़ा शब्दा मे किणी भी तरै री आपत्ति कोनी। पण आज उत्तरी भारत री सगळी भाषावा (राजस्थानी री सहोदरा गुजराती समेत) अेक वार फेरू सस्कृत सू तत्सम रूपा री आमद कर रैयी है। खास तौर सू न्यायालय, विज्ञान, तक्नीकी क्षेत्रा माय पारिभाषिक शब्दा री सरचना सस्कृत रै तत्सम रूपा मू हुय रैयी है। पण राजस्थानी ओजू ताईं खबर नवीस जिसा शब्दा सू चिपक्योडी है। इण सू इण री खासी हानि हुय रैयी है।

दूजी भाषावा रा तत्सम रूपा नै स्वीकार करणो सोरो काम कोनी। हरेक भाषा इणा नै लेयर आछी-खासी दिक्कत म पड जावै। राजस्थानी रै वास्ते तो ओ काम और भी समस्यावा फैला रैयो है। इण री ध्वनिया री मोकळी कमजोरया अर इणा रै सातर व्याकरण री व्यवस्थावा रो घणकरो अभाव इण कठिनाइया नै वधावण रा कारण हुय रैयो है। राजस्थानी भाषा री प्रवृत्ति सस्कृत री अपेक्षा अपभ्र श रा अप्रमरी-भूत रूप सू ज्यादा हेत राखै। इण कारण सस्कृत रै तत्सम रूपा नै इण म सीधा ही स्वीकार करणा परम्परा रा प्रेमी लोगा नै पसद कोनी आवै। सस्कृत रै तद्भव रूपा नै अगीकार करणै मे इण री जित्ती भी चेष्टावा है, वै सगळी-री-सगळी अपभ्र श री प्रवृत्तिया मू परिचालित है। शब्दा रै द्वित्व री प्रवनि (जिया सत्त,

क्रम) अर विपर्यय री प्रवृत्ति जिका धर्म री जागा ध्रम, कर्म री जागा क्रम, गर्व री जागा ग्रब जिसा अर इणी भात रा सैकड़ू तद्भव शब्दा रा उदाहरण, जिका कै राजस्थानी भाषा री खासियता नैं पेश करै, सस्कृत रै तत्सम रूपा नैं वणती कोशिश अस्वीकरण री हीज सूचना देवै।

आज जद कै भारत री सगळी भाषावा वैज्ञानिक युग री नित नूवी सामै आवणवाळी आवश्यकतावा रै वास्तै या तो दूसरी भाषावा सू (खासकर अंग्रेजी सू) तत्सम शब्द लेय रैयी है, या पछै सस्कृत रै तत्सम समानार्थी शब्दा सू पारिभाषिक शब्दा रो निर्माण कर रैयी है। राजस्थानी रै वास्तै आहीज बात मोकळी दिक्कत पेश कर रैयी है। ओ ही कारण है कै आपा री भाषा रो घरेलू व्यवहार खातर करणै मे कोई सकोच कोनी करण वाळो अेक निश्चित राजस्थानी मिनख इणनै प्रदेश री राजस्थानी भाषा रै रूप मे समर्थन देवण मे सकोच कर रैयो है। अठै हिंदी भाषा री मिसाल सामै राख'र आपा राजस्थानी री इण कमजोरी नैं अर उण सू निपज वाळी समस्यावा नैं समझ सकसा। हिंदी रो हेताळू व्यौहार अपभ्र श सूं तद्भव शब्दा री अपेक्षा सस्कृत रै तत्सम रूपा सू तुलनात्मक दृष्टि सू ज्यादा है। इण कारण इण नैं नूवा पारिभाषिक शब्दा नैं घडण माय सस्कृत सू सहायता लेवण खातर किणी भी भात री दिक्कत को हुवै नी। आज सू बीस-पच्चीस बरसा पहली हिंदी माथै ओ वडो भारी आरोप हो कै आ भाषा तकनीकी, विज्ञान आदि रा नूवा क्षेत्रा री पारिभाषिक शब्दावळी को राखै नी। पण आज घणी दूर ताईं इण कमी नैं हिंदी भाषा–भाषी दूर कर दी है। इण प्रक्रिया मे उणा घणी दूर ताईं सस्कृत रो उपयोग करयो है। इण मे कोई सदेह कोनी राजस्थानी नैं अगर लारलै समय ज्यू हीज आपरै सामर्थ्य नै वडावणा है तो उण नैं परम्परागत साच रो मोह छोडणो पडसी। उण नैं नूवै जगत री भाषा बणन खातर क्रातिकारी परिवर्तन करण वास्तै तैयार हुवणो पडसी अर दूजी भाषावा रै तत्सम रूपा नैं है ज्यू हीज अगीकार करणो पडसी। पण अपभ्र श रै दैण रै रूप मे आ आज भी शब्दा रा अपभ्रष्ट स्वरूप नैं स्वीकार करणै री हीज आदत नी छोडसी तो इण री निजू पिछाण तो भलै ही बरकरार रैय जासी पण आ विकासमान भाषा को वण सकै नी। अगर ओ कोनी हुय सकै तो पछै तद्भवीकरण री इण प्रवृत्ति नैं सव ठौड़ इस्तेमाल करणै री जवर्दस्त मुहिम छेडणी पडसी जिण सू जिया लोक जीवण मे जनता टैम (टाइम), कारट (पोस्टकार्ड) लिछमी (लक्ष्मी), मैठाई (मिठाई), सनेस (सदेश), जोगी (योगी), मसाण (श्मसान) रै रूपा मे लोकाचार या रोजीनै काम आवण आळी शब्दावळी रो देसी रूप निर्मित करयो है, उणी तरह सू इण प्रवृत्ति मे व्यापक रूप मे विस्तार देयर हर क्षेत्र री पारिभाषिक शब्दावळी नैं आत्मसात् करणो पडसी। ओ काम अेक तो सोरा

कोनी, दूजो इण माय अेक सासँ लम्बँ समय री भी जरूरत पड़सी। दुनिया आज जिसी तेजी सू आगँ वढ रैयी है उणनँ देखता अगर राजस्थानी भाषा तद्भवीकरण री *कछुवा चाल सू हीज आगँ बढती रैयी तो न केवल आ भाषा बल्कै इण रा प्रयोक्ता* भी रात-दिन पिछड़ता जासी, इण मे की सदेह कोनी।

ऊपर राजस्थानी रैं अपभ्र श सू मेळ री प्रवृत्ति री जिकी बात वताई गई है, उण नँ राजस्थानी री भाषा-समस्यावा रैं सदर्भ मे थोड़ै विस्तार सू समझण री जरूरत है, क्योकँ इण प्रवृत्ति माय सू ही इण भाषा री दूजी और समस्यावा भी सामँ आई है। राजस्थानी भाषा रैं विकास नँ मोटे तौर सू इण भांत तीन चरणा मे देख्यो जा सकै है —

(१) जूनी राजस्थानी— 11 वी शताब्दि सू 16 वी शताब्दि ताईं
(२) मध्यकालीन राजस्थानी— 17 वी शताब्दि सू 19 वी शताब्दि ताईं
(३) आधुनिक राजस्थानी— 20 वी शताब्दि सू अबार ताईं

आधुनिक राजस्थानी रैं वास्ते उण रा जूना अर मध्यकालीन अे दोनू रूप जुदी-जुदी समस्यावा उत्पन्न कर रैया है। इण खातर इणा रो अठै अलग-अलग विवेचन करणो समीचीन रहसी।

**जूनी राजस्थानी सू निपजयोड़ी समस्यावां**—उत्तरी भारत री दूजी भाषावा ज्यू ही राजस्थानी रो विकास इग्यारहवी–बारहवी शताब्दि ताईं अपभ्र श सू हुयो। विद्वाना मे अपभ्र श रा प्रादेशिक भेद लेय नँ भलैं ही मोकळा मतभेद हुवो पण इण वात मे सगळा जणा अेकमत है कँ स्वय अपभ्र श भाषा रैं विकास क्रम रैं माय उण रैं पहलड़ी अपभ्र श अर पाछली अपभ्र श रैं रूप मे दो चरण सामँ आया। ज्यादातर भाषावा (जिण मे हिन्दी खास तौर सू सामळ है) अपभ्र श रैं पाछलँ रूप नँ आपरो आधार वणायो। अपभ्र श रैं इण रूप नँ समुन्नत (अेडवास्ड) या अग्रगामी अपभ्र श रो माव दिरीज्यो हो जद कै उण रैं पहलड़ैं रूप नै परिनिष्ठित अपभ्र श रैं रूप म पिछाण्यो गयो। हालाकँ इण दोना नँ अपभ्र श ही कँवता पण दोनू रूपा मे मोकळो अन्तर हो, इण मे को सदेह कोनी। अठै इण भेदा री विगत मे जावण री जागा इण पक्तिया रो लेखक इण बात कानी सुधी पाठका रो ध्यान आकर्षित करणो चावँ है कँ राजस्थानी भाषा रा प्रारम्भिक प्रयोक्ता इण परिनिष्ठित अपभ्र श सू जुड़ियोड़ा हा। यू तो हर भाषा रा दो रूप हमेशा मोजूद रैवँ है। इणा नँ परिष्कृत भाषा व देसी भाषा इण दो रूपा सू पिछाण्या जावँ है। भाषा रो परिष्कृत रूप व्याकरण-सम्मत हुवँ जद कै देसी रूप उण रैं विकसित रूप री बानगी दिया करैं है। अपभ्र श रो परिनिष्ठित रूप भी इण सिद्धात रैं मुजब उण रैं देसी रूप सू दूर अपेक्षाकृत व्याकरण री बदिशा मू ज्यादा बधियोड़ो हो।

राजस्थानी रो प्रारंभिक विकास इणी परिनिष्ठित अपभ्रंश सूं हुयो। इण खातर इण माय सुरू सूं हीज साहित्यिक सभावनावां तो मोकळी पनपगी पण उण रो देसी आधार चौदहवीं-पद्रहवीं शताब्दि ताईं गायब–सो रैयो। इण रो परिणाम ओ निकळयो कै राजस्थानी रो प्रारंभिक रूप प्रयोगां रै मोह रै कारण अर भाषा रै परिनिष्ठित स्वरूप री बहुतामत सूं धीरै-धीरै सकुचित हुवण लागगो। सोळहवीं शताब्दि ताईं इण नै डिंगळ नाव सूं पुकारयो जावतो। साहित्यिकता री बहुतायत अर देसी आधार री समाप्ति रै कारण आ भाषा कृत्रिम बणगी। इण कारण जूनी राजस्थानी रै साहित्य मे प्रयोगां रो लूठोपण तो निजर आवै पण जीवण री ताजगी सफा गायब दीखै है।

डिंगळ भाषा री आ कृत्रिमता आपरी निजू असरदार विशेषतावां राखता थका भी भाषा नै जड करदी, इण मे की सदेह कोनी। आज री राजस्थानी रै बास्तै अेक मोटी समस्या आ है कै डिंगळ रै सस्कारां नै निभावणो आज मुस्किल अर अनावश्यक हुवता थका भी उणा सूं वा (राजस्थानी भाषा) मुक्त कोनी हुय पा रैयी है। इण रो अेक कारण ओ है कै राजस्थानी रो ओ रूप भलै ही कृत्रिम हो, ओ हीज इण भाषा रै व्याकरण रो आधार है। राजस्थानी रो सगळो व्याकरण इण भाषा रूप नै मानक मान'र ही निर्मित हुयो है। भला हीं टैसिटोरी हुवो कै भला ही रामकरण आसोपा। अै लोगां राजस्थानी रै व्याकरण रै नाव माथै प्राप्त (साहित्य री सीमावां रै कारण) दर असल सिर्फ डिंगळ भाषा रो हीज व्याकरण लिख्यो है। अबै जद कै भाषा रो रूप नित नूवो हुय रैयो है, जूना शब्दां रा रूप घिस रैया है, वाक्यां री बणगट नूवो अदाज धारण कर रैयो है अर तेजी सूं भाषा मांय नूवी प्रवृत्तियां पनप रैयी है, उण बगत ओ व्याकरण इण रै विकास मे मोकळी अडचण पैदा कर रैयो है। इण वास्तै आज री राजस्थानी भाषा री इण समस्या सूं छुटकारो पावण सारू डिंगळ रै मोह नै अर उण रै व्याकरण री बदिशां नै छोडणो ही पडसी। इण रै विना इण भाषा रो तेज गति सूं विकास सभव कोनी।

मध्यकालीन राजस्थानी सूं उपजयोडी समस्यावां—डिंगळ जद सकुचित अर कृत्रिम भाषा रो रूप धारण करण लागगी तो आम जनता मे तेजी सूं उण सूं अलग राजस्थानी रो देसी रूप विकसित हुयो। भाषा रै इण रूप रो विकास लोक चेतना सूं सातरै भाव सूं जुडियोडो हो। ओहीज कारण है कै इण मे लोक-साहित्य रो मोकळो सर्जण हुयो। मीरा अर राजस्थानी जन-भावना नै ऊडी गहराई ताईं जुडयोडा राजस्थान रै सत लोगां रो साहित्य मध्यकाल री भाषा रै लोक आधार रै प्रमाण प्रस्तुत करै है। इण भाषा माय सरळीकरण री प्रवृत्ति खास ध्यान खींचण आळी विशेषता है। इण भाषा म ही सस्कृत रै शब्दां रा तद्भव रूप विकसित हुय

हा। इण प्रवृत्ति सू हालांकै मातळो लाभ हुयो पण अेक मोटा नुकसाण ओ हुयो कै इण भाषा री दिशा ग्रामीण भाषा रो रूप धारण करणै री ओर प्रवृत्त हुयगी। ठेठ ग्रामीण भाषा रै रूप मे आ फैलती रैयी। इण सू आ जाणै भाषा रै क्षेत्र नै छोड'र बोली रै क्षेत्र मे प्रविष्ट हुयगी। भाषा रो ओ रूप आपरै निजू मुहावरा रै कारण, सरळता अर मिठास रै कारण राजस्थानी भाषा रो अेक प्रभावशाली आकार निर्मित कियो। पण इण री दिशा बोली रै कायनी हुवण सू भाषा रो रूप धीरै-धीरै खतम सा हुयगो। चारण कविया ज्यू डिगळ नै अेक बणावटी अर मुश्किल भाषा बणायदी उणी भांत लोक चेतना राजस्थानी रै देसी रूप नै ग्रामीण बोली रा रूप दिराय दियो। भाषा विज्ञान रो ओ सिद्धात है कै विकासशील भाषा री दिशा बोली सू भाषा कानी प्रवृत्त हुवै पण मध्ययुगीन राजस्थानी रै लोक साहित्य री प्रधानता अर उण रो ग्रामीण आधार आ गवाही देवै कै आ भाषा दर असल बोली कानी ज्यादा विकसित हुयी। सामान्य हिंदीजन या दूसरा भाषा-भाषी राजस्थानी नै भाषा नी मान'र बोली मानै उणारी चितना रो ओहीज आधार है। इण वास्तै आपा जद राजस्थानी नै भाषा रै रूप म सविधान म मान्यता प्राप्त भाषावा री सूची म सामल करावणी चावा उण वगत दूजा लोग इण रो समर्थन इणवास्तै कोनी करै कै उणा रै मन म आ बात घर करगी है कै राजस्थानी दर असल बोली ही है भाषा कानी। इण भात मध्ययुगीन राजस्थानी रो भाषा रूप इण रै खातर आपरै ढग सू समस्यावा पैदा कर रैयो है। लोगा रै इण भ्रम नै तोडण सारू अर राजस्थानी नै भाषा रो समानप्रद रूप दिरावण वास्तै आ जरूरी है कै आपा इण री गति री दिशा नै अब बदळ दवा। शहरीकरण री प्रवृत्ति जद आज समग्र देश रै समाजशास्त्र रो आधार बण रैयी है उण वेळा राजस्थानी भाषा री ग्रामीण दिशा नै ताडधा बिना उण रा विकास असभव सो है। आ बात सुधी पाठका ज्यूही इण पत्तिया रै लेखक नै भी चाखी कानी लाग रैयी है। पण ज्यू आज सगळी राजनीति, विज्ञान, उद्योग ही नी दश री सगळी समाजिक, आर्थिक अठै ताणी कै सास्कृतिक दशावा रा नियमन, उणा रा नतृत्व अर उणारी सगळी चिताधारावा तक जद कै शहरी मानसिकता सू नियन्त्रित हुय रैयी है उण वखत राजस्थानी री ग्रामीणान्मुखता नै सजोय राख र आपा विकास कोनी कर सक्सा इण बात म रचमात्र भी सदेह कोनी।

**आधुनिक राजस्थानी री समस्यावा**—राजस्थानी रा आधुनिक रूप सगळी कठिनाइया समस्यावा रै बावजूद तजी सू उभर रैयो है। आ बात आपा नै आश्वस्त कर र हौसलो अफजाई भी करै। पण आज री राजस्थानी भाषा री भी अेक जबदस्त चुनौती रै रूप म सामै खडी समस्या है। राजस्थानी नै आज स्वय री पिछाण कायम करण री चुनौती सू जूझणो है। आ समस्या हिंदी सू अलग आपरी निजू पिछाण

कायम करणं री है। गुजराती अर राजस्थानी दोनू भाषावा सोळहवीं सतीं ताईं अेक ही ही। पण उणरं पछै गुजराती तो आपरो स्वतन्त्र भाषा रूप विकसित कर लियो पण राजस्थानी (जिया पहली स्पष्ट कियो गयो है) या तो डिंगळ रै बनावटी रूप नै आगै बढायो या देसी रूप नै, जिको धीरै धीरै बोली रो रूप धारण कर लियो। आज गुजराती नै हिन्दी री बोली मान कँवण री हिम्मत कोई कोनी कर सकै पण राजस्थानी न केवल भाषा ही को मानीजै नी बल्कै इण नै म्हारू फेर हिंदी री अेक बोली रै रूप म ही समझी जावै है। राजस्थानी री आ समस्या सँगाऊ टेढी सब सू भीषण अर इण रै अस्तित्व माथै हीज सवाळ खडो करण आळी घोरतर समस्या है।

**समस्यावां रो निराकरण**—अै सगळी समस्या सू पार पावण सारू राजस्थानी री दिसा तो बदळणी पडसी ही (जिण सू कै आ आज री सामाजिकता अर युगधारा सू जुड सकसी), इण रै विस्तार रा घणा-सारा उपाय भी करणा पडसी। भाषा रो विकास अेक-दो बर्सां मे कोनी हुया करै, ना अेक दो विद्वाना-पडिता री चेष्टावा सू ही उण मे गति उत्पन्न हुवै। अै बाता जित्ती साची है उत्ती ही आ बात भी साची है कै किणी भी भाषा री समस्यावा अेहडी कोनी हुवै कै अणसुळभायाडी ही रैय जावै या समस्यावा रै कारण भाषा रो विकास हीज रुक जावै।

भाषा तो बैवते पाणी री धारा है। अगर उण मे गति है तो किती बाधावा सामनै क्यू नही आजावै बा तो आपरो रास्तो पाय ही रैवेली। समस्यावा उण रै मार्ग मे रोडा भलै ही नाख दै, उणनै रोकण मे जड बण'र पूरी तरधा-सू समर्थ कोनी हुय सकै।

राजस्थानी भाषा री गति पूरै अेक हजार बरसा सू कायम है। इणरी यात्रा मे दूजी भाषावां रै ज्यू हीज मोकळा उतार-चढाव आया है। आज उण री गति नै तेजी देवण री जरूरत है। चेष्टा करचा सू राजस्थानी रो वांछित विकास भी समव है, आ अेक निर्द्वन्द्व बात है। राजस्थानी री इण दसा सारू अपेक्षित चेष्टावा मे सँगाऊ जरूरी इण रै शब्द भडार रो विस्तार है। हर भाषा री ताकत अर गतिशीलता रो आधार उण रो शब्द भडार हुया करै। भाषा री समृद्धि री पिछाण शब्दा रै तादाद सू हीज सभ हुवै है। राजस्थानी रै शब्द भडार वीरता, तेज, रोस, भक्ति जेहडा भावां री अभिव्यक्ति सारू जिया सामर्थ्य अर्जित करी ही आज बौद्धिक-वैचारिक क्षेत्र री सर्वांगीण अभिव्यक्ति सारू भी उणी भात इण नै आत्मसात् कर'र आपरो सामर्थ्य बढावणो पडसी। जीवण रै हर क्षेत्र री, भाव रै हर तरह री कोर री, सौंदर्य री हर तरह री दिसा री, बुद्धि री हर तरह री रगत री अभिव्यक्ति करणं आळी शब्दावळी नै राजस्थानी म पनपावण री जरूरत है।

शब्द भडार री दूसरी दिशा पारिभाषिक शब्दा रै विकास री भी है। आज जिती तेजी सू समाज गतिशील है उतै ही वेग सू हर भाषा सू पारिभाषिक शब्दा रै निर्माण री अपेक्षावा भी वढ रैयी है। राजस्थानी इण रूप मे मोकळी पिछडती जा रैयी है। इण कमी नै दूर करण सारू व्यापक अर गभीरतम प्रयासा री जरूरत है। लेखक री समझ मे अकादमी नै अेक वृहत् प्रायोजना (प्रोजेक्ट) वणाय'र विज्ञान, दर्शन, साहित्य, तकनीकी आदि जिसै हरक्षेत्र री परिभाषिक शब्दावलिया रो निर्माण करणो चाहिजै। इणरै बिना राजस्थानी रो विकास सभव कोनी लागै।

**शब्दकोश रो निर्माण**—आ भी भाषा री एक जबर्दस्त चुणौती है। राजस्थानी मे ओजू ताई वण्योडा शब्दकोश अधूरा, अेकागी अर अपर्याप्त है। इणा री अेक बडी कमजोरी आ है कै उणा माय कोरी साहित्यिक सदर्भता मौजूद है। जीवण सदर्भ रा सगळा आयामा सूं जुडियोडी शब्दावळी अर उणारी अर्थ-निष्पत्तिया रो निर्धारण किया बगैर भाषा रो विकास असभव है। इण वास्तै अठीनै भी ध्यान दियो जावणो बहुत जरूरी है।

राजस्थानी अेक व्यापक क्षेत्र री भाषा है। आज राजस्थान माय ही नही उण क्षेत्रा माय भी इण रो व्यापक प्रसार है जठै प्रवासी राजस्थानी लोग व्यौपार कर रैया है। अै प्रवासी लोग इण भाषा नै बगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु रै अतिरिक्त विदेशा माय ताणी फैलाय दी है। पण इण रो व्यवहार घरेलू भाषा रै रूप मे हीज हुय रैयो है। *मध्ययुग मे राजस्थान रा व्यौपारी लोग इण रो व्यावसायिक* इस्तेमाल कियो हो अर महाजनी रै रूप मे इण नै अेक व्यापक क्षेत्र रै व्यवहार री भाषा वणाय दी ही। कोई भाषा जद ताई घरेलू भाषा रैवै उण रो विकास को हुय सकैनी। इण वास्तै राजस्थानी री महत्ता नै अेक वार ओरू स्थापित करण सारू इण नै व्यावसायिक-औद्योगिक क्षेत्र री भाषा रै रूप म विस्तार देवणो जरूरी है। इण खातर राजस्थानी मे *पारिभाषिक शब्दावळी रो विकास भी करणो पडसी।* इण शब्दावळी रै सिरजण रै विना राजस्थानी री उन्नति या प्रगति री वात मात्र भावुकता सू करयोडी कल्पना भर हुयर रैय जासी।

भाषा रै तेजी सू विकास खातर अखबारा-पत्रिकावा री मोकळी आवश्यकता है। इण क्षेत्र मे राजस्थानी मे इण कमी नै दूर किया बिना उणरी समस्यावा नै पार कोनी पायो जा सकै पण दुख री वात आ है कै आपा राजस्थानी मे अेक भी दैनिक अखबार तो निकाळ सका कोनी अर सरकार सू आ अपेक्षा करा कै बा राजस्थानी नै सरकारी कामकाज री भाषा वणाय देवै। (कोई सैंतीस वरस पहली श्री रगाभाई जयपुर सू जागती जोत नाव रो राजस्थानी मे अेक दैनिक पत्र निकाळ्यो हो। वो अनियमित हो अर थोडै असैं पछै बद हुयगो) इणी भात आपाणी राजस्थानी

भाषा जठै ताई सगळै ज्ञान-विज्ञान रै विषया री भाषा रै रूप मे इस्तेमाल नी हुवै, उणरी समस्यावा का मिट सकसी नी। ओजू ताई आ सिर्फ साहित्य री भाषा है। सौ-पचास साहित्यकार इण रो प्रयोग पुस्तक लेखन मे कर रंया है, पण जद ताई इण नै सगळै वाङ्मय री भाषा रै रूप मे इस्तेमाल नही कियो जासी आ पिछडथोडी भाषा हीज वणी रहसी।

इण भात ससार री दूजी भाषावा ज्यू हीज राजस्थानी री भी आपरी मोकळी समस्यावा है। समस्यावा हुवणी भूडी वात कोनी, आ तो खुशी री वात हुवणी चाहीजै। इण खातर निराश हुवण रो कोई कारण कोनी। जठै ताई भाषा रै सामनै समस्यावा खडी रैसी, बा जीवत अर चुणौतिया सू जूझण आळी भाषा वणी रहसी। विना समस्यावा रै भाषा मृत भाषा वण जावै। राजस्थानी री मोकळी समस्यावा इण रै जीवण रै धडकण री सूचना देय रंयी है। इण वास्तै इणा सू भय खावण री या निराश हुय जावण री किंचित् भी जरूरत कोनी है। आज री प्रत्यक्ष जरूरत आ है कै आपा राजस्थानी रै तेजी सू विकास सारू सचेप्ट हुवां क्यू कै ओ कोरी भावुकता रो प्रश्न नीं है। ओ आपा री सगळी आस्थावा रो, विश्वासा रो अर आपा री सगळी वैचारिक सामर्थ्य अर बौद्धिक जागरूकता रो प्रश्न है। इण ओळया रै लेखक रै आशा ही नी, अटूट विश्वास है कै आपा इण परीक्षा म खरा उतराला।



(राजस्थानी गंगा मे प्रकाशित)

# राजस्थानी साहित्य री नूवी कविता

साहित्य हरमेस परम्परा ने जीया करे पण आपरे निराल अन्दाज म। एक परम्परा सू द्रोह दूजी परम्परा सू सूत्रपात रो कारण हुया करे। जूनी परम्परा रो विरोध नूवी काव्य प्रेरणा रो हेतु बण ने उण रो प्रवर्तन करिया करे। हर टेम री नूवी काव्य चेतना बदळियोडी जीवण दसावा माय जूनोडी भीत री निजरा रे टूटता खण्डहरा माथै मायो ऊचो कर ने गरब सू ऊभो होवण री चेष्टा किया करे। बदलाव री ऐडी वाता हर युग म सामी आवती रैवे अर नूई नूई अनुभूतिया ने नूअे नूअे ढग सू परकट करण री आपरी निजू शेलिया रो सिरजण करती रेह्या करे। आगे जायन ऐ परम्परावा भी प्रयोग री मोकळी पुनरावृतिया रे कारण फीकी पडती जावै। जिण सू द्रोह रो भाव आपो आप नूवा चितेरा म दीसण लाग जावै। परम्परा रो आ अनूठो ढग साहित्य री नित नूवी सिरजण चेष्टावा आगीने धकलती रैवे।

नूवी कविता री सज्ञा सू हिन्दी म जिकी चतना उभरी ही उण रा आधार कोरो मोरो परम्परा सू विद्रोह रो भाव हीज कोनी हो। उण रो आधार बदलियाडा युग री एक अणददीसती माग ही। दूजोडा महायुद्ध र पाछे दुनिया भर म जिको विचार मथन हूया वो जूना मूल्या अर आदर्शां न अचाणचक म हीज झूठा अर निकम्मा बणाय र परे नाख दिया। इण भावना न देस री आजादी अर उण र पाछ री सगळी जीवन दसावा घणखरी पुष्टता दिरायी। ऐडी टेम रचनाकार रा हिवडा *मोहमग रा अनुभावा सू भरीज न नूवे युग री माग न रचना रा विषय बणावण* खातर आगीने आयो। आ लोगा री चेष्टावा प्रयोग न हीज आपरो इष्ट मानियो अर नूवी पगडडिया माथै आपरा पगलिया धरता थका साहित्य सिरजण किया। इण काव्य आन्दोलण न नयी कविता रो नाव दियो गयो। छठो दशक हिन्दी म ता नई कविता रो दशक बण र सामी आया जदे के उणी युग म उणी जीवण दसावा मे जीवण आळा राजस्थानी रा रचनाकार उण बोध न कोनी पकड सक्या। पण परम्परावा सू द्रोह रा भाव इणा माय भी वूरियोडा छाणा जिया माय ही माय सुलगतो हा इण म भी किणी भात रो सन्देह कोनी है।

**नूवी काव्य चेतना एक आवश्यकता**— राजस्थानी रचनाकार र वास्त नूवी चेतना ने सामी लावण री चेष्टा आज रा बाध न धारण करण री कारी एक चुनौती हीज कोनी ही एक तरासू उणा री मजबूरी भी है। डिंगल री वेळा सू ही

राजस्थानी साहित्य री चेतना माथे आंचलिकता अर लोक संस्कृति री छाप मोकळी गहराई सू छापीजियोड़ी ही। अठे री ऊजळी अर ओपती लोक संस्कृति अठे रे लोगा रे सोच ने सागीडे भाव सू जकडियोडी ही। इण अवल री आपरी निजू पिछाण जिण रूप मे कायम हुयगी ही उण सू नीसरणो सोरो काम कोनी हो। सिरजण री वेळा उण री चेतना माथे मस्कृति रा सगळा फैलाव हावी रेंवता। उण सू आतरे जावती वेळा उण ने ओ खतरो हरमेस रेंवतो के आंचलिकता रो पल्लो छोडती वेळा कठैं ही उणा री खुद री निजू पिछाण ही खतरा मे भी पड जावे। आजादी रे पूठे इणी कारण अठे रो रचनाकार और गहराई सू जूनी परम्परावा सू जुडग्यो। गोरडी रा गीता रा बै धोरा री महिमा रो सगीत हीज गुणगुणावण लागग्यो। उण री आख्या रे सामी वेंवती समान्तर जिनगाणी जाणे उण रे वास्ते की भी महत्व कोनो राखती। अर बा आंख्या मीच'र जूनी बाना मे हीज आपरी शक्ति खरच करतो रेह्यो। आ बात नूआ सिरजण रे वास्ते मोकळी चुनौती ही जिण सू जूझण मे वे की भी भात रो सकोच कोनी कियो।

**नूवा हस्ताक्षर**—राजस्थानी साहित्य मे नूवी कविता री चेतना रो विकास दोवडी अवेक्षावा ने पूरणे री कोसिस ही। एके कानी तो युग री माग ही जिण ने हिन्दी आळा कवि पूर रह्या हा अर जिणा रो सीधो असर आ कविया माथैं पडनो जरूरी हो। दूजी कानी अठे रा कवि री खुद री माय री माय कसमसीजती चेतना ही जिकी के परम्परा सू मुक्त हुवण खातर आपरी पूरी ताकत सू कोसिस कर रैया हा। फेर भी राजस्थानी में नूवी कविता री सरुवात सातवा दसक ताईं कोनी हुई सकी। हालावे उण कानी कदम वढावण रा सागीडा सकेत मिलण लागग्या हा। इण अणन्यूतोडी दौडती आवती काव्य चेतना सू परहेज करणो अब सोरो काम कोनी हो। नानूराम सस्कर्ता, नारायणसिंघ भाटी, रेवतदान चारण, गजानन वर्मा, सत्यप्रकास जोसी सारीसा कवि नूवी जमी री पिछाण रा आसार खडा करण लागग्या। इणा मे नूवैं जमाने री जीवती सम्वेदनावा ने माडाणी नकारण री प्रवृत्ति फीकी पडगी। नूआ भाव बोध रे वास्ते ऐ लोगा राजस्थानी साहित्य रा दरवाजा खोल दीया। डा मनोहर शर्मा रा अे बोल करवटीजती परिपाट्या रो प्रमाण है—'कवि कल्पना रो हस/मन भावतो है ता यथार्थ री कोचरी भी कम रूपाली कोनी/हस रे गीता रे साथे/अबै कोचरी रा भी गीत गावो।'

**नूवी कविता री ओळखाण**—इण नूवी कविता री साची ओळखाण सन इकोत्तर मे प्रकासित काव्य सकलण 'राजस्थानी-एक' सू हुय सकी। जूनी चाल आळी कविता ने इण सकलण री मोटी रूपरेखा हिन्दी मे अज्ञेय सू सम्पादित 'तार-सप्तक' सू प्रेरणा लेय ने सिरजित हुई। नूवी चेतना रा पाँच कविया ने सामी लावण

वाळो ओ सकलन पण तार सप्तक री कोरी मोरी भद्दी नकल हीज कोनी है। फैसण री चाल ने अपणावता थका भी इण सकलण री कवितावा रे माय राजस्थानी री आपरी मिठास, रचनावा रो निरालो अन्दाज अर कथ्य री आपरी ओळखाण मौजूद है। सकलण रा पाँचऊ कवि गोरधन सिंह सेखावत, पारस अरोडा, ओंकार पारीक, मणि मधुकर अर तेजसिंघ जोधा एकण कानी नूवी चाल ने लीक देवण री सचेत विचारधारा राखे है तो दूजी कनी आपरा निजूपणा ने भी दरसावण म पाछै कोनी रैवे है। इण सकलण सूं राजस्थानी री नूवी कविता री पिछाण कायम हुई। जिण माथै आजरा मोकळा कवि आपरा कदम बढाय रह्या है। इण माय चन्द्रप्रकास देवल, सावर दइया, नन्द भारद्वाज, विश्वनाथ शर्मा विमलेस, रामेश्वर दयाल श्रीमाली, लक्ष्मीशकर दाधीच, हरमन चौहान, पुरुषोत्तम छगाणी, सत्येन जोशी, प्रेम जी प्रेम राजेन्द्र बोहरा जेडा एकदम नूवा कविया रे सागे सागे मोहम्मद सदीक, मोहन अलोक, शिवराज छगाणी, अन्नाराम सुदामा, रघुराजसिंह हाडा जिसा कवि सामळ है।

**माटी रो अणभावतो कोड**—राजस्थानी री नूवी कविता हिन्दी री ऐडी कविता सू घणखरी दिसा लेवता थका भी उण री पिछलग्गू कोनी है। नूएपणा रा सस्कारां ने ऐ लोग हिन्दी रे सागे सागे सीधा विदेसी साहित्य सू भी अपणावण री कोसिस की है। इणा रे माय माटी रो कोड सातरे भाव सू सम्वेदनावा सू गुथी-जियोडो दीसे। ऐ कवि नूवे भाव बोध रे मिनख रे रूप मे निजूपणा ने खोजता थका भी आपरे ओळू दोळू री हवा री ताजी महक ने छोडणो कोनी चावे। भीडतन्त्र रो एक अग होवण रो अहसास इणा माय अनुभवा सू पागीजियोडो निराश भाव भरे है। पण इण रे सागे गाँव री आपरी पिछाण राखण री दर्दीली अनुभूतिया भी इणा री चेतना मे जमियोडी है—'ओ गाव म्हारो है/राजनीति सू मूत्योडो।' इणी तरा सू जूनी परम्परावा री निरर्थकता रो अहसास भी जीवते रूप मे उभर्‌यो है—'आ मायला/हेलो पाडा चूच भिडावा/तमासो करा/आ मितर/घतूरो घोटा/मसाण जगावा/सार्थ मरा।' (मणि मधुकर)

**परम्परा सू द्रोह अर पीढ्यां रो आतरोधण**—आजादी री अणओपती बाता इण कविया ने विद्रोही बणावे। सामाजिक जीवण दसावा मांय वर्ग भावनावा, मिनख विरोधी आचरण रो विरोध इणा री कवितावा माय उग्र भाव सू सामी आई है। ऐ कविया रो सगळो विरोध, कविता रो जुभारूपण अर भासा री गुस्सेल तबियत, आर्थिक असमानतावा ने खासतौर सूं चवडे लावण रो एक मोटो उपक्रम है। मोहमग री आ पीडा दर्द रा दस्तावेज बण'र इणा री कविता ने भिभोडती निजर आवे है—

लोग केवें सूरज ऊगो, पण कठे गयो परकास
हाथ हाथ नैं सावण दीहे विण री राखो आस
मुलक री आ कैडी आजादी
पूत पित्तर में मच्ची छिनाली
चारू दिस बरवादी। – (गणेसीलाल लाल व्यास 'उस्ताद')

आज री अराजक जीवण दसावो जिण अमूजे रो सिरजण करे उणा मे जिनगी री आस्था पूरी तरै सू भम्फोजगी है। ऊगते सूरज रो उजास अधारा रो जिको फैलाव लीयोडा है उण मे लोग धोखे मे पड़ियोडा मरमीज रैया है। जिनगाणी आजीवन कारावास री यातना भोगती, कैद हुयोडी साफ साफ निजर आवे है—'काच रै पेपरवेट मे बन्दी किणी रग पुसप री भात/अेक पार दरसी कैद मे/बाट उडीकती जिदगाणी।' (पारस अरोड़ा)। मोहभग अर व्यवस्था री अराजकता अणदबियोडा भाव सू इण कवि री चेतना रो अग बणियोडी है जिण री हिलोरा ऐणी कविता री ओळी ओळी माय निसरती रैवे है।

अमूजे रो उफळतो लावो—दिखावा रा सगळा सिरकारी मूडा समारोहा रे लारे मेह सू पैला री काळी पीळी आंधी तेजी सू बेवती आय रहयी है। ऐ कवि लोगा ज्यू आख्या मींच'र माडाणी नकारण री भूल कोनी करे। अराजक जीवण दसावा रा हेतु रूप राजनीति अर उण री सगळी सूगली-भूण्डी बाता ने मैंहदी रा माडिया ज्यूं बारीकी सू कविता में उतारया है—

'प्यारे भैणो और भाइयो/आज आपनै मैं बताण ने आयो हू मैं/मैं चुनाव मे खड्यो हुयो हू/ जीयां पैल्या वीरबली श्री हनुमानजी/लका मे जाकैं असोक वाटिका उजाड़ी वैया ही मैं टेबल कुरसी उठा उठा के पटक पटक मारूगा विरोधिया रे सिर मं/आछ्या तीस मारखा भी बारे भागता फिरेगा' (विश्वनाथ शर्मा विमलेश)। अमूभतो मिनख चेतना री उकेर इण कवितावां माय ऊडी घणी है। सत्ता रो अलक उण ने घणी देर तई अबे दबाय नी राख सकै नी इण मे इणा री पूरी आस्था है—'आगणे रो अमूजो/घरती पर/भम्पाड़ बण'र फूटसी बार लौ मौसम/मायलै अमूजे री/रोकथाम/करण वद आडो आयो/वद आडो आसी।' (मोहम्मद सदीक)

नुवी जमीं रा ओळखोजता आखर—राजस्थानी री नुवी कविता री पिछाण करावण आळा ओळखोजता आखरा री भाषा अबे भणियोडा रो सन्तोप कोनी रैयो है। इण कविता री यात्रा गिरती पडती उणी दिसा माय आगीने जाय रैयी है। जिण दिसा में आज री हिन्दी कविता हो कई सगळी भासावा री कविता री यात्रा घणावरी वहती दीसे है। बोध रो ओ स्वरूप ऐणी रचना-प्रयासा रा ऊजलेपण री साख भरे है। इणा री कवितावा मे जिनगाणी री ऊब घुटन अर बेफालतूपण—

जिया घर सूं दफ्तर/दफ्तर सू घर/जिया म्हे जिया/तो फकत ओ सफर/जिया' (मोहन आलोक)। मूल्यहता आचरणा ने चवड़ै लावण सात्तर मूल्यहीणता अर जड़ता आदि रो चितरण जिया–'वयू एक रघुकुली ऊभो है मुक्योडो/जगं जगं सू टूट्योडो लिडक्योडो/जमानो/नी जाणं किण री स्वतन्त्रता सारू निरन्तर कर रैयो है सग्राम (रघुराजसिह हाड़ा)। सँगाम् ज्यादा विडम्बनावा ने सामी लाअणवाळो व्यग्य रो हथियार भी इणा री कवितावा माय आपरी जुदी पिछाण करावे जिणनै बाचणो दोरो कोनी है –'थारै मे काई गुण है/कै तनै नमा, गेला मास्टर' (रामेश्वरदयाल श्रीमाली)।

ऐ प्रवृत्तियां राजस्थानी री आज री कविता री दिसावा ने साग़ीडे भाव सू प्रक्ट करती दीसे। इणा सू अव ओ भरोसो लियो जाय सके के राजस्थानी मे अब कोरी मोरी *कल्पनावा आळा 'गोरडी रा गीत'* के *'धोरा री धरती रो सगीत'* के 'मारू री प्रेमकथावा' रा दिन लदग्या। इण धरती मे वीरा रा रगत री छापा ने सोधणो कीकर सम्भव है क्यूके जमी रो एक एक कण अवसरवादिया-भ्रष्टाचारिया री लीला सू *रळीजियोडो सिवाय रैयो है। अबै तो आज रा उबळता सवाला* ने बाचणो जरूरी है। जिण सू सायत जिनगाणी रे साथे, आज रा मिनख रे साथे, मिनखा री टूटयोडी आशावा रे साथे, अर पाठका री अपेक्षावा साथे किणी भी भात रो न्याय कियो जाय सके। नूवी कविता रो प्रयोग करण आळो राजस्थानी रो आज रो *कवि इण मुजब री जागरूकता री मोकळी ओळखाण करावे* इण मे *किणी भात* रो भी सन्देह कोनी है। ऐ सगळी बाता राजस्थानी री नूवी कविता री चोखी सम्भावना रो भी भरोसो दिरावं है।

□

(जागती जोत में प्रकाशित)

# धरती री आस्था रो रचनाकार : कथाकार अन्नाराम सुदामा

**धरती री** *आस्था* **रो** *साच—अन्नाराम* सुदामा धरती री *आस्था* रो रचनाकार है। धरती ही इण रो विश्वास, इण री रचना-प्रेरणा अर इण रो प्रतिपाद्य है। धरती सू छेड़ै इण वास्तै न तो किणी भात रो कथा क्षेत्र है, न किणी भात रा जीवन री आचार संहिता। इण री रचनावा मे न तो धोरा रो रजत सिणगार है, न गोरडी री बाकी छिवया, न प्रेमकथा रा सबडका है, न योद्धावा रा पौरुषेय करतब। इण री रचनावा माय राजस्थानी रा लेखका री ऐडी बेडिया सू दूर आज रे गाव रो यथार्थ साचै रूप म उपस्थित है। वे गाव जिणा मे गरीबी है, पिछड़ोपण है दोवडा आदर्श है, फालतू री रूढिया है, सस्कारहीण आचरण है, अशिक्षा रे सागै उण रा मिनखा री मजबूरिया है। इण बाता नै चित्त सू सामी लाय नै ओ लेखक आपणा ओळखियोडा गावा ने नूवी ओळखाण दिरायी है। ऐ बाता इण लेखक री अनूठी पिछाण हीज कोनी करावै बल्कि मानवीय आस्था रो ओ रूप सगळै राजस्थानी साहित्य रे नूवे अनुभव रो दरसाव भी करावै है। आम आदमी रे दर्द री आ ओळखाण राजस्थानी गद्य री आगामी सम्भावनावा नै उजगार करण रा ठोस काम भी करै है।

गाव रा यथार्थ रा वरणन करण वाळा सगळ रचनाकारा माय एक मुजब री उपकार चेतना दीसिया करै। गाँव रो बखाण करता थका ऐडा लेखक आपरी निजता ने कोय बिरमाय सकै। बारैसू आयोडा सैलानिया ज्यू गाव री घणकरी बाता न ऐ जाणे मूवी कैमेरा री सहायता सू पकड न पाछो वरणित कर देवण म हीज वे आपरे लेखक कर्म री इतिश्री कर देवै। गाव री बाता ने समाज अर देस री मोटी मोटी समस्यावा सू जोडनवाळा ऐ रचनाकार माटी रा जुडाव री साची पिछाण कोनी कराय सकै। वैणै वास्ते गाव साची कोनी हुवे आपरी खुद री विचारधारा साची हुया करै। जमी रो कोड वैणै रचनाकर्म रो आधार कोनी हुवे। यश रा कोड उणा ने जमी सू जोडिया करै। इणी वास्ते उणारी लेखनी जमीं रा साच सू सागीडै भाव सू एकमेक को हुय सकेनी। एकण कानी उणा री खुद री जुदी आस्थावा रैवे तो दूजी कानी धरती री सोचियोडी बाता काल्पनिक घटनावां माथे टिक्योडी रैय न

जुदो–जुदो असर निपजाया करै। धरती रो साच उणा री कलम सू सामी तो आवे पण उणा रो आप रो सोच उणा माथै मौकळी तरा सू छायोडो रेह्या करै।

पण अन्नाराम सुदामा रे वास्ते आपरे सोच सू भी वेमी आपरी जमी रो महत्व है। वो साधक रे भाव मू रचनाकर्म कीनो है। पाठका तई उणारा विचार सम्प्रेषित हू जावे तो मेहनत सकारथ नही तो कोई बात कोनी। सोचरा स्थूल वैचारिक आधारां ने रचना मू अलगावण री ऐ भागीरथ कोशिश इणा री सगळी रचनावा मायने दीसे है। इण कारण इणा री कथा मृष्टिया माटी री ताजी महक मू रळियोडी है। ऐ इण महक रो इस्तेमाल निजर ने ऊपर सू गाव मू जोडण री जागा गांव री इच-इच जमी मे जायोडा माच ने सामी लावण खातर कियो है।

**ग्रामीण यथार्थ**—अन्नाराम री रचनावा रो गाव घटनावा री चमकती मोरया री लडी कोनी है। न 'भारतमाता ग्रामवासिनी' वाळो पूज्य भावा रो थोथो प्रदर्शण ही है। इण रो गाव आप री सम्पूर्णता मे गुथियोडो एक इकाई वाळो गाव है। कथा रो रचाव इण री रचनावा *माय आपरी निजता मे सम्पूर्णता खोजण रो बन्धण तो* स्वीकारे पण पोथ्या सू निपजियोडा ज्ञान रो नकळी आडम्बर री किणी भात री पिछाण कोनी राखै। उपन्यासा री एक एक ओळी आपरी सगळी ताकत सू गाव री जीवणधारा मे प्राण फूकण री चेप्टा करती निजर आवे है। जिण माटी मे मीगणी भी है, जमी सू रळियोडा काटा भी, है धोरा रो सपाट फैलाव भी है पण इण रे साग साग उणा मे बीजा ने फळावण रो उपजाऊपणो भी है। इणां रे कथावा रो जीवण मिनख रे व्यक्तिपणा री पिछाणा रो प्रयास है, जिणने आपरी चेतना री सगळी आस्थावा सू ओ रचनाकार सामी लायो है। जाणे धरती एक चोखी तरऊ फैलियोडी एक रचनापट है जिण माथै अन्नाराम आपरी कलम री कोरणी सू चोखा-मूडा, ओपता अणओपता, पूठरा खाटा सगळो तरे रा मिनखा न जुदे जुदे रग रूप सू उकेरिया है। इण कारण इणा री रचनावा न पढती वेळा पाठक जाणे गाव री जमी म साँस लेवतो सा अनुभव करै। इणा री धरती चोखी तरै मू ओळखियोडी हूवता हुवा भी नूवी नूवी है। इणा रा चरित्र सामान्य मिनखा मायला होवता थका भी आपरी पिछाण राखे है अर कथा मृष्टिया आपरी कमजोरिया रे बावजूद आपरो प्रभाव पैदा करण री ताकत राखे है।

अन्नाराम री रचनावा माय धरती रो साच आपरी सगळी असगतिया रे सागे मौजूद है। लेखक मे एक ऊडी छटपटाहट है के धरती रो सोवणो रग आज रा हालात मे बदरग क्यू हुयग्यो है। इण री सगळी सोभा मिट'र क्यू फीकी पडती जाय रैयी है। लेखक री इण अकुलाहट में किणी भात रो छद्म या दिखावो कोनी है। न इणा रे मन्तव्या माय किणी भी भात रो नकलीपण है। माटी री पीडा

इण री पीड़ा है और रचनावां जाणे लेखक री हीज व्यथा कथा रो फैलाव है। धरती री महकती काया में जहर फैलावणिया धतूरे रा बीज जीसा साच इणने टीसता रैवै। कलम री रापी सूं ऐ जहरीला बीजा ने उपाडण में हीज ओ आपरी मेहनत री सार्थकता समझे। तस्वीर रे रंगा ने बदरंग करणवाळी सगळी ताकता ने चेतना री छटपटावती ऊर्जा सूं ओ लेखक पूरी तरै सूं नष्ट कर देवणी चावे है। इण अनुभव में पाठका री सहभागिता ने जगावण खातर, जाणे उणां री आस्था में ऊभी आगळी घाल'र उणा ने समाज री सगळी विसगतिया रे रूबरू खड़ी कर देवणी चावे। इण चेष्टावां सूं अन्नाराम सुदामा जाणे सिरजण री नूवी चाल रो सूत्रपात करतो निजर आवे है।

**देशप्रेम री भावना**—धरती री आस्था रो भाव निराधार कोनी है। उण रा दोवड़ा-तेवड़ा आयाम इणा री रचनावा में फैलियोड़ा है। मानवीयता अर देशप्रेम री भावना भी कथावा रो अंग हुयने बद आख्या खोलती नजर आवे है। अन्नाराम रो मानव विश्वास भावनात्मक आवेश री प्रतीति करवावण सूं ज्यादा उणरा वैचारिक आधारा री पुष्टि किया करे। शोषण, उत्पीडन रो घणखरो लुभावणो रूप सूं अर शास्त्रीय रूप रे मोहजाल सूं ऊपर ऊठ नै ऐ आपरा उपन्यासा माय उणरे घटित रूप रो अंकन कियो है। पूजी रे आधार माथे सामाजिक वर्गा री अन्दरूणी असमानता ने चित्रण करण खातर उणा रा सामाजिक पहलुआ ने मोकळो सम्मान दियो है। आर्थिक असमानता ने मिनखा रे आचरण सूं जुदा कर देवण री *बनिस्पत आचरण रा सत्या सूं शोषण रे रूप* ने सामी लावण री भरसक कोशिशा इणा री रचनावा में निजर आवे। वर्ग रे पिछडेपणा रा हेतुआ ने सामी लाईजियो है। अकर्मण्यता, अशिक्षा, मूर्खता न पिछड़ा वर्गा रे मिनखा मे देख'र सुधारवाद रो नूवो रूप कर्म माथे टेक'र परकट कियो गयो है। उणा मे शराब आदि री लता घणखरी *बुराईया ने निपजावे अर उणा सूं उणा री सामाजिक* दशा आपोआप बिगडती जावे। शोषण रे हेतुआ री आ खोज शोषिता री खुद री कमजोरिया रे सागे सागे शोषका रा ओछापणा ने सामी लावण म निसरती दीसे। गाव रा आज रा शोषक बदळियोडी सामाजिक दशा मे नूवे रूप मे सामी आया है। प्रजातन्त्र मे महाजन लोगा रे हाथा मे *गाव री सगळी सत्ता भेळी हुगी है। जिणने गाव रा* सरकारी अमला आपरे व्यवहार सूं अमानवीय जामो *पहरावण* रो काम किया करै। शोषका मे पूजी माथे सगळे भाव सूं कब्जो कर लेवण *वाळा धन्नासेठा* रो दोवड़ोपण, उणा री मीठी कथनी अर खोटी *करणी आपरी* सगळी मूगली चतुराई रे साथे वरणित कर ने लेखक उणा रे प्रति *शोषिता रे उमडते* विद्रोह ने परकट कियो है। सेठा रो धार्मिक ढोंग, सेवा री नाटक अर हर दशा मे लाभकारी बाता री सिरजण री चेष्टावा पूरे जोश सूं बखानरा मे *वर्णित हुई है।* अन्नाराम री धरती री आस्था री सारी दिशा उत्पीडण रा ऐ दोनऊ पक्षा ने उजागर

करण मे मोकळी मलगनता लियोडी है। ओ इण दोपा रे परिष्कार रे वास्ते ध्याकुल होय रह्यो है। अर आपरी समूची चेतना मे इणने माडण मे एकण ठोड भेळी कर राखी है। धरती री वास्तविक महक गे आ मोज इण लेखक रा मानव विश्वामा ने साकार करण मे सफल रैयो है।

देश प्रेम री भावना भी अेणा वयानका रो एक और बोलतो स्वर है। गाव ने नरक बणावण मे जिका तत्व सक्रिय भूमिका निभाय रैया है वैणी लम्बी चवडी रूपरेखा इणा रा उपन्यासा मे सामी आई है। सत्ता री राजनीति एकण कानी प्रशासनिक गतिविधिया ने नियन्त्रित करती निजर आवे तो दूजी कानी शोपका री अणभणियोडी अशोध चेष्टावा उणा रे खुद रे पगा म ही बेडिया ने और काठी करती जावे। अन्नाराम मिनख अर सत्ता रे विचाळे पडण वाळी सगळी ऋणात्मक तावता मू टकरावण रो उछाह पाठका मे भरणी चावे है। इण अन्तराल ने इणा रा उपन्यासा रा कथानक पूरी ईमानदारी मू सामी लावण म सफल रेह्या है। जातिवाद, बढती जनसख्या, नारिया री जड भावनावा, निठल्लोपण, सैंगा न ए चवडे लावण री कोशिश की है। समाज सापेक्ष राजनीति रो महाजना रे हाथा मे खेलण रे रूप म विरम्ह खाड म पतन, राजनीति रो सुधारवाद रो ढोग, धर्म रा आधारा री बुराईया, प्रशासन रा वाहक सरपच, पटवारी, ग्रामसेवक, पुलिस रो आतकवादी रूप अर विकास योजनावा न स्वार्थ सिद्धी रे रूप म इस्तेमाल करण री सूगली चेष्टावा रचनाकार रे साचे देश प्रेम री भावना न परकट करे है। लेखक रे वास्ते आपरी इण भावनावा ने दरसावणो सोरो कोनी है जिके सू ऐ उपन्यासा रे कथानका री कीमत माथे भी आपरी राष्ट्रीय चेतना ने अलग सू भी जागा-जागा परकट कर दीनी है। कथा न छेडे मेल र उपदेशक रे रूप म लेखक रो ओ औतार पाठका न भला ही जागा जागा खटकतो व्हैला पर अन्नाराम र वास्ते आपरा ई मान न अर आपरी अणमाप राष्ट्रीय भावना ने दबावणो सोरो कोनी है।

**लोक चेतना**— राष्ट्रीयता री आ भावना आपरे व्यापक रूप म सगळे देश मू जुडियोडी है तो सूछम रूप मे लाक चेतना ने कथा गे विषय बणावण म जुडियोडी निजर आवे। पण अन्नाराम री लोकचेतना कोरा कोरा लोकतत्वा ने परिभाषित करण री तलछट सी योजना भर कोनी है। लोकतत्वा न पूज्य भाव मू सामी लायन लोका भला ही ऊभो जस लूट लियो हुवै पण इण मू लाक जीवण रा भोगणिया रो की लाभ को हूय सकियो है। धोरा सू लोकगीता मू, अठेरा परब त्योहारा सू ओ रचनाकार प्रेरणा लेवतो रैयो है। उणा ने महदी रा माडणा ज्यू माडतो रैयो है। पण ऐडा जादातर रचनाकारा म लोक सू जुडावा रा आन्तरिक सूत्रा रो अभाव ही दीसिया करे। 'अहोरूप' वाळा अदाज मे राजस्थान री लोक सस्कृति री अनूठी महिमा ने या

वीर सपूता ने निपजावणवाळी जलमभोम रे रूप मे आदर्शवादी निजरा सू माड ने सामी लावण री भावुकतापूर्ण मूर्खता अठे रा रचनाकार हमेसा सू करता रैया है। पण अन्नाराम रे वास्ते लोक संस्कृति रो साच अज रा उलझियोड़ा जीवण री साची बानगी देवण रो ठोस आधार कोनी बण सके। लोकजीवण कोई शाश्वत अवधारणा कोनी है। युग रे बदलाव रे सागे-सागे वा भी आपरा रूप बदलती रैवे। आज रे गाव रो पीड़ित समाज माडणा री सौदर्य कोनी व्है सके इण खातर भुलायो कोनी जाय सके। ओ रचनाकार न तो लोकजीवण रा गौरव ने ही अन्तिम माने न परम्परा ने बखावण री भाटवृत्ति ही राखे। सुदामाजी तो आज रा जुगसत्यां ने सीधी-सादी शैली में वरणित करण री कोसिस की है। धोरा री धरती रो ऐड़ो अकन राजस्थानी गद्य री नूवी परम्परावा री सूचना देवे। जुगसत्य ने गाव री जमीं सू हीज पकड़'र खीच ले आवण मे इण लेखक री भूमिका सोरेसाज कोनी भूली जावे।

अन्नाराम रा उपन्यास आज रे गाव रा दर्पण है। दर्पण ज्यूं हीज इण लेखक रो ग्रामीण बिम्ब सू रागात्मक जुड़ाव उजागर हुयो है। उणा ने हीज निर्विकार भाव सू प्रतिबिम्बित करण मे ओ आपरी सफलता समझे। अधिकारी भाव सू गाव रा दोष, लोगा री कमजोर्‍या, धरम रा पाखण्ड, महाजना री कमजोर्‍या, जातीय भावना, सस्कारहीणता सब री सब इण रचनावा में उतरती आयगी है।

**गाधी युग रो आदर्श भावना**—अन्नाराम कोरो कूर यथार्थ रो चितेरो भर लेखक हीज कोनी है। इण मे आदर्शगत भावना भी कूट कूट ने भरियोड़ी है। उण दृष्टि सू इण री चेतना जूनी पीढी रा मूल्या ने अन्तिम साच मानती निजर आवे है। समस्यावा री विनाशकारी विकरालतावा सू भी जादा ओ लेखक *आदर्शा* खारू मोकळो झुकाव राखै। नैतिक मूल्य इण रे विचारा री खाद है तो पुराणा आदर्श वो थाळो है जिण में ओ आपरी कथा ने बीजतो दीसे है। समस्यावा सू लेखक रो ओ ट्रीटमेंट कथा री दिसावा ने जबर्दस्ती आदर्श कानी घडी घडी मोड़तो रैवे। इण सू कथानका री विश्वसनीयता की कम हुय जावे। पाठका माथे सुधारवाद रो ओ मोटो प्रयास घणखरो उल्टो असर ही डाले। जिण जटिल सामाजिकता ने पकड़ण री लेखक कोशिश की है उण नक्शा मे जूना मूल्य बेमेळ है। पण लेखक रो आदर्शवादी मन इण रे उपरान्त भी बासी मूल्या ने थोपण में कमी कोनी राखी है। कठे, कठे ही तो आपरा ऐड़ा उछाह री झौंक मे लेखक उपदेश देवण लाग जावे। गाधी वादी युग रा आदर्श ने आज रे जुगसत्य माथे यू थोपण रो भाव नूवी चादर माथे जूना पैबन्द ज्यू अणओपता दीसै है।

**नूवी लड़ाई रो खातर जूना हथियार**—राजस्थानी गद्य ने नूवा अनुभवा सू सस्कारित करण वाळो ओ रचनाकार कथ्य रे धरातल माथे जित्तो खरो है शिल्प रे

धरातल माथे बुरी तरऊ पिछडियोडो है। बात री महिमा उण रा साच रा स्तर माथे जित्ती निर्भर किया करे उणरे प्रस्तुतीकरण माथे उण सू भी जादा निर्भर करे है। नूवी लडाई रे वास्ते पुराणा हथियार काम कोनी देवे उण वास्ते तो नया हथियार ही घडणा पडे। आ बात अन्नाराम रे लेखन री दुर्बलता री सूचना देवे क्यू के इण रा औजार एकदम भोतरा हुयोडा है। जीवन्त अनुभवा ने पुराणी शैली मे ठूसण री मजबूरी रचना रा प्रभाव ने कमजोर कर देवे। उपन्यासा रो रचाव मोकळी कमजोरिया लियोडो है। कथा रो उठाव साधारण है। गति पागळी अर अन्त आदर्शा मू रूधियोडो है। अति नाटकीयता कथा री निरन्तरता तोडे तो रचनाबन्ध बिलकुल ढुलमुल है। कथा माथे लेखक री पकड पूरी रचना मे कठे ही कोनी दीसे। वो तो जाणे घटित सत्य रो पिछलगू बणियोडो लिखतो जावे। कथानक ने समाज रो दर्पण बणाय ने कथा मे स्थूलता सूं खडो कर दियो गयो है। इण दर्पण मे वे बाता भी पाठका ने साफ साफ दीसे है जिण सू कहाणी माथे ऋणात्मक असर पडे। दर्पण रे दोप सू बिम्ब कित्तो ही साफ क्यू कोनी हुवो प्रतिबिम्ब साफ कोनी भलकिया करै। अन्नाराम री रचनावा रा कथानक कलई उतरयोडा काच ज्यू कथ्य ने साफ दीसण जोगा कोनी बणाय सकिया है। कथा मे वे बाता भी है जिणरी कोई जरूरत कोनी है। कथा रो डोरो भी इत्तो पतळो है कि ठोड ठोड टूट जावे। कथा ने आपरे आदर्शा रे धक्का सू लेखक आगे धकियावतो जावे। बात ने है ज्यू रे ज्यू कह देवण सू पाठका न ऐडो लागे जाणे वे कथा रो पारायण कोनी करै बल्कि लेखक रा घटित सत्या रा ससमरणा ने पढ रैया है। राजस्थानी बातां री परम्परित शैली री छाया म कथा ने आगे बढावता जावण सू लेखक रा पाका अनुभव भी काचा पडग्या है। अर आ लागे जाणे लेखक रो रचना मे खुद रो कोई सरोकार कोनी है। वो ता बस जिको की भी आपरै गाव मे देख्यो है अणपचियोडा अन्न ज्यू उणनेपाछो उगळ दियो है। कथा म ऐडी बातां भी है जिकी लेखक रे अविवेक ने परकट करै। जुग रो सत्य भासमान रैव तो रचना मे आपरी प्रभाव राखे पण वो ही जद पारदर्शी ज्यू ज्यो रो त्यो सामी आ जावे तद उणसूं पाठक ऊब जावे। अन्नाराम सुदामा रे उपन्यासा रा पाठक इण ऊब सू उबर कोनी सके। उणा ने या तो अर्द्ध आधुनिक चेतना रा पाठक बणनो पडे (जिण रे वास्ते ऐडा प्रसग राबडिये रा लच्छा ज्यूं स्वादिष्ट हुय सके)। या पछै ऊब ने ठेठ तईं ढोवण री मजबूरी स्वीकारणी पडे। वरना अबार तईं तो अे रचनावा कस्बाई मानसिकता वाळा पाठका ने तो भले ही प्रभावित कर ले प्रबुद्ध पाठका ने घणीसीक लुभा कोनी सके।

**रचना ससार—** अन्नाराम री रचनावा एक ही सोच रो क्रमश विकास कानी है। इणा रो कथा साहित्य विचारा री प्रौढता सागे सागे मोकला जिम्मेदार हुवतो गयो है। कलम री धार ज्यूं ज्यूं सकरती गई है इणा री रचनावा उत्ती हीज

गम्भीर समस्यावा सू जूभती गई है। कथा री सूक्ष्मता ने पकड़ण मे सचेष्ट हूयती रेह्यी है आ कथा रो वैचारिक आधार और भी गहरो हूवतो गयो है। 'मंक्ती धरती मुळकती काया' सू लेयर 'मंवे रा रूख' तई फंलियोडी ओणी कथायात्रा एक व्यक्ति री अनुभव यात्रा रो दस्तावेज है। इण मे ऊजळी धरती रा सत्य थिरपीजता दीसे है, जीवण अधिकाधिक विविधतावाळो ने विचार अधिकाधिक प्रौढ हूवता निजर आवे। जाणै उणा री रचनायात्रा जमी सू आपरै जुडाव रा पख करण री खातिर उण मे और ऊडी ही ऊडी घसती गई है। लेखक री भाषा री पकड अर मुहावरा आदि रो ओपतो उपयोग इणा री बात ने पाठका रे हिवडे माय थिरपण री क्षमता राखं है। जमी री ऐडी पिछाण अर गाव रे जीवण रा ऐडा चितराम दूजी ठोड मिलणा दुरलभ है।

अन्नाराम री उपन्यास यात्रा रो पैलडो पडाव 'मंकती धरती मुळकती काया' रे रूप मे सामी आयो है। इण सू हीज लेखक आपरा मन्तव्या ने साफ करण म सफत रह्यो है। साहित्यिक निजरा सू की पोची हूवता थका भी रचना कथ्य ने उजागर करण री दृष्टि सू चोखी तरऊ सुफल दीसे है। इण मे धोरा रो विस्तार आपरी सगळी सुन्दरता रे साथे ऊभो है। रेतीला टीवा माय जीवण री ओपती छविया आजादी रे पेलडा जुगसत्य सू सरू हूयने ठेठ चीन रा आक्रमण तई री घटनावा ने समेटियोडी दीसे है। 'किया काई म्हारो सिर, आपा ने न डर चीण रो अर न वापडे पाकिस्तान रो ही - अर भळे जू जित्तो ही नही। आपा नै तो जद कद सगळा सू मोटो डर है एक आपा सू ही' इण मान्यता ने पोसण सारू रचना री कथा गूथीजियोडी है। नानी री बिथावा री आ कथा एक लुगाई री जीवण भर री नी होय'र सगळे युग रो दरसण भी है। सामती छाया मे पळण आळा गावा में सामाजिकता ने तोडण आळा जिका तत्व निपजिया उणा माय व्यक्ति रे आचरण ने भूठा मूल्या रा दिखावा अर घरेलू पडयन्त्रा सूं तोलणो सैगाऊ बडो काम है। नणद रा पडयन्त्रा री शिकार सुगनी (नानी) आपरा बीद अर टाबरा सू बिछुड नै धोरा रा समुन्दर मे जाणे उछाल दी गई है। अर वा इण समन्दर सू अनुभवा रा जिका काचा पाका मोती बटोर्‌या है उणा री हीज तरतीबवार कहाणी इण उपन्यास मे है। समाज रा साचा सेवक तो घर छोडण ने बाध्य व्हेवता रंया है तो डाका डाळणिया, औरता री इज्जत सू खेलणिया लोग उण टैम सू हीज पनपता रंया है। धरती री ओपती मंक नै सागीडे भाव सू थिरपण री लेखक री कौशिशा मिनख रे आचरण रा बेमिनखपणा रे माय सूं चवडे आई है। सुधारवादी दृष्टिकोण रे कारण उपन्यास रो अन्त नानी री कथा ने समेटतो समेटतो उपदेशक री आदर्श भावना धारण कर लेवे।

'मेवे रा रूख' मे लेखक री मुद्रा थोड़ी आक्रामक है। गाव ने सुरग बणावणरो लेखक जिका सुपना लेवतो उणा नै सेठ-साहूकार भूखा गीध ज्यू जीम रैह्या है। अर फैफीजियोड़ा गाव री हालत बिखरियोड़ी आतड़िया अर हाडका री ठठरी भर हूय'र रैयग्यी है। गरीब लवको धूर्त वाणिये रे फौलादी शिकजा म फसियोड़ो परायी सास लय रैह्या है। गरीबा रो जीवण जाणे उणा रो खुद रो जीवण कोनी रैह्य ने परायो धन हूवतो जाय रैह्यो। फेर भी ऐ लोग बळियोडी जेवडी ज्यू परम्परावा रा बट कोनी छोड रैह्या है। वे तो जाति या वर्ण रो दम्भ पाळ रैह्या है अर यू आपरो खुदरो आपो बिसराय ने सगळा ऑर्थिक, राजनीतिक दबावा सू बेखबर हूय रैह्या है। 'मेवे रा रूख' रो लेखक इण दशा ने देख' र जाणे आपरो धीरज खोय रैह्यो है। आपरी छटपटाहट ने किणी भी भात सू दबाय कोनी सकियो है। उण री अडीक जाणे खूटीगी है अर लेखक रो अधीर मन आपरे मायली पीडा ने साकार करण खातर पोथी रे रूप मे आपरी उण अकुलाहट ने लिखण लागग्यो है। इण पोथी माय अन्नाराम सुदामा री अभिलाषावा अर उणा री दिसावा साकार हुई है। एकण कानी वो गाव री विगलित दसा रो विवरण देखण री खातिर एक एक नजारा रो, छोटी सू छोटी घटना रो स्थिर थामीजियोड़ो रूप बडे धीरज सू उकेरे है तो दूजी कानी पाठका री चेतना मे समाज रा बैरी मेवे रा रूखा ने काठा झाल' र फफेडण री प्रेरणा भरतो जावे।

सिनाथ रे रूप म जाणे गाव रा एक सचेतन पौरेदार सगळी कमजोरा रे माय ऊडो झाकतो जावे। अर उणा री जडरूप गाव री खुशहाळी माथे कुण्डली मारियोडे नागा ज्यू बैठा सेठ धनजी अर हरजीराम जिसा लोका री घिनौनी करतूता ने उघाडता जावे। शोषण रा नूवा नूवा रूप, वेगार, मिठबोलोपण, एहसाना ने पराया माथे थोपण री कला, स्वास्थ साधण री सगळी पैंतरेबाजिया, धरम रो आडम्बर, भलमनसाहत री ओछी बाता अर मीठी छुरी जिसा अमानवीय क्रिया-व्योपार एक रे पछे एक पाठका रे सामी आवतो जावे। आख्या मदियोडा मूरख लाग इण चतुराई रा शिकार हूय'र रोजीना लटीजता जावे। शिकारी अमलो, पुलिस, ग्राम सेवक, सरपच भी इणी सेठा रे नाख्योडा हाडका ने चूंसता कुत्ता ज्यू ऐणे सामी पूछ हिलावता रैवे अर सीधा सादा गाव आळा ने मूसता रैवे। गाव रो आ सजीव चितराम आपरी साची पिछाण सू पाठका ने आवेशा सू भरतो रैवे। अन्नाराम री उपन्यास कला रो सुधारवादी रूप भी 'मेवे रा रूख' म दीसे है। सगळा रे हित रो आदर्शवादी समाधान उपन्यास ने जूनी जेवडी सू कथा न बाधियोडो दीसे है।

अन्नाराम सुदामा री ताजी रचना 'केसर' एक वार फेरूं गाव री ही कथा है। धरती री आस्था रो रूप इण म भी उणी तरा सू निजर आवे है। 'केसर' उपन्यास मे पैलडीवार एक केन्द्रीय चरित्र माथे कथा री रचना हुई है। ऐणा पैलडा

उपन्यास व्यक्ति रे ब्याज सू समष्टि री छवि साकार करता दीसे। पण इण मे व्यक्ति ने केन्द्र मे राख'र उण रे साच ने जियावण री कोसिस दीसे है। बिना बाप री केसर काबे रे घर रो सगळो कारज सार्या पछे भी उणा री पिछाण नी कराय सकी है। माँ री मौत सू जूझण खात'र वा भूत प्रेता री भी परवा कोनी करै। पण आपरी कोसिसा मे सुफ्ल कोनी हुय पावे। 'केसर' भी इणा री पैलडी रचनावा ज्यू हीज अन्धविश्वासा नै चुनौती देवे है। इण रूप मे आ रचना भी लेखक री उपन्यास शिल्प परम्परा रो हीज आगळो रूप कैयी जाय सके है।

अन्नाराम रो कहानीकार रूप एणा उपन्यासकार रूप रो पूरक है। कहाण्या रो विषय भी गाव ही है। उणा रो ट्रीटमेट भी सुधारवाद सू रळियोडो पगियोडो है। अर यथार्थ रे माय सू हीज आदर्श ने ढूढण मे लागियोडो है। इणा मे उपन्यास आळा हीज विषय उठाइजिया गया है। चरित्र अर निजर रो विस्तार भी वेडो हीज है। 'ढकीजता मानवी' भी पैलडी रचना 'मैवे रा रूख' ज्यू हीज गाव रे सामाजिक जीवण रा अग रूप मे अधविश्वासा अर आडम्बरा माथे आक्रमण कर ने सचेत करण री चेष्टा करतो दीसे है। ब्याज रो धन्धो करण आळा रा सिकारा री कथावा इण रे माय भी चवडे आवती दीसे है।

इण रूप म अन्नाराम सुदामा रो रचनाकार दरअसल धरती री आस्था ने सामी लावण मे पूरी ताकत सू जुटियोडो है। गाव रो चितराम खेंचता थका भी धोरा री धरती रो यथार्थ इण री रचनावा मे साकार हुवतो रैवे। इण लेखक री गाव री आस्था, शोषण रे सामी ऊभण री पुरजोर चेष्टावा, मिनखपणे रो विश्वास अर जमी रा यथार्थ रा बोलता चितराम राजस्थानी गद्य री सामी आवती सम्भावनावा ने उजागर करै है। राजस्थानी उपन्यास ने खडो करण मे इण लेखक रो योगदान हरमेस याद कियो जावतो रैवेला।

□

(जागतीजोत में प्रकाशित)

# मीरां रे साहित्य सूं जुड़ियोड़ा की अणसुलझियोड़ा सवाल

मीरा रे साहित्य सू जुड़ियोडा अणसुलझियोडा सवालां रे खोज री कोशिश आपोआप मोकळो महत्व राखे है। क्यू के मीरा रा साहित्य माथे मोकळो काम हुया पाछै भी उणरो जीवण अर साहित्य पूरी तरामू निर्विवाद कोनी हुय सकियो है। मीरा रे साहित्य रा अध्येता कठे-कठे तो फालतू बाता माय आप रो श्रम जाया कियो है (जियां के उणरे साहित्य री परख करण री जागा उण रे नाम रे उद्गम री खोज रे कोशिशा माय हीज सगळी ताकत खरच कर दीनी है) । इण वास्ते मीरा रे साहित्य रा समीक्षक उण रे साहित्य रा सौंदर्य रा हेतुवा ने पूरी आस्था अर भरोस सू उजागर कोनी कर पाया है। जद के दूजे कानी आम जनता उण रा पदा ने पूरी आस्था सू मान'र उण माय रुचि लेवती रैयी है। मीरा रा साहित्यिक महत्व अर जन भावना री स्वाभाविक रुचि रे बिचाळे रो ओ आतरोपण इण विचार ने सामी ले आवे के आखिरकार विद्वाना अर सहज विश्वासा आळी जनता रे सोच रे आतरेपण रो कारण कई है ? इण सवाल रा जवाब सारू मीरा रे साहित्य रा अणसुळझियोडा सवाला माथे विचार करणो जरूरी है।

**मीरा रे पदा री क्रम व्यवस्था रो सवाल**—मीरा रा पदा ने दीयोडी आज री क्रम व्यवस्था ठीक कोनी कंयी जाय सके। उणा सूं भी मोकळा मतभेद पैदा हुया है। मीरा रा पदा माय उणरो खुद रो जीवन अनेक रूपा मे सदर्भित हुयो है। इण सू इण बात ने मोकळो बळ मिळे है के मीरा आपरो साहित्य सर्जन करती व्हेळा खुद रे जीवन प्रसगा सू सीधी प्रेरणा लीवी ही। बीद रे गुजर्या पाछै राणा सू ताणातर्णी, जहर पीवण री घटना, बिन्द्राबन जात्रा प्रसग या द्वारिकाजी सू जुडियोडा पद तो साफ-साफ निजर आवे है। पण सयोग दशावा रा या उण रे जीवण री दूजी बाता सू जुडियोडा पद उण रे पदा ने दीयोडी आज री क्रम-व्यवस्था माय साफ साफ निजर कोनी आवे। जिया के योगी ने सम्बोधन देवण आळा पदा ने जुदी-जुदी ठोड भेळा करीजियो गयो है। इण सू आ बात औरू उलझगी है।

भगती रा सस्कार तो मीरा मे उण रे बचपन माय हीज पड चूका हा पण उण रा साहित्य सिरजण रा सस्कार कदे पड्या हा आ बात अजे तईं साफ कोनी हुय

सकी है। जिया महाप्रभुवल्लभाचार्य सू दीक्षा लिया पछै सूरदास में अचानक भावा रो बदलाव निजर आवे है उणी तरासू कई मीरा माय भी विधवापण री मार सू अचानक काव्यत्व फूटियो हो के कबीर रे जीया जुदा-जुदा सता रे सम्पर्क सू अचाणचक ही उभरीजियोड़ा भाव बिम्बां ने उभारण री चेष्टा दीसे है। क्यूंके इणा माय सू अगर लारली बात साची है तो इण ने लेय'र मीरा री जिनगाणी सू जुडियोडी मोकळी बाता सू नूंवा नूवा साचा ने ढूढिया जाय सके है। इणी भात उण रे काव्य सू उण री जिनगाणी रा मोकळा अणदीठता प्रसगा ने भी सामी लायो जा सके है। इण वास्ते मीरा रा पदा ने उण जीवन प्रसगा सू प्रत्यक्ष जोड'र उणा री पुनर्व्यवस्था करणो जरूरी है।

मीरां री ईश्वर परिकल्पना : मूल उत्सां री खोज—मीरा रा आराध्य कुण हा इण बात मे सन्देह करणो एक तरासू पूनम री रात माय चाद ने ढूढण जीसो मूरखता रो काम है। 'मेरे तो गिरधर गोपाल' रे घोषणा पत्र रे साथे उण री रचनावा जिण रूप माय सामी आई है उण माथे सन्देह करण री कोई गुजाइस कोनी है। क्यू के कृष्ण रे वास्ते मीरा रे मन म अनुराग रो भाव इत्तो गहरो हो के उण कारण दोना माय अन्तर करणो दोरो व्हे जावे। मीरा जाणें कृष्ण-कृष्ण रटता कृष्ण रूप हीज व्हैगी। मीरा री ऐड़ी भगति भावना पाठका ने भी उणी तरा सू सस्कारित करती रंवे है। इण वास्ते मीरा री ईश्वर विषयक भावना माथे किणी भी भांत रे सन्देह री गुजाइस कोनी है।

फेर भी म्हारै मुजब मीरा रे आराध्य रो सवाल अजे तई अणसुलभियोडो है। सवाल उण री दिशा ने लेयने कोनी है। न सवाल उण रे लक्ष्य ने लेयने है। सवाल तो उण रे साधन ने लेय'र है। भक्ति सू सम्बन्धित मीरा रा जुदी जुदी भावना रा पद इण विवाद ने सामी लावे है के मीरा रा भक्ति सम्बन्धि पदा ने उण टेम रा प्रचलित कृष्ण भक्ति रा जुदा-जुदा सम्प्रदाया माय सू आखिर किण सम्प्रदाय सू जोड'र देखणो चाइजे।

मीरा र काल म कृष्ण भक्ति रा जित्ता भी सम्प्रदाय फैलियोडा हा उणा री दार्शनिक मान्यतावा इतरी न्यारी न्यारी ही के लक्ष्य एक होवता थका भी उणा माय मोकळो वैभिन्य हो। मीरां रे जीवन न उजागर करण आळी सामग्री सू इण बात रो इशारो मिळे है के उण ने कृष्ण भक्ति रा एकाधिक सम्प्रदाया रे जुदा-जुदा व्यक्तित्वां सू मिलण रो मोको मिलियो हो। आ बात भी आसानी सू थिरपीज सके है के मीरा रे आपरे टेम हीज उण रो नाव चारूकेर फैल चूको हो। इण वास्ते कृष्ण भक्ति रा न्यारा न्यारा सम्प्रदाया मांय इण बात री होड जरूर मची व्हैला के वे किणी तरासू

मीरा ने निज रे सम्प्रदाय मायने खीच लावे। इतिहास सू भी इण बात री गवाही मिळे है के मीरा रो वल्लभ सम्प्रदाय रा पुष्टिसम्प्रदाय, चैतन्य रा गौडीय सम्प्रदाय अर हितहरिवंश रा राधावल्लभ सम्प्रदाय रा अनुयायियां सू सम्पर्क हो।

**वल्लभ सम्प्रदाय अर मीरा**—वल्लभ सम्प्रदाय रा व्यवस्थापक महाप्रभु रा पुत्र विट्ठलाचार्य री छं छं द्वारका यात्रावा सायत उणा रे सम्प्रदाय ने बढावण री कोशिशा रे वास्ते हीज करीजी ही। आपरी इण यात्रावा रे माय वे खुद कदे ही मीरा सू मट कीनी ही के कोनी कीनी इण री जाणकारी कानी है। पण आ बात बिलकुल पक्की है के मीरा न लेयन विट्ठल अर उणा रा सम्प्रदाय रा दूजा लोगा स एक तरं री फास जरूर ही। इण बात री पुष्टि 'दा सौ बावन वैष्णवा की वार्ता रा मोकळा प्रसगा सू अर दूजा प्रमाणा सू हुवै है।

केह्यो जावे है के कृष्णदास (जिका के पुष्टिमाग रा खास आठ कविया री टोळी अष्टछाप माय सू एक हा) मेडता मायने मीरा सू सप्रयोजन भेंट कीनी ही अर एक तरा सू उणा मीरा ने अपमानित कर ने पाछा वृन्दावन फिरग्या हा। द्वारिका सू पाछा फिरती व्हैळा ए मीरा रे गाव गया हा अर उण री भेट करण री प्रार्थना न ठुकराय ने ब्रज पधारग्या हा। आ घटना मीरा रे वास्त वल्लभ सम्प्रदाय री नाराजगी न प्रक्ट करै। आ नाराजगी इण वास्ते उपजी ही के उण टेम मीरा आपरी ख्याति र चरम माथे ही अर वा कृष्ण भक्त होवता थका भी वल्लभ सम्प्रदाय र वास्ते उपेक्षा वरत रैही ही। मीरा रे जीवण री ऐडी हीज दूजी घटनावा भी इण हीज विचार न थिरपीजे है।

मीरा री एक सखि (जिण न कोई काई उण री रिश्तदार भी बताया करै है) अजबकुवरी बाई री हार्दिक इच्छा पुष्टिमाग मे दीक्षा ग्रहण करण री ही। पण इण मुजब मीरा सू बात करण सू उण ने प्रोत्साहन कोनी मिळिया। केह्यो जाव है के मीरा रे मना करण रे बावजूद वा आखिरकार पुष्टिमाग माय दीक्षा ले लीनी। दा सौ बावन वैष्णवी की वार्ता रे माय आ बात इण भात माडियोडी है के मीरा जद विटठलाचाय जी ने आपरी सौगात देय र पाछी फिरण लागी तो उणा इण री सौगात लेवण सू इनकार कर दीनो। उणा रो एक चेलो मीरा न समझायो के गुसाईंजी तो आपरे चेला सूं हीज सौगात लिया करै दूजा सूं कोनी लिया करै। उण टेम अजबकुवरी बाई मीरा सू केह्यो के थें केवा तो म्हे इणा री चेली बण जाऊ पण मीरा इण री हामी कोनी भरी। फेर भी इण घटना पछ अजबकुवरी बाई मीरा री राय नी मान र विट्ठलजी री चेली बणगी।

आ घटना दीसण मे भलाही साधारण सी लागे है पण आ मीरा री मनो भावनावा ने जरूर दरसावे है। एक तो आ घटना विटठल अर मीरा री भेंट री

पुष्टि करै है। दूमजी वल्लभ सम्प्रदाय रे वास्ते मीरा री अरूचि अर सम्प्रदाय रा अधिष्ठाता री मीरा रे वास्ते री ईसका भरी भावना ने भी सूचित करै है। इण रे वावजूद इण साच सू भी इनकार कोनी कियो जाय सकै है के वल्लभ सम्प्रदाय रै वास्ते मीरा रै मन माय एक तरे रो आकर्षण थो। दूयजी कनी इण सम्प्रदाय आळा भी उण नै आपरे कनी लुभावण रे वास्ते मोकळा प्रयास कर रेह्या हा। इण कारण इण सम्प्रदाय रो मीरा माथै सीधो के गुपुत-प्रभाव सू इन्कार कोनी कियो जाय सकै है।

वल्लभ रो पुष्टि मार्ग ईश्वर रे अनुग्रह रो आधार लेय नै जिण विशिष्टाद्वैतिक दार्शनिक सिद्धान्त रो निरूपण करै है उण नै व्यावहारिकता देअणआळा अष्टछाप रा कवि आपरा साहित्य मायने दाम्पत्य सबध री भक्ति माथै हीज मोकळो ध्यान दिरायो है। उणा श्रीमद्भागवत री कृष्ण कथा सू एक खास मौलिक उद्‌भावना करी है। कृष्ण री परम्परित कथा रे मायने भ्रमरगीत रा प्रसग ने इणा व्यवस्थित कथारूप वणाय दीनो। सूरदास जिको नूवीं परम्परा ने भ्रमरगीत रै रूप मे सरू कीनी उण माथे अष्टछाप रा मेंबा सूं छोटोडा कवि नददास तक आपरे ढग सू कलम चलाई। इणां कविया रा भ्रमरगीत साहित्यिक दृष्टि सू तो मोकळो महिमा राखै ही है इण रे साथै साथै उणा री आध्यात्मिक महिमा भी कम कोनी है। इण सू दो मुतलबा री सिद्धि हुवै है। पेलो मुतलब भक्ति रा अधिकारी नै नियत करण माय दीसै है। गोप्या नै प्रेम भावना री परम अधिष्ठात्री रे रूप माय थापित कर न आ प्रगग ईश्वर विषयक रति री पराकाष्ठा न दरसाया करै। समाज री सगली वर्जनावा – निषेधा - अवरोधां नै छेहै मेल'र गोप्यां कृष्ण रे साथे जिका प्रेम रो निभाव करै वो भक्ति रो आदर्श वण जावै अर दूयजा भगता रे वास्तै अनुकरणीय मारग प्रशस्त करतो दीसै है।

भ्रमरगीत सू सदारय हुवण आळी दूजी प्रयाजण सिद्धिया भी कम महिमा कोनी राखै है। इण बहाना सू सूर आदि भगत ज्ञान माथ भगती री, योग माथे भोग री अर निर्गुण माथे सगुण री जीत थापित करण माय समरथ रैया है। भ्रमरगीत रो कथारूप मूं कोरी मोरी साहित्यिक सुन्दरता ही कोनी राखै है मोकळी आध्यात्मिक अर दार्शनिक सिद्धियां भी अंगीकार करण मे समरथ दीसै है।

मीरा रे आराध्य रो निर्धारण करण रे वास्ते मैं इण वाना मनी आपरो ध्यान सीवणो चाहू जिण रे वास्ते ऊपरला मगला विषयातरा नै इण परचा माय समेटियो ग्यो है।

इतिहास भला ही इण बात न पूरी तरा सू प्रमाणित कोनी करतो व्हैला पण मीरा रा विचारां माय कठै ही इण सम्प्रदाय रो असर जरूर हो इण बात नै नकारणो

आसान कोनी है। अर एक बारू आपां जद इण तथ्य ने मान लेवा तो मीरा रा पदा री दिशा पछे बेडी कोनी रैय पावे जेडी की आज तई स्वीकारती रैयी है। अठे इण बात माथे ध्यान देवणो जरूरी है कि मीरां रे पदा मायने भ्रमरगीत री साफ साफ चर्चा तो कोनी है पण उणा मे भ्रमरगीत री मोटी रूपरेखा अवसकर वणती दीसे है। 'हो जी हरि कित गये नेह लगाय' सू सरुहोय'र भ्रमरगीत रा प्रसग स्फुट रूप मे इणा रा पदा मायने निजर आवता जावे।

(1) कृष्ण रो मथुरा जावणो दुख रो कारण बणे—

हो गए स्याम दुइज के चदा।
मधुवन जाय भये मधुबनिया हम पर डारे प्रेम को फदा।

(2) कुब्जा सू परपूठ ईर्ष्या—

'स्याम म्हासू ऐंडो डोले हो, औरन सू खेले धमार'

(3) अक्रूर रे वास्ते विरोध रो भाव—

'कठिन क्रूर अक्रूर आयो साजि रथ रथ कह नई'

(4) ऊधो सू बतलावण—

'अपणे करम को वो छे दोस काइ दीजे रे ऊधो'

(5) राधा रे वास्ते ऊधो द्वारा सनेस लावणो—

'कुण बाचे पाती विणा प्रभु कुण बाचे पाती
कागद ले उधोजी आयो कहा रह्या साथी।

(6) ऊधो रे ब्याज सू आत्म निवेदन—

'ऊधो मैं वैरागण हरि की'

भ्रमरगीत सू वल्लभ सम्प्रदाय रा भक्त पेला परकट कीनोडी जिकी सिद्धिया हासल कोनी है उणा माय सू पैयली सिद्धि गोपिया रे प्रेम रे आदर्श री बात है जिकी मीरा रे सदर्भ मे फालतू व्है जावे। *क्यू के प्रेम री मतवाली मीरा मे जेडो भाव* गाभीर्य अर राग सलग्नता है उण रे सामी गोपीया तो कई कोई भी भक्त कोनी टिक सके। गोपियां तो सायत आपरा जीवण मे कुटुम्ब कबीले री मरजादावां ने नारी रे शील ने चुनौतिया दीनी ही के कोनी दीनी इण रो ठा कोनी पण मीरा इण भावा ने आपरो जिनगाणी माय परतछ कीनो हो इण मे किण भी बात रो सन्देह कोनी व्है सके। इण खातर मीरा रे प्रेम भावना रो ऊडोपण गोपिया री प्रेम भावना सू मोकळो ऊडो, मोकळो भरोसमद अर मोकळो प्रामाणिक है इण मे सन्देह कोनी है।

भ्रमरगीत री दूसजी सिद्धी ने भी मीरा रे पदों सू जोड़'र देखणो जरूरी है। मीरा रे पदां सू भ्रमरगीत री जिकी रुपरेखा बणे है वा अधूरी होय'र भी उण कनी उणा रे रुझान ने अवसकर परगट करें। मीरां रा पद इण हिसाब सू मोकळा सवाल खड़ा करें। ज्ञान माथे भगति री जीत ने दरसावण री मीरा ने किणी तरें री जरूरत कोनी ही। क्यू के सरूपोत सू हीज वा भगति भाव माथे इणी दृढता सू टिकियोड़ी ही कें ज्ञान रे कनो झाकण तक री उण ने कोई जरूरत कोनी ही। पण योग माथे भोग री अर निर्गुण माथे सगुण री जीत दरसावण मे मीरा रे सामी मोकळी चुनौतियां अर रुकावटां ही।

मीरां अर योगमत—मीरा रा पद कृष्ण भक्ति सू हीज सागोपांग जुड़ियोड़ा कोनी है उणा में योगमत रो भी मोकळो उल्लेख है। जे एकर उण ने योगमत रो प्रभाव न भी माना तो भी जोगी रे वास्ते मीरा रा रुझान ने नकारयो कोनी जाय सके। उण री पदावली रे माय जोगिया सू प्रेम ने बताअण आळा जिका पद मिले है उणा ने लेय'र विद्वाना मे मोकळो मतभेद है। कोई कोई विद्वाना इण बाबत ओ मतो राखे है के ऐड़ा पद या तो बाद मे जोडीजिया है या फेर इणा रो कोई खास महत्व कोनी है। म्हने इण थिरपणा माथे भरोसो कोनी है। क्यूके जोगी सू जुडियोड़ा पद मीरा पदावली मायने इत्ता घणा है कें उणा ने आसानी सू नकारणो सोरो कोनी है। इण वास्ते जोगी सू जुडियोड़ा मीरा रा पदा री व्याख्या किण तरा सू की जावे ईं सवाल माथे विचार करनो जरूरी है।

इण पदा ने देख'र एक बात तो आहीज केही जाय सके के मीरा ने सांची मे किणी जोगी सू प्रेम हो। जेडो के इण पदा सू जाहिर हुवे है—

(1) 'जोगी मत जा मत जा मत जा' वाळा पद रे आखिर मायने 'जोत मे जोत मिला जा' केवणो।

(2) 'जोगिया के प्रीत किया दु:ख होई' वाळा पद मे ओ केवणो 'ऐसी सूरत या जग माही फेरि न देखी सोई'।

(3) 'जोगिया री प्रीतड़ी है दुखड़ा रो मूल' वाळा पद रे माय उण रो निरमोही भाव सू आवण री बात परगट करणो।

(4) कोई कोई पद तो ऐड़ा भी है जिणा में जोगी सू साफ साफ प्रीति री बात परगट हुई है अर पद रे अन्त मे उण ने प्रभु रा दरसण सू जोड़ण री बात भी परगट कोनो हुई है—

जोगिया निसदिन जोऊं बाट
पाव न चाले पथ दुहेलो आडा औघट घाट

नगर आई जोगी रम गया रे मो मन प्रीति न पाई
मैं भोली भोलापण कीन्हो राख्यौ नहिं बिलमाई
जोगिया कू जोवत वोही दिन बीता अजहूँ आयो नहिं
बिरह बुझावण अन्तरित आवो तपन लगी तन माहि
कै तो जोगी जग मे नाही, कैर बिसारी मोई
काई करू कित जाऊ री सजनी नैण गुमायो रोई
आरति तेरी अतरि मेरे, आवो अपणि जाणि
मीरा व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिन तलफत प्राणि।

कोई कोई विद्वाना जोगी री प्रिय या प्रियतम के रूप में अरथ कीनो है अर यू ऐडा पदा मे योगी रो अभिधार्थ हटाय ने उण ने प्रियतम रो पर्याय मानण रे वास्ते लक्षयार्थ प्रदान कीयो है।

तीजी तरा रा व्याख्याकार जोगी शब्द न भगवान श्रीकृष्ण रा विशेषण योगीराज सू जोड न उणा री व्याख्या कीनी है।

ऐ सगळी दृष्टिया किसी भ्रामक है या इणा माय सू किसी दृष्टि साच है इणा री परख करणी जरूरी है। पण दुर्भाग्य सू इण सवाला ने मोकळी तवज्जो कोनी दिरीजी है।

**मीरा रा पद अर नाथपन्थ**—मीरा रा जोगी विषयक पदा माय कोई कोई ऐडा भी है जिण माय योगिया रे साधना पदा रो प्रभाव भी निजर आवै है। सेली, सिंगी, सबडा आदि शब्दावली रे सागे सागे मोकळा पदा मायने उणा री साधना पद्धति रो उल्लेख इण बात ने पुष्ट करे है। जियां—

माळा मुदरा मेखळा रे बाला खप्पर लूगी
जोगिन होई जुग ढूढसू र म्हारा सावळिया रो साथ

योग साधना रो प्रभाव मीरा माथे औरू कारणा सू भी प्रमाणित कियो जाय सके है। हजारीप्रसाद द्विवेदी बजयानी सिद्धा ने देश रे बीचले हिस्से हूँ हट ने गाडहवाल राजावा री टेम सीमावर्ती प्रदेशा मायने फैलण री चरचा कीनी है। नाथपन्थ भी इणीज कारणा सूँ देश रा आयूणे सीमाडे माथे फैल गयो। इण पन्थ री एक पीठ अजे तई जोधपुर मे महामन्दिर मे स्थित है। म्हूँ कोनी जाणू के ओ पीठ कितरो जूनो है। पण मारवाड माय नाथा री चेष्टावा मीरा रे पेली सू देखणो किणी तर री आपत्ति खडी कोनी करे। मीरा रा पदा माथे योग रा प्रभाव नें इण कानी कीयोडा शोध रे आधार माथे आसानी सू खोजियो जाय सके है। इण सू मोकळा अणसुळझियोडा सवाला रो जबाब मिल सकेला इण मे की भी सन्देह कोनी है।

**मीरां अर रैंदास**—मीरा रा पदा मे निरगुण माथे सगुण रे जीत री बात साफ साफ कोनी मिले है। उण री जागा इणा रा पदा माय निरगुण रे वास्ते भी आस्था उणी भाव मू दीसे है जिण भाव मू सगुण रे वास्ते सामी आई है। इण री कारण मापत ओ हीज व्है सके के मीरा माथे पड़ियोड़ो सन्ता-योगिया रो प्रभाव उण नें भ्रमरगीत रे कथानक मे थापित निर्गुण माथे सगुण री जीत रा वरणन करण मू परे धकेलतो रैयो है।

मीरा री रैंदास मूं जुड़ाव री बात भी इण सू जुड़ियोड़ी है। मीरा रा पदा रे मायने सन्त रैंदास रा मिलण आळा नाम ने लेय'र भी विद्वाना मोकळा ऐतराज किया है। साफ है के कृष्ण भक्त मीरा रो सन्त मत आळा रैंदास सू समीकरण लोगा नें पसन्द कोनी आयो है। फेर भी ऐड़ा पदा रे कारण इण बात नें नकारणो भी आसान कोनी है। कृष्ण भक्ति री बात करता थका भी मीरा 'सहजसुन्न' अर 'पचरग चोला'री बात भी उत्ती ही आसानी सू कर जावे है—

(अ) 'चाला वा अगम देस, काळ देख्या डरा
भरा प्रेम रा हौज, हस केल्या करा।'

(ब) 'बरन करया अविनासी म्हारो, काळ ब्याल न खासी'

ऐडी ओळिया मीरा माथे सन्ता रा साफ साफ असर ने प्रमाणित किया करे। कृष्ण भक्ति ने चोखी तरऊ धारण करण वाळी मीरा रो ओ केवणो भी विचार करण जोग है 'दरद की मारी बन-बन डोलू बैद मिल्या नहि कोई' कृष्ण रो प्रेम कई इत्तो अपर्याप्त हो के उण ने सन्ता रे जियां ही आपरी मनोव्यथा ने इण तरा सू प्रकट करणो पड्यो। अस्तु, सन्तमत रो ओ प्रभाव मीरा सू दियोड़ो निरगुण-सगुण समीकरण रो सफल हेतु बण्यो है के उण रे उलटे भाव ने प्रस्तावित करे है इण कनी भी ध्यान देवणो जरूरी है।

**मीरा अर आल्वार सन्त**—सता रे सदर्भ म मीरा रे सागे उण रे जुड़ाव ने सन्ता रे विकास रे सागे भी जोड़'र देखणो जरूरी है। व्यावहारिक भक्ति रा मूळ आख्याता दक्षिण रा आल्वारा मायने भी भक्ति री वेडी ही उत्कट भावना दीसे है जेडी मीरा रे मायने है। आल्वार 'शरणागति' या 'प्रपत्ति' री जिण परम रूप री थिरपणा की ही उण ने पाछे रा कविया रे वास्ते आदर्श रै रूप मे देख्यो जाय सके है। मीरा रा साहित्य मायनें शरणागति रा सगळा तत्व उपस्थित देख्या जाय सके-

(1) अनुकूलता रो सकल्प—म्है तो लियो है गोविन्दो मोल
(2) प्रतिकूलता रो वर्जन—मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोय
(3) गोप्तृत्ववरण—थें तो पलक उघाड़ो दीनानाथ म्हे हाजर नाजर कद की खड़ी

(4) इतर वाता रो निषेध—पग घूघरू बाध मीरा नाची रे
(5) कार्पण्य भावना—मै तो सरण पड़ी रे रामा, ज्यू जाणे त्यू तार

मीरा री आ प्रपन्न भावना उण ने सीधो आल्वारा री परम्परा सू जोडे है। उण रो प्रेम भाव, मिलण री आतुरता, वेदना भाव, अकुलाहट तकरीबन वेडी ही दीसे है जेडी आल्वारा माय दीसिया करै। मीरा आल्वारा री उण परम्परा ने किया सुरक्षित राख सकी ही इण रो पतो लगावणो भी जरूरी है।

**मीरा अर गौडीय सम्प्रदाय**—वल्लभ सम्प्रदाय रे अलावा कृष्णभक्ति रा दूजा सम्प्रदाया रो भी मीरा माथे थोडो बहुत असर निजर आवे है। चैतन्य महाप्रभु रा गौडीय सम्प्रदाय रा शास्त्रीय आख्याता रूप गोस्वामी अर सनातन गोस्वामी बन्धुवा सू भी शायद मीरा री भेंट हुई व्है सके। इणा रो भतीजो जीव गोस्वामी रो पुरषपणे रो घमण्ड तो मीरा हीज तोडियो हो। इण रो 'त्रियामुख न देखण रो प्रण' मीरा हीज छुडायो हो। इण घटना सू गौडीय सम्प्रदाय रे वास्ते मीरा रा भुकाव ने देखियो जाय सके। जद इण भुकाव ने स्वीकारलां तद उणरा प्रभावा न भी देखणो जरूरी व्है जावे। रूप गोस्वामी री पोथी 'भक्ति रसामृत सिन्धु' ने भक्ति रो आधार ग्रन्थ केयो जाय सके। उण मांय भक्ति री शास्त्रीय व्याख्या जित्ता विस्तार अर प्रामाणिकता सू हुई है उत्ती नारद या शाण्डिल्य रा भक्तिसूत्रां मांयन भी कोनी हुई है। पण 'भक्तिरसामृत सिन्धु' रो स्वर वैष्णव भक्ति परम्परा सू थोडो भिन्न है। भक्ति ने ओ सुलभ-सरल कोनी मान'र दुरलभ माने है। उणरी दुरलभता हीज भक्ति री कठिनाईयां रो हेतु है। मीरा रा पदा ने गौडीय मत रे सिद्धान्तां माय ढाळ'र उण री ईश्वर री परिकल्पना न निर्धारित करणो अजे तई बाकी है। गौडीय सम्प्रदाय रे मायने मधुरा भक्ति रो जिको स्वरूप है उण रो मीरां माथे मोकळो असर पडियो हो। चैतन्य महाप्रभु मे जिकी तन्मयता प्रेमानुभूति री जेडी उद्वेलित दसावा दीसे है अर 'नवधाभक्ति' मांय सू सिरफ कीर्तन ने स्वीकारण री जिकी भावना है उण नें मीरा रा पदा मायने भी उत्ते हीज ऊडेपण सू उपस्थित देखियो जाय सके। इणी भात मीरां अर चैतन्य दोनऊ माय एक अद्भुत समानता भी देखी जाय सके है। चैतन्य री नृत्य अर कीर्तन री प्रवृत्ति सू जुडाव मीरा मे मोकळी आस्था सू उपस्थित देखिया जाय सके है। 'पग घुघरू बाध मीरा नाची रे' रूप मे मीरा रो नृत्य रे खास्ते खास भुकाव उण ने चैतन्य री भक्ति शैली सूं जोड देवे। चैतन्य महाप्रभु री भक्ति भावना सू मीरा री भक्ति भावना रो आ जुडाव री बात महाप्रभु वल्लभाचार्य री 'पुष्टि तदनुग्रह' री शैली सू सामी आतरे है। इण वास्ते चैतन्य अर वल्लभ दोनो री विचारधारा री मीरा रा पदा मांय हाजिरी एक अणसुलभियोडा सवाल है जिको मे की जबाब री उडीक करे है।

**मीरां अर हितहरिवश**—इण भात हीज राधावल्लभ सम्प्रदाय रा प्रवर्तक हितहरिवश सू भी मीरा री भेंट रा प्रमाण मिले है। केह्यो आवे है के वे खुद मेडते आय ने मीरा रा मेहमान बण्या हा। हितहरिवश रो राधा-भाव उण टेम रा दूयजा कृष्ण भक्त सम्प्रदाया सू अलग-थलग ही हो। मीरा तो खुद औरत ही, राधा जीमी ही पीडित अर कृष्ण माथे रीभियोडी। इण कारण मीरा रे वास्ते हितहरिवश रे राधा-भाव ने स्वीकारणो मुश्किल कोनी हो। मीरा तो एक ठोड खुद नें लारला जनम री राधा तक बतलायो है-'रास पूणो जणमिया री राधा का अवतार।' मीरा पदावली रे माय राधा रो घणो उल्लेख तो कोनी है फेर भी वो आयो तो है हीज। जिया—

(1) आवत देखी किसन मुरारी छिप गई राधा प्यारी

(2) ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, सुणजे किसन मुरारी

(3) राधा प्यारी दे डारी जु बशी मोरी

(4) झूलत राधा सग गिरधर झूलत राधा सग।

पण मीरा पदावली री राधा वल्लभ सम्प्रदाय री राधा ज्यू 'प्रोषितपतिका' कोनी है। मीरा री राधा दरअसल कृष्ण रे सागे झूलो झूळण वाळी या कृष्ण री मुरली नें हथियाय ने उणा नें खिजावण आळी राधा है। वा कृष्ण रा विरह मे झूरती रैवण वाळी राधा कोनी है। वा उपेक्षिता नायिका नी व्हैयर प्रेमतृप्ता प्रगल्भा नायिका री बाणगी देवती दीसे है। इण वास्ते मीरा री राधा परिकल्पना हित-हरिवश री राधा भावना सू कितरी समता या विषमता राखे है इण ने देखणो भी जरूरी है। वमू के इण सू उण री भक्ति री न्यास दिसा तय की जाय सकेला।

**मीरा अर गीतगोविन्द री परम्परा**—कृष्ण भक्ति री एक गैर शास्त्रीय परम्परा भी चालू रैयी ही। जयदेव रा 'गीत गोविन्द' सू चालती आवती आ परम्परा माधुर्य भाव री भक्ति रो चरम निदर्शन है। इण मे राधा अर कृष्ण रे रति रा परम सौंदर्य सू भरयोडा भात भात रा चित्र आंकियाडा है। यू तो 'गीत गोविन्द' कृष्ण भक्ति रा सगळा सम्प्रदाया नें थोडो घणो प्रभावित कियो है। पण उण री मुतन्तर परम्परा भी आगे तई चालती रैयी है। जयदेव रे पछे चण्डीदास अर हिन्दी मे विद्यापति उणन आगे बढायो। कृष्ण रो ओ लोकरजन पक्ष अर उण रो सौंदर्य शास्त्रीय रूप मीरा माथे भी असर डाळ सक्यो के कोनी डाळ सक्यो ओ भी विचार-णीय है। कैह्या जावे है के मीरा खुद भी गीत गोविन्द रच्यो हो पण विद्वाना उण न नकली रचना माने है। पण मीरा रा पदा माय कृष्ण री रूप माधुरी रो सौंदर्य, कृष्ण री बक्ट छवि मायने अटकियोडी मीरा री आस्था, कृष्ण रा सौदर्य ने 'निरख म्हारो मनडो फस्या,' कृष्ण री रूपमाधुरी रे 'अग अग मीरा बलि जाई' वाळा सारा

प्रमग सयोग शृगार री सगळी सोभा अर विप्रलभ री सगळी आतुरता ने मीरा जि
रूप में वर्णित कियो है वो थो प्रमाणित करे है के मीरां कृष्णभक्ति री गैर शास्त्री
परम्परा ने भी निभायो हो। इण री जाच भी अजे तई बाकी है।

अस्तु, मीरा री ईश्वर परिकल्पना रा माचे रूप री खोज बहुत जरूरी है
ऊपरला विवेचन सू आ बात आसानी सू समझी जाय सके है के स्थूल आधा
सू निसरण वाळी बाता रे आधार माथे उण रा आराध्य रो निरधारण कर ने उण
हीज साच मानतो जावणो कित्तरो भ्रामक व्है सके। इण वास्ते मीरा रे साहित्य
जुडियोडा ऐ सगळा अणसुळझियोडा सवाला रे रूप मे मै इतरा बिन्दुओ ने आ
विद्वाना रे सामी पेश करणो चाहू हू —

(1) मीरा रा पदां रे क्रम रो चोखी तरऊ निर्धारण किया बिना उण माथे जुदा-जु
स्रोतां सू पडियोडा प्रभावा री जाच करतो जावणो कित्तो उचित है? उ
रे जीवण मे काव्य चेतना री सरूआत हुवण सू लेयने जीवण री खास खा
घटनावा रे आधार माथे उण रा पदा री व्यवस्था करणो जरूरी है।

(2) एक औरत रे रूप मे मीरा रा विद्रोह ने इतिहास री घटनावा रे परिप्रेक्ष्य
देखण री जागा उण रे युग रा सामाजिक साचा, समाजशास्त्रीय मान्यतावा
आधारा माथे देखण परखण री भी अपेक्षा है।

(3) मीरा री ईश्वर परिकल्पना री खोज रे वास्ते उण रे साहित्य मे मिलण वाळा
इत्ता समीकरणा रे खास उत्सा ने ढूढणो जरूरी है।

(क) महाप्रभु वल्लभाचार्य रे पुष्टिमार्ग रा सिद्धान्ता सू, चैतन्य मत री
भक्ति सम्बन्धी मान्यतावा सू अर हितहरिवंश रे साम्प्रदायिक विचारा
सू मीरा रे पदा सू तालमेल बैठावणो अर उण री भक्ति री मूळ चेतना
न खोज निकाळणो।

(ख) कृष्ण भक्ति से आगे नाथपन्थ री योग भावना अर ज्ञानमार्गी सन्ता
री भक्ति अर साधना पद्धति सू मीरा रे पदा रो तालमेल बैठावणो।

(ग) कृष्ण भक्ति रा शास्त्रीय स्वरूप वाळा सम्प्रदाया री मान्यतावा रे साथे
मीरा री पदावली रो गीत गोविन्द री शुद्ध शृगार वाळी परम्परा रो
तालमेल बैठावणो।

(4) भारत री सामाजिक दशावा रे मायने नारी री दशा अर मीरा रे व्यक्तित्व रो
तालमेल बतलावणो। सास्कृति री रूढ निजरा अर मीरा री भक्ति चेतना रे
बिचाळे तालमेल बिठावण री कोशिश करणो।

□

(राजस्थानी अकादमी सारू पढियोडो परचो)

# गांव रे जीवन रा चितेरा : रवीन्द्र नाथ ठाकुर

रवीन्द्र नाथ ठाकुर भारत री आत्मा रा पूठरा चितेरा रचनाकार हा। उणा री कलम सू उकेरियोडो देश री माटी रो कण कण मन भावते उजास सू वेणी रचनावा मे जगमगाय रैयो है। धरती री मोकळी आस्थावा अर गाव री माटी री महक सू उणा रो साहित्य सागोपाग भीजियोडो है। कवि, लेखक, सगीतकार, चित्रकार रे रूप मे जठीने भी इणा री प्रतिभा आगे पावडा भरिया है उण मे कल्पना माथे टिकियोडी सपनीली रहस्यात्मकता रै सागे सागे जमी रो कोड अर उण रो *यथार्थ साकार* हूवतो दीसे है। आदर्शा रो धणीं ओ रचनाकार भारत रे गावां मे रेवणवाळी आत्मा ने खुद पिछाण ने लोगा सू उण री सौदर्य सू रळियोडी पिछांण करावण सारू कोशिश करतो रैयो।

जमीदार रे परिवार मे जलम लेवण रे कारण इणा ने जादातर नगरा रे जीवण रो हीज *अनुभव मिळियो*। पण इण कारण टेगौर रो सौंदर्यचेता मन वधियोडो कोनी रैयो। गांव मे हीज भारत री साची जिनगाणी है अर गाव ने छोड न दूजी ठौड़ भारत रा साचा दरसन को हूय सके इण बात ने सागी तरा सू पिछाण ने वे हरमेस गाव रा दरसण सारू छटपटावता रेवता। गावा रे वास्ते आपरै रूझाण न टेगौर खुद यू वरणित कियो है— "मै गाव री जिनगाणी ने मोकळी बारीकी सू दरसण री इच्छा राखतो हो। म्हारी आ कर्त्तव्य भावना म्हने नदिया, नहरा अर दूजा जल मारगा सू म्हने दूर दूर रा हिस्सावा मनी लेयगी। इण सू म्हने जिनगाणी ने एक बदलियोडा दृष्टिकोण सू देखण रो मौको मिळियो। गाव रा भाया री दिनचरया अर उणा रा कामकाजा रो बदळियोडी दिसावां ने देख'र म्हारो हिवडो ताज्जुब सू भरग्यो। नगर रे माय पालीजियोडो होवतां थका भी मै गावां रे सौदर्य रे बिचाळे खुद ने लेयग्यो अर उणा रा आकर्पणा सू खुद ने सांगोपाग भर लियो।"

गाव री जिनगाणी सू टेगौर री आ पिछाण उणा री रचनावा री नूवी दिसा बणगी। हालांकि टेगोर रहस्यवाद अर प्रकृति रे पूठरे सिणगार रो चितेरो कवि हो पण गावा रा लोगा री अभावा अर कष्टां रे मांय भी मस्ती अर विश्वास सू रिळिमिळियोडी निराळी जिनगाणी ने देख ने उणा रो हिवडो पछतावे सू भरग्यो। उणा ने लागियो के जाणे वे मिनख-मिनख रे बिचाळे रा इण आतरापण ने देख'र

भी अणदेखणो करतो रेह्यो है। उणा ने लागियां के वे जमीदारी री सगळी सुविधावा ने भोग ने जाणे आपरी हीज माटीवाळा गावावाळा माथे अत्याचार कर रेह्या है। टेगौर री आ पछतावे री भावना उणा रे साहित्य री नूवी प्रेरणा बणगी। इण बात ने वे खुद इण मुजब स्वीकारियो है—"होळे होळे गाव रा लोगा री गरीबी अर बेचारगी म्हारे सामी सजीव हुयगी। मैं विचार करण लागग्यो के उणा रे वास्ते म्हने की न की कोशिश करणी चाईजे। जदे म्हने आ बात मोकळी सरमावण लागगी के म्हे एक जमीदार हू जिको के कोरा-मोरा आर्थिक उद्देश्या सू प्रेरणा लेवतो हो अर टेक्स उगावण माय लाग्योडो हो। जदे आ बात मैं अनुभव कर लीवी उण रे पछे मैं गाव वाळा लोगा रे भी मना मे आ चेतना भरणी सुरू कर दी के उणा ने आपरी जिम्मेदारिया खुद रे काधा माथे लेवण लाग जावणो चाइजे।"

इण अनुभव रे पाछे उणा रे मन मे आ बात थिर हुयगी के नगर री सुविधावा भोगण आळा लोगा ने गाव रा भोळा-भाळा मिनखा रो शोषण करण रो कोई हक कोनी है। उणा रा साहित्य मे भी इण चेतना रा जीवता दरसण हुवे है। जाणे टेगौर गाव री आत्मा सू रूबरू सामेळो करण री कोशिश सुरू कर दीवी।

उणा री मोकळी कवितावा भारत रे गावा रा दुख दरद ने सामी लावे। इण कवितावा मे उणा री लेखनी आपरा रहस्यवादी तिलिस्म ने चोखी तरा सू तोड न सामी आई है। धरम सू पीडित हूवण आळा बूढा भारत री रीत्या री साकळा माथ अर परम्परावा री जडता माथे चोट करता वे 'प्रेतात्मा' कविता माय केह्यो है—'देश रे चारउफेर जेळ री भीता तणगी। कोई का जाणतो क इण अणदीठती भीता सू पार किया पायो जाय सके। उणा रा भगवान मन्दिरा मे निवास कोनी करे। गावा म जठे लकडहारो लकडी चीरे है किसान जठे हळ बावे है उठे म्हारा भगवान बस है।' इणी भात 'ए बार फिराओ मोरे' कविता मे किसाना री जुझारू भावना ने बतलावता वे केह्यो है—'इण कुम्हलायोडा मुखा ने भापा देवणी पडेला, अे थाक्योडा, सूखा, टूट्योडा हिवडावा माय आशा गुजावणी पडेली। इणा ने तेवडो देय न केवणो पडेला के अरे या लोगा एक बार तो माथो उचो कर ने खडा हूय जावो तो थे देख सकोला के जिण लोगा सू थे डर रेह्या हो वे तो खुद थासू भी मोकळा डरपोक है। थारे खडा व्हैवतई वे भाग जावला। रस्ता रा कूकरा ज्यू डर ने गायब हूय जावेला। क्यू के वे तो बस मूडा सू हीज उची ऊची बाता छाटे है खुद रे हिवडा म वे आपरी कमजोरी पिछाणे है'।

टेगौर री कथा साहित्य भी गाव री जीवण दसावा न समेट ने सामी आयो है। माटा तौर सू उणा री कहाणिया ने चार भागां माय बाट'र देखियो जाया करै है। इणा में सँगा सूँ ज्यादा कहाणिया उण वरग री है जिण माय गाव रे जीवण ने कथा रा विषय बणायो गयो है। इण कहाणिया री रचती वेळा टेगौर जमीदारी रे

रख रखवाळ रे खातिर गावा म घणी दिना तई रैंह्या हा। इण कारण उणा ने गवां रा जीवण ने नेडे सू देखण रो मौको मिळियो हो। 'पोस्ट मास्टर', 'मेघ ओ रौद्र', 'नष्टनीड', 'प्राणरक्षा', 'कर्मफल', 'कंकाल', 'क्षुधित पाषाण', 'निशीथे' आदि कथावां गावों री जिनगाणी रे यथार्थ माथे हीज निरमित हुयोड़ी है। इणी भांत रा चितराम अर चरित्र रवीन्द्रनाथ रा नाटकां में भी मोकळा निजर आवे है।

इणा रा साहित्य मे गावा रा चितराम कोरी मोरी साहित्य री रचना प्रेरणावां हीज बण'र कोनी रेंगगी है। गांवा री दसावा रे सुधार रो रचनात्मक नजारो भी इणा रे साहित्य में निजर आवे है। गावा री इकसार जिनगाणी री एकरसता ने तोड ने उण ने गति दिरावण सारू टैगोर आपरी रचनावा मे जिण आदर्श ने थिरपियो है उणा मे महात्मा गाधी रे प्रयासां जेड़ी गरिमा निजर आवे है। गाव रा सामाजिक जीवण रा उत्थान सारू टैगोर रो दृष्टिकोण स्वस्थ समाज रे थापना री कोशिश करतो दीसे है। वे आपरी रचनावां मे गांवा रे पुनर्निर्माण री बात ने मोकळी बुलदगी सू उठाई है। "समाज अर छूआछूत" जेड़ा निबन्ध इण भात री सामाजिक बुराईया माथे सीधो सीधो आक्रमण करें है।

गावा री आर्थिक उन्नति रे वास्ते टैगोर शिक्षा रा साचा आदर्शा ने प्रोत्साहन दियो है। इणा री रचनावा मे मशीन रो स्वागत तो करीजियो है पण अे मिनख माथे मशीन रा अधिकारा न पसन्द कोनी करता। गांवा रे सामुदायिक उन्नती री जिण बाता री आजकल मोकळी चरचा की जावे है उण ने टैगोर आपरी रचनावा मे पूर तालद सू परक्ट करता रैंह्या है। सहकारी आन्दोलन रे विकास रे खातिर वे मोकळा तर्क दिया है। उणां री आ मानता ही के सहकारी आन्दोलन सू हीज भारत रा सुरुपोत रा सामाजिक जीवण मे ग्रामीण समाज रा समाजिक उत्तरदायित्व री थिरपणा हूय सकी ही। इण वास्ते टैगोर री आ मानता ही के देश रा सगळा विकास रे वास्ते गाव माथे टिकियोडी अर्थ व्यवस्था हीज उपयोगी हूय सके है। सामाजिक न्याव खातिर उणा आपरी आवाज पूरी बुलदगी सू उठाई। आ आर्थिक भेदभावा न हटाय न साचा सामाजिक हित रो विधाण करण आळी ग्रामीण चेतना इणा री रचनावां में पूठरी गरिमा सू सामी आई।

टैगोर रो साहित्य साचे अरथा मे भारत री आत्मा रो साहित्य हा। वे उणरी धड़कन ने गाव री जमी रा कण कण सू सुणन री चेष्टा की ही। इण कारण हीज उण रो साहित्य अमर है अर उणरा भारतीयता री साची आस्था रा आदर्श भी गावा सू जुड़ाव रे कारण जुगा जुगा तई अमर रेंवेला।

□

[(आकाशवाणी सूं प्रसारित)

# 'वेलि' रो वस्तु सौंदर्य : एक पुनर्मूल्यांकन

'वेलि' रे कथानक रे सौंदर्य सू सम्बन्धित म्हारी बात शुरूकरण सू पेली मै आप रो ध्यान इण बात कनी खीचणो चाहू हू के साहित्य रे मायने जदे भी एक रचना रो सागोपाग मूल्याकन होय ने उणरी सगळी विशेषतावा सामी आ जावे पछे उणरो पुनर्मूल्याकन करण री क्यू जरूरत पडे ? पेलड़ा मूल्याकन री सारी स्थापनावा ने छोड़ ने जदे उण रा पुनर्मूल्यांकन री बात उठाई जावे तो वेडा प्रयासा री सार्थकता कई है ? ज्यादा समझावण ने वास्ते ओ कह्यो जाय सके के पुनर्मल्याकन रो प्रयोजन कई है ? कई नई दृष्टि रो नाम पुनर्मूल्यांकन है ? के स्थापित विचारा रो विरोध करण रो नाम पुनर्मूल्याकन है ? के वे प्रतिमान जिका के युग रे बदळण रे सागे सामी आवे वेणे आधारां सू कियोडी समीक्षा रो नाम पुनर्मूल्याकन है ? ऐ कुछ मुद्दा है जिका के सेंगाऊ पेली सामी आवे।

ऐ सारा सवाला ने ध्यान मे राख ने जद आपा विचार करा तो शुरू मे हीज आ बात चोखी तराऊ साफ हुय जावे के साचे अरथा मे पुनर्मूल्याकन पेली कियोडी चेष्टावा रो विरोधी कोनी हुया करै बल्कि उण री जगा ऐडा प्रयासा ने पूरक री सज्ञा दी जा सके है। क्यूके जद आपा कोई रचना रो मूल्याकन किया करा तो उण टेम आपा रे साम्हे वोरी पोथी हीज रैह्या करे। उणरी अच्छाइया ने ढूढ निकाळण रे वास्ते आपा ने खुद ने कोशिश करणी पडे। इण वास्ते ई बात री घणी सम्भावना है के वी टेम आपाणी पूर्वधारणावा आडी आय जावे। आपांणी परपरानुगतता या विचारा री प्रतिबद्धतावा आपाणी दृष्टि रे माथे इत्ती हावी हुय सके के उणरे रग रे कारण आपां कृति सू न्याय करण री जागा आपाणी खुद री स्थापनावा रे प्रति घणा सचेत हुय जावा। अगर आ बात साच हु जावे तो पछे इण दोष रे कारण पेळडा मूल्याकन मे सांगोपाग दृष्टि रो फैलाव कोनी होय सकै। इणी तरऊ आ बात भी ध्यान मे राखणी जरूरी है के समय रे बदळ जावण सू लोगा रे सोचण विचारण मे भी अन्तर आ जाया करै। इण कारण नूवे युग रा लोगा ने कोई बात सिरफ इण वास्ते हीज चोखी कोनी लागे के वा पेलडा लोगा ने घणी पसन्द ही। मूल्याकन रा जिका आयाम एक खास टेम मे घणा पसन्द किया जावे वे हीज युग बदळण रे सागे सागे पुराणा पड ने बासी, बोदा व्हेय जावे। पैमाना रे दोष सू पण कृति ने दोषी कोनी कह्यो जाय सके। इण वास्ते पुनर्मूल्याकन कर ने आपा पेलडा प्रयासा री पूर्ति कर देवा

अर कृति रा साहित्यिक महत्व एक बार पाछो सबारे सामी खेंच लावा । इणही तरऊ नूवोडी दिशावां ने चालणा म लावण रे खातिर ओ जरूरी है के आपा समीक्षा रा जिका नूवोडा प्रतिमान निर्धारित हुया है उणा ने ध्यान मे राख न जूनोडी पोथिया री विशेषतावां बतावा । इण वास्ते मूल्याकन कियोडो होवता थका भी पुनर्मूल्याकन री जरूरत पड़े । ए बाता न ध्यान मे राख ने म्हैं आज आप लोगा रे सामने 'बेलि' रे वस्तु तत्व रो पुनर्मूल्यांकन करण री चेष्टा कर रह्यो हूँ ।

**'बेली' री वस्तु री तात्पर्य निर्णय**—आपरी रचना लिखण सू पेला हर कवि उण री कथा रो एक न एक तात्पर्य अवसकर तै कर लेवे । पण काव्य री शर्ता रे कारण वो बेने स्थूल रूप म प्रकट कोनी कर सके । कविता री सुन्दरता वो रे चमत्कार अर रसवादिता सू तय हुवे । पण वेणा कोरा कोरा नाम गिणा देवण सू उण री सारी महिमा खतम हुय जावे अर कवि री सारी मेहनत बेकार व्हेय जावे । सजग कवि इण वस्ते रचना रो तात्पर्यार्थ ने अप्रत्यक्ष ढग सू कथा रे मायने मिला दिया करे। ऊपरली निजर सू देखण सू पाठक बा ने कोनी पकड पावे पण आलोचक सू वस्तु रो तात्पर्य छानो कोनी रैय सके ।

बेलि' रे कथानक री विशषतावा रे पुनर्मूल्याकन रे वास्ते आ जरूरी है के सगाऊ पेली ई बात रो निर्णय हा जावणा चाहीजे के रचना निर्माण रे लारे कवि रो मूल तात्पर्य कई हो ? 'बेलि' न भक्ति या शृगार प्रधान रचना कही जावे है पण म्हारी समझ म अे बाता तो कथा रा मोटा मोटा आधार है न के रचना रो तात्पर्य । इण भेद न पिछाणिया बिना आपा पृथ्वीराज री वस्तु विन्यास कला ने पिछाण कोनी सका । इण वास्ते आपा न थाडी देर तई कृति माथे सू ध्यान हटाय ने खुद कवि कनी ध्यान देवणो पडेला ।

पृथ्वीराज अगर शुद्ध शृगारिक रचना लिखणी चावतो तो इणरो सबध उणरे खुद रे जीवन सू जरूर होवतो । पण आ बात उण रे खुदरे व्यक्तित्व अर उणरी राजनैतिक स्थिति मू मेल कोनी खावे । आ बात तो सब जणा जाणे है के कवि एक बहुत बडो योद्धा हो । खुद अकबर ई री वीरता सू प्रभावित हो । नरोत्तमदासजी तो ई कवि रे वास्ते इत्तो तक क बतायो है के पृथ्वीराज अकबर रे दरबार रा नवरत्ना मे सू एक हो । बेणा हीज शब्दा म -'पृथ्वीराज री प्रतिभा सू सम्राट अकबर उणा कनी आकर्षित हुया अर बो उणा रे सागे रैवण लागग्यो । सम्राट रा दरबारिया माय पृथ्वीराज रो बडो आदर हो । अकबरी दरबार रा नौ रत्ना म एक पृथ्वीराज भी हो । सम्राट उण ने बहुत चावतो हो । उण रो कह्योडो निम्नलिखित दोहो प्रसिद्ध ह

पीथल सो मजलिस गयी, तानसेन सो राग।
रीझ बोल हस खेलबो गयो बीरबळ साथ।।

आ बात अगर साची है तो इण सू ओ प्रश्न खडो कियो जाय सके के पृथ्वीराज ने अकबर आखिर इत्तो सम्मान क्यू दियो। अकबर रे नौ रत्ना मे जिका जिका लोगा री चर्चा आवे वंणे आधार सू अगर पृथ्वीराज ने देखां तो उण ने ऐडी गरिमा सू मडित करण आळो एक ही आधार निजर आवे अर वो है पृथ्वीराज रा स्वाभिमान। इण सबध मे टेसीटरी साफ साफ केह्यो है के—'पृथ्वीराज पराक्रम अर अदम्य स्वाभिमान रा घणा प्रशसक हा ने दैन्य गुलामी अर नैतिक पतन रा कट्टर दुश्मन हा। जिण आदतण उदारता सू वे दोस्त या दुश्मन री आपरे काव्य मे तारीफ कर सकता हा उणी सच्चाई सू वे खुदरा भाई बीकानेर रा राजा री ही नही, खुद अकबर तक री भी, कोई ओछी हरकत ने देख न, तीखी आलोचना कर सकता हा।"

इणी तरऊ पृथ्वीराज रे व्यक्तित्व मे जातीय गौरव अर देशाभिमान रो भाव कित्तो गहरो हो जिण रो प्रमाण राणा प्रताप रो वो पत्र है जिको के अकबर बादशाह रा खुद पृथ्वीराज ने दिखळायो हो। बादशाह रो ओ व्यवहार ईं बात ने सिद्ध करण रे वास्ते घणो है कि वो पृथ्वीराज री वीरता, तेजस्विता, अर स्वाभिमान रा जाणकार हो। वो इण रूप म हीज पृथ्वीराज रा व्यक्तित्व री पिछाण भी करतो हो। इण रो एक और प्रमाण कर्नलटाड रो ओ विवादास्पद कथन है के पृथ्वीराज दरअसल स्वाभिमानी राजपूत हो। वो अकबर री अधीनता कोनी मानी। इण वास्त बादशाह उण ने बन्दी बणाय ने आपरे अठे राखतो। जद प्रताप रो पत्र बादशाह न मिळियो तो वो पृथ्वीराज रो गर्व तोडन री, खातिर हीज वा चिट्ठी उण ने दिखळावी ही। श्री भूपतिराम साकरिया टोड रा ईं कथन ने इण तरऊ बतलायो है के—'प्रताप रा उण पत्र ने बादशाह पृथ्वीराज नाम रो श्रेष्ट राजपूत सरदार न दिखळायो। पृथ्वीराज बीकानेर रे राजा रो छाटो भाई थो अर वो इण दिनो म अकबर बादशाह रे अठे कंदी थो। उण रे कंदी हूवण रो कारण ओ थो के उण म मोक्ळो राजपूतो स्वाभिमान थो। दूजा राजावा री तरं वो अकबर री अधीनता स्वीकार करण खातिर तंयार कोनी थो। इण वास्ते कंद कियो गयो थो अर बन्दी अवस्था म वो बादशाह रे अठे जीवन व्यतीत कर रह्यो थो।"

ऊपर रा विवेचन सू ओ निष्कर्ष निकळे है के पृथ्वीराज न केवल एक बडो योद्धा हो बल्के घोर स्वाभिमानी अर जातीय गौरव नं राखण आळो आदमी हो। अर आ बात आपा सब अच्छी तरं सू जाणा हा के जीवन मे हर आदमी रा खुद रा की न की जीवन मूल्या हुया करे है। हर आदमी वे मूल्या रे वास्ते खुद ने समर्पित कर देवं पण किणी भी तरे रो समझौतो करणो पसन्द कोनी करं। पृथ्वीराज जेडा

आदमी सूं तो ई बात री हरगिज अपेक्षा कोनी की जाय सके के व जीवन रे किसा भी क्षेत्र मे स्थितिया रे सामने या थोडा सा फायदा रे वास्ते या समाज मे नाम मिलण री खातिर किणी भी तरे रो समझौतो कर लेवे। पृथ्वीराज ऐडा व्यक्तित्व रो धणी हो तो ऊरे ई व्यक्तित्व रे करडे पणे रो असर उणा री रचना माथे भी पड्या बिना कीकर रैय सक्यो व्हैला।

ई बात ने 'बेलि' रै तात्पर्य निर्णय रे वास्ते अगर घटित कर ने देखा तो इण रा वस्तु मे शृ गार भावना रो निरूपण कृति रो चरम उद्देश्य कोनी ठहरीजे। इण रा शृगार वरणन ने तो प्रसगानुरूप उदित होवण आळी दशा या स्थिति रे रूप मे हीज देखी जा सके। अर्थात् पेली महत्वपूर्ण बात तो आ है के पृथ्वीराज जेडा व्यक्ति सू जिको के वीरता, तेजस्विता ने स्वाभिमान ने जीवन रा चरम मूल्या रे रूप मे धारण करतो हो, आ अपेक्षा कोनी की जाय सके है के वो रसिक जणा रे मनोविनोद रे वास्ते कोरी शृगारिक रचना लिख सके। दूजी आ बात भी ध्यान मे राखणी जरूरी है के आपरा जीवन काळ मे कवि एव श्रेष्ठ शृगार कवि रे रूप मे थापित नही हो बल्कि आपरे व्यक्तित्व रे अनुरूप हीज वो ओजस्वी वाणी रो महत्वपूर्ण कवि रे रूप मे गिणीजतो हो। ई बात रे वास्ते एक बार फेर कर्नल टाड रो कथन ध्यान मे राखणो जरूरी है के 'पश्चिमी देशा रा राजावा री भात पृथ्वीराज आपरे समे रा राजावा मे श्रेष्ठतम वीर हो जिको के आपरी ओजस्वी काव्य शक्ति सू लोगां मे प्राण फूक सकतो ने वक्त माथे लडाई रा मैदान मे खुद रा शौर्य रो भी परिचय दे सकतो हो। उण टेम रा चारण कविया रा समुदाय मे वो राठौड वीर सबसू ज्यादा प्रशसा रो भागीदार हो। (साकरिया-पृष्ठ 23) टोड तो पृथ्वीराज री कविता री शक्ति ने दस दस हजार घोडा री ताकत रे बरोबर बतळायो है।

ऐ सगळी बाता ई राठौड कवि री कविता ने तेजस्विता अर शौर्य भावा रा प्रदर्शन करण वाळी कविता रे रूप मे स्थापित करे ने कोरा मोरा शृगार ने हीज पूरी तराऊ प्रकट करण आळा कवि रे रूप मे नही। अठे आप लोगा रे मन मे ओ प्रश्न खडो हूय सके के तो पाछे 'बेली' मे शृगार ने इत्तो विस्तार सू वर्णित करण री कई आवश्यकता ही ? इण प्रश्न री चर्चा आगे 'बेली' रे काव्यरूप रे अन्तर्गत कियोडी है। अठे तो ओ हीज कह देवणो पर्याप्त है के शृगार भावना वस्तु रो तात्पर्य निर्धारण नही करे है बल्के आ तो 'बेली' रे रूपक रे कारण, चरित्र नायक कृष्ण रा स्थापित व्यक्तित्व रे व्याज सू अर कृष्णकाव्या री परम्परा रे व्याज सू ग्रन्थ मे प्रस्थापित हुई है, वस्तु रे चरम लक्ष्य रे रूप मे वर्णित कोनी हुई है।

अगर 'बेली' शृगार रे वास्ते हीज लिखियोडी रचना नही है तो ई रे शुरू मे ही शृगार रे प्रति समर्पण रो भाव क्यू वर्णित कियो गयो है। आ आपत्ति भी की जाय सके। ग्रन्थ मे वो अतर्साक्ष्य ओ है

सुखदेव व्यास जैदेव सारिखा
सु-कवि अनेक, त अेक-सथ
त्रो-वरणण पहिलऊ कीजइ तिणि
गूयियइ जेणि सिंगार ग्रथ।

ईं छन्द रे मुजब श्रृ गार ग्रन्थ गूंथण वाळा हमेशा स्त्री री सुन्दरता रे वर्णन सू कथा री शुरूआत करे आ कवि री विचारधारा तय हुवै। इण छन्द सू श्रृगार ने हीज कवि रो चरम प्रनिपाद्य मानणो चाहिजे लोगां री आ धारणा है। और ईं स्थापना रे कारण वो भी कवि परम्परा रो हीज पालण क्यिो है। जठै परम्परा निभावण री बात आ जावे उठे कवि मौलिक नही रेह्या करे आ बात चोखी तरा सू जाणो हो। इण भात कवि आपरे निश्चित जीवन मूल्या रे बावजूद कथा री सुरूआत शौय वृत्ति सू करण री बनिस्पत बी वृत्ति री प्रेरणा स्रोत सू की है। इण मू अधिक ईं छन्द रो ने ग्रन्थ री श्रृ गार भावना रो महत्व नही है।

वस्तु सू श्रृ गार भावना ने नकार ने उण रो तात्पर्य निर्णय करण मे दूजोडो आधार भक्ति भावना रे रूप मे सामने आवे है। कथा रे अन्त मे जिका महात्म्य री चर्चा कवि की है उण रे आधार मू रचना मे कथ्य री दिशा भक्ति रे कनी प्रवाहित होवती घणी दीखे है। पण कई सचमुच मे भक्ति कवि रो इष्ट है इण बात ने भी देख लेवणो जरूरी है।

हिन्दी मे रीतिकाल रा कवियां री भक्ति भावना रे वास्त एक वात इत्ती सटीक भाव सू कंयोडी है वे वा थोडा मे ही वे कवियां रा तात्पर्य रो निरूपण कर देवे है। कह्यो गयो है के—

आगे के सुकवि रीभि हैं तो कविताई है
न तु राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है।

अर्थात् ऐडा कवि राधा और कृष्ण री भक्ति र बहाना सू रचना कोनी करता वे तो काव्य रे माध्यम सू लोगां ने रिझावण रो प्रयास करता हा। अगर आ प्रयास सफल कोनी होवतो तो इणी बहाने भगवान रो नाम भी लिरीज जावतो। पृथ्वीराज कृष्ण ने चरित्र नायक बणायो इण रो ओ मतलब कीकर लियो जा सके के वो वेणी भक्ति र आदर्श री स्थापना करनी चाहतो। आपरी लाचारी न तो खुद मू प्रकट कियो है के—

जिणि सस सहस्र फण, फणि-फणि बि-बि जिह
जीह-जीह नव नवउ जस,
तिणि-ही पार न पाय त्रीकम।
वयण केहरां किसउ वस ? ॥5॥

दर असल जयदेव कवि रे 'गीत गोविन्द' रचना सू हीज कृष्ण री शृंगारिक वृत्ति आकर्षण रो विषय बणगी। पछै कवियां रे सामने वैणें चरित्र रो ओ ढाचों पूरी तरऊ स्थापित होयग्यो। हिन्दी म विद्यापति आपरी पदावली में ने सूरदास आपरा कूट पदां मे जिण तरऊ कृष्ण रे व्यक्तित्व ने शृंगार रे नैसर्गिक स्वरूप मे वर्णित कियो है वे प्रवृत्तियां 'गीत गोविन्द' री परम्परा ने निभावण रे कारण हीज पनप सकी है। वेडीज चेष्टा पृथ्वीराज भी की है। अथात् बी री रचना सिर्फ कृष्ण रो नाम चावती ही वीं री भक्ति नहीं। आ बात शायद आप लोगो रे गळै सू दोरी उतरै पण साच आ हीज है। क्यू के मीरा री भक्ति भावना मे जेडी वेदना, समर्पण ने प्रपत्ति या शरणागति री भावना है वेडी भक्ति भावना 'बेलि' म निजर कोनी जावे। इणी भक्ति रो जिको खुद रो स्वरूप है वो भी 'बेलि' मे कोनी है। 'भक्ति' री व्याख्या भज सेवायाम धातु सू करने शाण्डिल्य उणने 'सा परानुरक्तिरीश्वरे' कह्यो है। वेडी परानुरक्ति रो भाव भी रचना मे दीखे कोनी है। और न नारद री वा भावना भी है जिण ने वो 'सा त्वस्मिन परम प्रेम रूपा' केय ने उण री ग्यारह आसक्तियां रो उल्लेख कियो है। भागवत मे जिकी नवधा भक्ति गिणाई गई है वेणां दर्शन भी ईणरा कथानक म कोनी हुवे।

कुल मिला ने आ बात निरूपित की जाय सके है के 'बेलि' मे न तो आल्वार भक्ता री प्रपत्ति या शरणागति री भावना है, न मीरां री भक्ति री तरै रो वेदना भाव है, और न शाण्डिल्य या नारद भक्ति सूत्र मे वर्णित भक्ति रो शास्त्रीय भाव ही है। अर्थात् पृथ्वीराज रे वास्ते कृष्ण रुक्मणी रो नाम भक्ति रे अभिप्रेरक रे रूप म लेवणो जरूरी कोनी हो। वो तो कृष्ण रो नाम आपरा ग्रन्थ रा चरितनायक रे रूप म लेवणो चावता हो। रीतिकाल रा हिन्दी कवियां री भांत 'रीझि है तो कबिताई है न तु राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है' वाळी उक्ति भक्ति री दृष्टि सू 'बेलि' माथे भी पूरी पूरी साची बैठे है।

शृंगार या भक्ति ने छोड ने किसी खास बात है जिण ने 'बेलि' रे तात्पर्य निर्णय रे रूप मे देखी जाय सके। म्हारी दृष्टि मे वा बात है शौर्य वृत्ति। पृथ्वीराज जिण स्वाभिमान रा धणी हो न अकबर रे दरबार मे रेवतां थकां भी वो जिण उत्साह सू उण री प्रतिभा ने नकार सकतो उण रो आधार उण री आ शौर्य वृत्ति हीज है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भक्तिकाल रे उदय रो एक कारण ओ बतळायो है के आपरे देश मे हीज समर्थ होता थका भी जद हिन्दू लोग पराजित होयग्या तो वैंणे कने ईश्वर री भक्ति करण रे अलावा और कोई दूजो विकल्प कोनी रह्यो। आ बात अगर साची है तो ओ कह्यो जाय सके के सामान्य आदमी तो खुद ने आसानी सू बदल लियो। क्यू के उण री राजनैतिक दृष्टि सू ऊची आकाक्षावां भी कोनी हुया करे

पण पीथल जेडा घोर स्वाभिमानी राजपूत रे मन म गुलामी री आ भावना अवसक कचोट पैदा करती हुवेला । आपरा मूल्या रे रैवता थका वो खुद रे अह ने कौंकर वदळ सकियो व्हैला आ बात भी ध्यान म राखणी जरूरी है। वेलिकार आपरी इण असमजस री दशा मे हीज कृष्ण ने, जीने वो आप रो आराध्य मानतो हो, आप काव्य रो नायक बणावण ने बाध्य हुयो व्हेला । पण कृष्ण रे स्थापित चरित्र म वीरता रे वास्ते घणी गुजाईश कोनी है । वेंणें बचपन री वे बाता जिका मे उणा री वीरता सामने आई हो जदपि शूरता रो चोखो नमूनो है पण उण अवस्था रा बाळक सू स्थायी शौर्य वृत्ति री अपेक्षा कोनी की जाय सकें । वेणें अलावा कृष्ण रो व्यक्तित्व गोपी वल्लभ रे रूप मे शृगार भावना रो आधार तो बण सके पण कृष्ण रा उण रूप मू परुषावृत्ति रो प्रदर्शन सम्भव कोनी हो सकतो । कृष्ण रे शृगारिक भावना सू भरयोडा जीवन रे मायने कोरी रुक्मणी हरण हीज एकली ऐडी घटना है जिका मे कवि न कृष्ण री वीरता ने प्रकट करण री गुजाइश निजर आई। इण वास्ते पृथ्वीराज कृष्ण रे चरित्र री इण घटना ने आधार बणाय ने खुद रो काव्य लिखियो।

अठे आ बात भी उठाई जाय सके के नायिका रो हरण करण सू कई शौय भावना रो प्रदर्शन कियो जा सके ? उल्टे म्हारी समझ म तो हरण मे वीरता दिखळावण रो काम नायक री कामना घता या उण री छिछलो स्थिति ने तो प्रकट कर सके पण ऐडो नायक पाठका रे मन मे वीरता री किणी भी तरह री छाप छोड सके इँ बात मे सन्देह है । इँ बात सू स्वय कवि भी चोखी तराऊ परिचित हो इण वास्ते वो रचना रा नाम हरण परम्परा रे अनुरूप रुक्मणी हरण नाम देवण री जागा इण ने कृष्ण रुक्मणी रे प्रेम री वेलि नाम दियो है । जठे बराबरी रे दर्जा री प्रेम भावना हुवे उठे नायिका ने पावण री बात हरण कोनी कैयी जाय सके। कवि री आ भावना वस्तु रा उण छ द सू सिद्ध हुय जावे जिण माय रुक्मणी हरण कर ने कृष्ण कायर ज्यू भाग खडा कोनी हुवे बल्के लागा ने जोश खरोश सू चुनौती देवे के अगर कोई रुक्मणी रो वर है तो साम्ही आयने लडले । म्हें तो रुक्मणी रो हरण कर रह्यो हू— वाहरि रे वहरि/छइ कोई वर हरि हरिणासी जाइ हरि।
कृष्ण री ऐ ी चुनौती सू सैनिक भी कृष्ण ने वीर रूप म वर्णित करण री जागा उणा न गोप र रूप मे साधारण करने वर्णित करे— माखण चोरी न हुवई माहव/महियारी ने हुवइ महर । कृष्ण रे कोमळ अग रे कारण हीज अर उण री माखण चोर रे रूप मे स्थापित ख्याति रे कारण शिशुपाळ समेत उण रा सैनिक उणा ने अति साधारण कर ने देखे जिकऊ हीज वे कृष्ण री वीरता मू युद्ध मे पराजित हुयग्या । हरण रे कारण जिका विवाह सम्पन्न हुवे वो राक्षस विवाह कह्यो जावे । ऐडो विवाह सस्कार स्थायी सस्कारा रो अनुपालन कोनी करै । कवि रे मन म आ कुण्ठा भी ही।

कथानक में कवि इण प्रकरण सूं हट कोनी सकियो है। हरण रै पछै जद वसुदेव देवकी विवाह रै वास्ते पण्डिता नै बुलावै तो वे भी डरता-डरता ईं बात नै प्रकट करै के एक ही बींनणी सूं बार बार हथळेवो कीया हुय सकै। क्यूंकै हथळेवो तो हरण री वगत हीज हुयग्यो। इण वास्ते वे हथळेवा नै छोड नै बाकी रा सारा संस्कारा री हीज इजाजत देवै—

वेदोगत धरम विचारि वेद विद्
कंपित चित लागा कहण
हेक्रणि सु-थी सरिस त्रिय होवइ
पुनह-पुनह पाणिग्रहण ? ।।148।।

इण कथन सूं ओ साफ हुय जावै के पृथ्वीराज रो स्वाभिमान एक कनी तो दूसरा री अधीनता मानणो कोनी चावतो तो दूजी तरफ वो हरण नै हरण हीज मानतो इण वास्ते वो मन मे आसक्ति भी हो। पण उण री मजबूरी ही के कृष्ण नै छोड नै वो आपरै अहं री तुष्टि दूजी जागा कोनी कर सकतो हो। और कृष्ण रै जीवन में उणनै रुक्मणी रो प्रसंग हीज निजर आयो जिकानै आधार बणाय नै आपरी बात केय सकतो। जिका सूं वो कथा रो ओ रूप हीज प्रकट कियो है।

इण विवेचना रो निष्कर्ष ओ हीज है के वेलि कृष्ण रुक्मणी री वस्तु रो मूल प्रयोजन न तो शृंगार भावना रो प्रदर्शन करणो हो नै न भक्ति भावना रो। वो तो एक राजपूत रो हृदय राखतो हो नै उणी अभिव्यक्ति रै वास्ते वो राजस्थान री कवि परम्परा रै अनुरूप वीरता अर तेजस्विता नै चोखी तरंऊ प्रकट करणी चावतो हो। 'पृथ्वीराज रासो' मे ज्यूं युद्ध रै समय नायक री युद्ध वीरता रो प्रदर्शन है नै शान्ति री टेम उणरी काम वीरता वर्णित की गई है उणी तरंऊ 'वेलि' मे भी शृंगार भावना नायक री काम वीरता रै वास्तै हीज वर्णित हुई है।

**'वेलि' रै वस्तु सौंदर्य रा आधार तत्व**—वेलिकार री काव्यकला री सबसूं बडी बात उणरा वस्तु विन्यास कला रा घणा सारा आयाम है। उणां मांयनै सूं शृंगार अर भक्ति भावना री चर्चा ऊपर की जाय चुकी है। पण फेर भी उणरी वस्तु री कै दूजी बातां नै सामनै राखणो भी जरूरी है जिणां रै कनी समीक्षकां रो या तो ध्यान ही कोनी गयो है या बहुत थोडो गयो है। उणां में वस्तु री प्रबन्धात्मकता अर उणरी नाटकीयता री चर्चा करणी जरूरी है। अठै 'वेलि' रै कथानक री वे बातां हीज सामी लावण री कोसिस करीजी है।

**वेलि री प्रबन्धात्मकता**—'वेलि' नै महाकाव्य री संज्ञा दिरीजी है। नागरिप्रचारणी सभा ज्यादा भावुकता मे आय नै 'वेलि' नै महाकाव्य घोषित करण रो प्रयास कियो

है। पण आज तक प्रबन्ध काव्य री एक सांची रचना रे रूप मे बेलि रो मूल्यांकन करीजियो कोनी है। प्रबन्धात्मकता रो निर्धारण किया बिना रचना ने खण्डकाव्य या महाकाव्य मे वणो घणी समझदारी रो काम कोनी है। क्यूंके ऐड़ा प्रयास दरअसल आलोचक री पूर्वधारणावां ने स्थापित करण रा मोटा प्रयास हीज हुया करै। वे धारणावां कृति सू न्याय करण री जांगा उणरो अहित हीज अधिक करती निजर आवै। इण वास्ते 'बेलि' री प्रबन्धात्मकता री चर्चा करणी जरूरी है।

शुक्लजी प्रबन्ध रा तीन लक्षण निर्धारित किया है–मार्मिक स्थला री पहचान, पूर्वा पर सम्बन्ध निर्वाह ने स्थानीय रगां रो समावेश। ऐ तीनऊ बाता बेलि री वस्तु री सौंदर्य अर प्रबन्ध पटुता री भी चोखी आधार है। अठे उणां री चर्चा करणी जरुरी है।

**बेलि रा मार्मिक स्थल**—प्रबन्धकाव्य कथा रो ज्यू रो त्यू इतिवृत्त हीज कोनी हुवै। अगर कवि कथानक री स्थूलता रे मांयने सू कल्पना कर ने कुछ ऐड़ा प्रसंग उठाय कोनी सके जिका के उण री वस्तु ने हृदयस्पर्शी बणाय देवै तो उण स्थूलता सू दब'र काव्य री सुन्दरता नष्ट हुय जावै। वा लय, गति आदि रो पालण करण वाळी कविता तो बण जावे पाठकां रे हिवडे रो हार कोनी होय सके। काव्य रो ऊचापणे रो आधार वस्तु रा मार्मिक स्थल हीज हुया करे। 'बेलि' री कथा ख्यात कथा माथे टिकियोड़ी है। इण वास्ते कवि रे सामने कथा रो ढाचो पैला सू हीज गढ़योड़ो हो। भागवत री कथा सू कथानक लेय'र भी कवि उण रे मायने मार्मिकता रे अनुसन्धान री चेष्टा कोनी है। उण रो सुन्दर नमूनो रुक्मणी री व्यथा ने प्रकट करण वाळा सन्देश म देखीजे है। कृष्ण रे गुणा हे सू रीभियोड़ी रुक्मणी शिशुपाल रे साथे खुद रा विवाह ने सिंह रा हिस्सा ने सियार ने खावण रे रूप मे देखने उणा ने सन्देश भेजे है—

बलि-बन्धण मूझ, सियाल सिंघ बलि
प्रासइ, जउ वीञ्उ परणई
कपिला धेनु दिन पात्र कसाई
तुलसी करि चडाल तणई ॥55॥

इणी तरऊ देवपूजन रा प्रसग अर युद्ध रा वणन म शृगार रे वास्ते षड्ऋतु वर्णन भी प्रभावशाली है। इण रे बावजूद सारा ग्रन्थ म मार्मिक स्थला रो अभाव हीज देखीजे। वस्तु मे वर्णना री भरमार है ने कहानी मे मौलिक उद्भावना होवता हुवा भी इण म मन म हीज बस्योड़ा रे जावे ऐड़ा प्रसगा री कमी है। कवि री दृष्टि वस्तु ने अभिव्यग्य बणावण री बनिस्पत उणने राजस्थानी वाता ज्यू कोरी कोरी कह देवण ने कनी जादा है।

**वेलि मे पूर्वापर सम्बन्ध रो निभाव**—मुक्तक काव्य मे अर्थ री आत्मनिर्भरता हुया करे पण कथा ने व्यवस्था देवण रे वास्ते प्रबन्धकाव्य मे वस्तु री निरन्तरता होवणी जरूरी है। ऐड़ी रचना मे कथा रे सूत्र मे पिरोयोड़ा छन्द आगला छन्द सू बध्योड़ा रैय ने उण बात ने हीज आगे बढावै। 'वेलि' रो वस्तु व्यवस्थापन राजस्थान रा गेय परम्परा वाळा काव्यां री भांत है। ऐड़ा काव्यां मे कवि रो भुकाव लोकतत्वा ने समेटण री ओर घणो हुया करै। ऐड़ा प्रयासा मे कथा रो सूत्र घणी बार टूट जावे या चोखी तरा सू निभावीजे कोनी। ऐड़ा काव्यां मे कथा विश्वासा सू आगे वढे पूर्वापर सम्बन्ध निर्वाह सू नही। आ बात 'पृथ्वीराज रासो' मे भी दीखे है न 'बीसलदेव रास' मे भी। अठे तक के 'ढोला मारू रा दूहा' मे भी है। पण ऐड़ा काव्या म कहानी मे गैप रह जावे जिणा ने पाठक आपरी पूर्व जानकारी सू या आपरी खुद री उर्वर कल्पना सू भर लिया करे। फेर भी आ बात लोक काव्या री कथा मे जादा नही खटकै। पण जदै प्रबन्ध री दृष्टि सू वेणो मूल्यांकन री बात उठे उटे ई प्रवृत्ति ने दोप री सज्ञा हीज दीरीजी जाय सकै। क्यू के कथा रो जाणकार पाठक तो ऐड़ी चेष्टा कर सके पण जिको के उणरो जाणकार कोनी है उणरे वास्ते वस्तु रे क्रम ने निभावणो भारी पड जावे। ऐड़ी अनिरन्तर कथा समन्वित छाप छोडन म समर्थ कोनी होय सकै। 'वेलि' री वस्तु भी ई दोप सू अलग कोनी है। इण मे कथा रो सूत्र इत्तो पतळो है के उण रे आधार माथे कवि री प्रबन्ध पटुता निरूपित कोनी की जाय सकै। ई मे कथा निर्व्याज ढग सू बध्योड़ी लीक माथे कोनी चाले जदके प्रबन्ध रे रूप मे ऐड़ो होवणो जरूरी हो।

**स्थानीय रगा रो समावेश**—प्रबन्ध काव्य मे उपस्थित प्रसगा रे अनुरूप स्थानीय रग या लोकल कलर रा निभावणो जरूरी है। 'वेलि' मे लोकतत्व रे आधारा रे कारण स्थानीय रगा रो समावेश इत्तो चोखी तराऊ हुयो है के इण बारे मे की भी कैवणो पेला कैयोड़ा ने दुवारा दोहरावण री बात हीज कही जाय सकै।

'वेलि' री प्रबन्धात्मकता रो सागोपाग विवेचन करण सू आ बात साफ हुय जावे के इण माय वस्तु री प्रबन्धात्मकता रो सूत्र थाडो फीको ही है। इण रा मर्म-स्पर्शी वर्णना री कमी ने वर्णनजनित स्थूलता रे कारण इण ने घणो सराहनीय दरजो नी दीयो जाय सकै। पण ऐ बाता कवि री लेखनी री कमी रे कारण साम्ही नी आई है। ऐ दोप कवि रा सप्रयोजन उकेरियोड़ा दोप है। क्यू के वो कोरी प्रबन्धात्मकता रे प्रति हीज समर्पित होवण री जागा एकाधिक बाता ने खुद रे काव्य रो विषय बणावणो चावतो हो। जिण सू इण काव्य री वस्तु मे मार्मिकता रो अर प्रबन्ध पटुता रो जरूर ह्रास हुयग्यो है।

**वस्तु री नाटकीयता**—वेलि री आधिकारिक कथा मे नाटकीय तत्वां रा समावेश इण र सौदर्य ने इणी तराऊ बढावता दीसे है। फेर भी विद्वान लोग उण

कनी घणो ध्यान कोनी दियो है। डा. नरोत्तमदास स्वामी बेलि रे वस्तु व्यापार मे टणरी अलग अलग कार्य री अवस्थावां रो जरूर वर्णन कियो है पण वस्तु रा ड्रेमेटिक प्रसग ने अर उणा रा लाभकारी परिणामा कनी वे भी कोनी देखियो है। आधिकारिक वस्तु रे कार्य या फल रे रूप मे अगर रुक्मणी री अभिलाषा ने गिणा तो फलागम भी बीने हीज होवणो चाहिजे। कार्य री जुदा-जुदा अर्थ प्रकृतिया री रे विकास री जानकारी देवै है। बीज सू लेय ने कार्य री अवस्था तक रो हीज उल्लेख होवण सू हीज वस्तु रो नाटकीय व्यापार सम्भव हुय सके है। 'वेलि' री कथा मे अगर रुक्मणी रे पत्र लिखण री बात ने वस्तु री प्रारम्भ अवस्था गिणा तो पछे कार्यावस्था री दृष्टि सूं कार्य री सिद्धी भी बीने हीज होवणी चाहिजे। इण वास्ते जदे वस्तु व्यापारा ने देखां तो कृष्ण सूं विवाह हुया पछे गर्भधारण ने फलागम नें देखणो पडे। पण प्रयत्न पक्ष मे एक बार सचेष्ट हुया पछे रुक्मणी घणी सक्रिय कोनी रंवे। दूजे कनी कृष्ण हीज दरअसल रुक्म जैडा प्रति नायक सू जूझे ने रुक्मिणी रे साथे विवाह रे रूप मे फलागम वैने हीज हुवै। अगर इण ने प्रमाण माना तो कृष्ण ने सन्देश मिलने सू पेला री कथा आरम्भ अवस्था मे कोनी राखीजे ने इण दृष्टि सू निरर्थक ही ठहरे। इण वास्ते कथा मे प्रारम्भ सू लेय ने फलागम रा वस्तु व्यापार न तो पूरा पूरा रुक्मणी रे प्रयासां सू सिद्ध हुवे ने न कृष्ण रे क्रिया व्यापारा सू हीज। कवि वस्तु री इण दशा सू परिचित हो जिकऊ वो वस्तु रे शीर्षक रे प्रति सचेत रंयो है ने ग्रन्थ ने 'कृष्ण रुक्मणी री 'वेलि' नाम दियो है। ओ हीज कारण है के इण री वस्तु मे आधिकारिक कथा रा सगळा व्यापार उभयपक्षी है। इण वास्ते काव्य री वस्तु री आ एक बहुत बडी खासियत है के आ एक खास नाटकीय रूप री सिद्धि कर सकी है।

'वेलि' री वस्तु मे इवेन्ट्स या घटनावा रो अभाव है। वेणी जगा ब्योरेवार वर्णनां री भरमार है। इण प्रवृत्ति रे उद्गम री खोज करती टेम आ बात सामी आवै के ऐ विशेषतावा उण काळ री वे सारी रचनावा मे देखी जाय सके है जिकी प्रेम ने आधार लियोडी है। ज्यू जायसी रे 'पद्मावत' री प्रेम कहानी मे वर्णन बहुलता है ज्यू हीज बीसलदेवरास मे भी विवाह वर्णन, ऋतु वर्णन आदि री बहुतायत है। ऐडी सारी रचनावा रे मायने लोकतत्वा रो मोकळो आधार है ने ऐडी रचनावा मे हीज घटनावा मे नाटकीयता रा चरम रूप सामने आयो है। भले ही ऐडो करण सू ग्रन्था माय अस्वाभाविकता आयगी है। पण वस्तु री चमत्कारिकता अर नायक री प्रभावशालिता घणी उभर सकी है। 'वेलि' री कथा मे भी ऐ बाता उभर न सामी आई है। ऐ सगळी नाटकीय सिद्धिया अर लोकतत्वा रा आदर्श 'वेलि' रे रचनाकार री उण इच्छा कनी सकेत देवै है के कवि आपरी रचना ने कोरो प्रबन्ध री सीमा मायन बाध ने देखणो कोनी चावतो हो। वो तो कई बाता ने समेट न खुद री बात ने न खुद रा चरित नायक रे शौर्य री बात ने कंवणी चावतो हो।

निष्कर्ष—अन्त में ऊपरला सारा पुनर्मूल्याङ्कन री विवेचना ने समाप्त कर ने पृथ्वीराज राठौड री वेलि रे वस्तु रा सौन्दर्य रे बारे म आ बात स्थापित कर सका के इण री सुन्दरता कोरी इण बात म हीज कोनी है के आ एक शृंगाररस प्रधान चोखी रचना है, के इण मे भक्ति भावना चोखी तरा सू भर्योडी है, के इण में राजस्थान री जातीय विशेषतावा अर लोकतत्वा रो सुन्दर समावेश कियाडो है, के इण म खण्डकाव्य रा सुन्दर नमूनो पेश हुयो है, बल्के इण बात म अधिक है के इण री कथा म कवि आपरे स्वाभिमान अर शौर्यवृत्ति ने बडी चतुराई सू निभाय सकियो है। उण रे सामन राजनीति री, तत्कालीन समाज री, हरण काव्या री ने स्त्रय नायक रे स्थापित स्वरूप आदि री घणी सारी दिक्कता ही। वो ऐ सबा ने पार कर न वेलि री कथा वस्तु न सजायो है। इण वास्ते हीज 'वेलि' एक अमर रचना है।

☐

(जागतीजोत मे प्रकाशित)

# राजस्थानी री जूनी पाण्डुलिपियाँ री विवेचना

जूनी पाण्डुलिपियाँ रा सम्पादन रे वास्ते कीयोड़ी कोशिशा ने दो वर्ग मांयने बांट ने देख्यो जाय सके है—पैलड़ो पोथी रो उद्धार करण री उपकार-भावना अर दूयजो स्तुतिकरण वाळी मोह भावना। पैलड़ी भावना सूं भरियोड़ी कोशिशा रे मांय सम्पादक री चेष्टावा उण रे इण घमण्ड सूं भरियोड़ो व्है के वो पोथी रो सम्पादन कोनी करने जाणे उण रो उद्धार कर रह्यो है। इण वास्ते पोथी रे साथे न्याय करण री जागा वो इण घमण्ड ने मन मायने पोखिया करे के उण सूं पैला किण भी पारखी पोथी री महिमा कोनी पहिचाण सक्यो हो। अर सैंगा सूं पैळी ऐड़ो कर ने वो एकण कनी पाठका माथे एहसान कर रह्यो है दूजी कनी पोथी रो सम्पादन कर ने कवि रो उपकार कर रह्यो है। ऐड़ी कोशिशा मांय पोथी री उपलब्धिया उण रो खुद रो अर्जित हक नी व्हैय ने सम्पादक सूं दीयोड़ी अवसर री उपकार चेतना बण जावे।

जदै के दूजी कोटि रा सम्पादक जलम भोम रे आकर्षण रे कारण या निजू भाषा रो कवि होवण रे मोह रे कारण या ऐड़ा हीज दूजा कारणा सूं कवि रे सागे अपणापो महसूस करे। इण कारण वो कवि अर पोथी सूं श्रद्धा भाव सूं हीज जुड़ियोड़ो रैवे। पोथी री हर ओळी ने गरिमापूर्ण मान र वो पोथी री तारीफा ने सामी लावण री हीज कोशिशा करतो रैवे। इण वास्ते सम्पादन कला रे नाम माथे वो उण रा दोषाने दूर करण मे अर आपरे हिसाब सूं उण मे सुधार करण री कोशिशा करतो रैवे। खुद आगे आय ने ओ सम्पादक मूरखपणा सूं पाठ सूं छोड़छाड़ करण लाग जावे। गैर जरूरी प्रसगा ने मेटण रे रूप मे, अर दोषा ने मिटावण रे रूप मे मूल पाठ र मायन घट-बढ करतो रैवे। होमर रे काव्य रो पैलड़ो सम्पादक जैनोडोटस भी पोथी रो सम्पादन करती व्हैळा आपरे कनी सूं होमर रा लम्बा प्रघटका न काट' र फैंक दीना, दूजा पगगा ने मनमानी सूं बदळ दियो। ओ सारो कारज वो इण तरा सूं ठीक कीनो जिया वो आपरी खुदरी पोथी मे करतो (विलियम स्मिथ-डिक्शनरी ऑफ ग्रीक एण्ड रोमन बायोग्रेफी एण्ड माइथोलोजी) राजस्थानी री प्रसिद्ध पोथी 'पृथ्वीराज रासो'रा बार-बार सस्करण रे मिळण रो भी कारण सम्पादका रा आपरा दायित्वा रो उल्लघन हीज है। 'बीसल देव रासो' रा सम्पादक माताप्रसाद गुप्त भी खुद रा तय कियोड़ा सिद्धान्ता सूं मिथियोड़ा अधिकारा रे

आधार माथे सत्यजीवन वर्मा सू सम्पादित पोथी रा मोटा आकार ने काट छाट ने पोथी ने लघुकाय वणाय दीयो।

'वेलि' रा सम्पादन री चर्चा करण सू पला इण दो वर्गां रा सम्पादन कोशिशा री जाणकारी जरूरी है। आपाणे वास्ते आ परम सौभाग्य री वात है के 'वेलिक्रिसन रुक्मणी री' रा पेला सम्पादक श्री एल पी टेस्सीटरी इण रा सम्पादण करती व्हैला दोनऊँ अतिया सू बच ने सम्पादक रे वास्ते अपेक्षित लाग लपेट हीनता सू इण रो सम्पादन कियो है। अर टेस्सीटरी सू कियोडी मेलडी चेष्टावा रे कारण हीज उण रा पाछीला सम्पादक ठाकुर रामसिंह अर सूर्यकरण पारीक आपरी निजर माय स्तुति करण रो भाव राख' र भी इण रे कनी वैज्ञानिक दृष्टि सूं हीज आगे वढ सक्या। मायड भोम री रचना हूवण री मोहान्धता ने माळ 'र भी 'वेलि'रे मूल पाठ सागे मनमानी को कर सक्या।

**'वेलि' रे सम्पादन रो इतिहास**—अजे तई 'वलि' रा खास छं सम्पादित रूप सामी आय चूका है। टेसीटरी सू इण रो सम्पादन किया पछे हिन्दी अर राजस्थानी माय हीज इण री सम्पादन चेष्टावा कोनी हुई वरन् श्री नटवर इच्छाराम देसाई सं 1955 ई. मे गुजराती भाषा तक मे इण रो सम्पादन कियो जाय चूको है। हिन्दी रा अजे तई रा प्रयासा माय श्री टेस्सीटरी रो प्रयास जिको के रायल एशियाटिक सोसायटी सू 1919 ई मे छप्यो, श्री सूर्यकरण पारीक अर रामसिंह रो प्रयास जिको के हिन्दुस्तानी एकेडमी सूं 1931 ई मे छप्या अर श्री नरोत्तमदास स्वामी रो प्रयास जिको के श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा सू 1953 ई. मे छप्यो खास महातम राखे है। 'वेलि' सम्पादन रे प्रयासा ने परखण सारू ऐ तीन रूप हीज विशेष विचारणजोग है।

**टेसीटरी सू वांचोडो पाठ**—टसीटरी आपरा सम्पादन प्रयास रे मायने उपलब्ध हाथण वाळी आठ पाण्डुलिपियों रे अलावा दोय राजस्थानी री अर एक संस्कृत री टीकावां रो उपयोग आधार सामग्री रे रूप मे कियो है। उण री सम्पादण रीति नीति रे माय पाडुलिपिया सू भी मोकळो महातम उण टीकावा रो निजर आवे है जिणां न वो काम मुरू किया सूं पेला हीज प्राप्त कर चूको हो। इण तथ्य ने वे खुद स्वीकार कियो है। इण टीकावां रे माय टेसीटरी पोथी री भरोसेमदगी पायी ही क्यूं के ऐ तीनऊ 'वेलि' रे रच्या रे पचास बरसा माय माय हीज लिखीजगी ही (अर्थात् सवत् 1637 + 50 = 1687 सू पेला पेला ऐ टीकावा सामी आय चुकी ही) अर इण वास्ते पूरी तरा सू विश्वस्त कोनी होवतो थका भी टेसीटरी ओ भी माने है के ऐ तीनो मांय सू एक या दो तो खुद पृथ्वीराज रे जीवतां थका हीज लिखी जाय चूकी ही। जिण माय सू पेलीवाळी दूढाडी टीका रे लिखी जावण री सम्भावना

वा सवत् 1673 सूं पला-पेला किया करे। हालाके ओ सवाल अणसुळभियोडो ही रै जावे है के कवि रे गुद रे जीवणकाळ माय लिखी जावण भर सू हीज वे प्रमाणिक कीया टू जावे है ? म्हाणी इण धारण री पुष्टि इण बात सू भी हुय जावे है के उण रे जीवणकाळ माय ही टीकावा रे निर्बीजण रे बावजूद पोथी रो असल रचना-काल अजे तई निर्धारित कोनी हू सक्यो है। टीकावा रो आपसी अर्तविरोध इणा ने राजस्थानी रा जूना साहित्य रे माथे लगायो जावण वाळो प्रश्नचिह्न 'अप्रामाणिकता या असदिग्धता' रे आरोप सू बचाय'र कोनी राख सके। इण वास्ते वे मूल पाठ रा निरधारण खातर सहायक कीकर हुय सके आ बात इण विवेचन सू आपो-आप खडी हूय जावे।

उपलब्ध हुवणवाळी सगळी टीकावा, पाडुलिपिया माय सू टेसीटरी उगूणे राजस्थान माय लिखियाडी ढूढाडी टीका ने हीज सेगा सू ज्यादा प्रमाणिक मानी ही। अर 'बेलि' रा लारला सम्पादका भी टेसीटरी री चेष्टावा माथे निर्भर रेय'र सम्पादन रो कारज कियो है। इण सू आ सिद्ध व्हे है के आज जिण रूप मे 'बेलि' आपा ने मिले है उण रो मूल पाठ रे रूप म उगूणे राजस्थान मे लिखियोडी ढूढाडी टीका हीज पोथी री पाठ ने तय करणवाळी पाण्डुलिपि सिद्ध हुवे। पण टेसीटरी खुद (उण माथे पूरी तरा सू निरभर रेवता थका भी) उण टीका सूं जाणें पूरा निश्चित कोनी हुवे। उणा री आ बात आ इशारो करे है के इण टीका मे वे मोकळा घट-वढ पायो हो अर जठे उणा ने की भी अस्पष्टता दीसी उठे वे खुद आगे आय ने ससोधन कीयो है। टेसीटरी री इण भातरी सफाई इण तथ्य कने आपा ने ले जावे है के जिण नीव माथे 'बेलि' रे सम्पादन रो आलीशान महळ खडो है उण ढूढाडी टीका रे मायने हीज थोडी घोत ऐडी कमजोरिया है जिकी के 'बेलि' रो मौलिक पाठ स् आपा ने छेडे करतो जावे।

टेसीटरी री सम्पादन कला री एक औरू कमजोरी भी है जिण कनी आपारो ध्यान खेंचणो खातर पारीक जी आपरी पोथी री भूमिका माय केह्यो है– 'आपा ने स्वर्गीय डा. टेसीटरी रो धन्यवाद करणो चाइजे के जिका पेलापोत 'वेलि' री महिमा सू 1917 ई माय मूल पोथी छपवायी अर उण री एक सारगर्भित भूमिका भी लिखी। पण डा टेसीटरी डिंगल भाषाशास्त्र रा आधा पडदा नोट देयर छोटी सी भूमिका भी लिख दीनी इण सू वे साहित्य प्रेमिया री उत्कण्ठा तो बढायी पण सागे सागे इणा रै मना मायने आ अशका भी भर दी के सायत इण काव्य ने औरू सरल अर भणनजोग बणावणो मुश्कल है।' (भूमिका पृ. 52) पारीक जी री आ बतळावण टेसीटरी रा उण दोष कनी इशारो करे जिण ने म्हे इण निबन्ध रा सुरू-पोत मे हीज पोथी रो उद्धार करण री उपकार रे भावना रे रूप में माडियो है।

उपरला विवेचन सू इण वास्ते आ बात सामी आवे है के टेसीटरी री सम्पादन कोशिश पूरी तरा सू निभ्रान्त कोनी है। इण कारण उणांरी कोशिश रे बावजूद दूजी औरू कोशिश री भी जरूरत महसूस हुई अर इण कारज नै हाथ मे लेवण रो श्रेय डा रामसिंह अर श्री सूर्यकरण पारीक नै है।

हिन्दुस्तानी एकेडमी सू प्रस्तुत कियोड़ो पाठ—डा रामसिंह अर पारीक जी 'वेलि' रा मूल पाठ तई पहुचण री खातर चार हस्तलिखित पाण्डुलिपिया नै अर टेसीटरी री रायल एशियाटिक सोसाइटी सू छप्योडी पोथी नै आपरी आधार सामग्री बणायी। इण वास्ते ऐ दोनुई 'वेलि' रा पाठ सम्पादन मू पेलाहीज आपरो ओ मानस बणाय चूका हा के उणा नै इण पाच पाठ सामग्रिया माय सू हीज मूल पाठ खोजणो है। पण ऐ पाचऊ रे माय नै मोकळो पाठ भेद देख'र इणा भी टेसीटरी रे जिया हीज पाठ सम्पादन रा वैज्ञानिक तरीका नै अपणावण री जागा निज रे निर्णय नै मोकळा महत्व दियो है। इण वास्ते जदे पाठ सम्पादन रो काम करता ऐ लोगा रे सामी उलझण पैदा हुई उठे ऐ लोग निज रा विचारा नै हीज पाठ सम्पादन रो आधार बणाय दियो। उणा खुद केयो है—'म्हाणी सुविधा सू म्हा लोगा नै जिको पाठ सॅगाऊ सरल अर उपयुक्त लाग्यो उणी पाठ नै इण पोथी मे स्वीकार लियो है। बाकी पाठान्तरा नै जिज्ञासू पाठका री सूचना अर मनन रै वास्ते अठे पेलड़ा दोहला री नम्बर देय नै अलग सू भाड दियो गयो है।' (पृ 273) इणा री आ वतळावण दोनऊ सम्पादका री ईमानदारी नै तो उजागर करे पण इणने वैज्ञानिक कोशिश कोनी केह्यो जाय सके। सम्पादन री जिम्मेदारी नै 'सुविधा' रै रूप मे नी लेवणा चाईजे। इण रे बावजूद इणां री कोशिश इण खातर महत्व राखे है के ऐ लोगां खुद री सुविधा सू भी जादा पाठकां री सुविधा री बात नै जादा तर्क सगत ढग सू सामो राखी है। ऐ लोगा इण तथ्य नै नी भुलाय सक्या के 'वेलि' री भाषा साहित्यिक डिंगल है जिकी के क्लिष्ट हुवण रे कारण हिन्दी वाळा रे वास्ते हीज दोरी कोनी हुवै खास राजस्थानी भाषा जाणन वाळा रे वास्ते भी आसानी सू समझण जोगी कोनी है। (पृ. 50.)

ऐ दोनऊ सम्पादकां री कोशिशां मोकळा कारणा सू उल्लेख जोगी कोशिश बण सकी है। वेंगा मू मोकळा उल्लेख जोगी बात आ है के इणा आधारभूत सामग्री री प्रमाणिकता नै जांचणों जरूरी समझियो हो। जिकी पांच प्रतियां रे आधार माथे ऐ लोगां पाठ निर्धारण कीयो हो ऊणा रे वास्ते ऐ कह्यो है के—'वास्तव रे माय वे हीज प्रमाणिक प्रतियां राखी है। निर्माण काल रे हिसाब सू भी वे प्रतिष्ठित अर प्रमाणिक समर्थीजी है।' (पृ 273) इण वास्ते ऐ लोगा पूरी तरै सूं टेसीटरी रे पाठ माथे हीज टिकयाड़ा कोनी रेया है दूजा पाठान्तरा रो लाभ भी उठायो

हा। पण टीकावा अर हस्तलिखित पाण्डुलिपियां रे प्रमाणिकता रो कोई ठोस पैमानो ऐ कोनी दियो है। कोरी मोरी जूनी होवण री बात ने हीज ऐ पोथी रे प्रमाणक हुवण रो आधार मानिया है—'म्हाणी जाण म तो मेगा सू जूनी टीका हीज मूलार्थ र विषय माय प्रामाणिक केह्यी जाय सके है क्यूके समसामयिक हुवण र कारण अपणे आप हीज वा 'वेलि' रा भावा ने जादा सफाई सू समभावण म सिमरथ हुवणी चाइजे।' (पृ 51) समसामयिकता ने हीज यू प्रमाणिकता रो एकलो कारण मानण रो भरम टेसीटरी भी पाळ चूका हा। इण हिसाब सू ऐ दोनऊ सपादक भी उणीज बात नै पुष्ट कर ने आपरी सम्पादन कला री कमजोरी खुद हीज प्रकट कर दीवी। खासतौर सू उण टेम जदे के ऐ दोनऊ सम्पादक भी ढूढाडी टीका री मोकळी कमजोरिया जाण'र भी उणा ने सिरफ चलताऊ ढग सू प्रकट कर दी है। ऐ दोनऊ सम्पादक मारवाडी अर ढूढाडी दानऊ टीकावां नै पृथ्वीराज री जीवणवेळा री हीज रचनावा मान'र भी ढूढाडी टीका ने मोकळो महत्व दीयो है। उणा रे हीज शब्दा माय 'ओ भी सम्भव है कै ढूढाडी अर मारवाडी दोनऊ टीकावा कवि रे जीवण-*वेळा मे हीज बणगी व्है, पण के है दोनऊ सुततर अर उण दोनो माय भी ढूढाडी टीका* जादा जूनी अर प्रामाणिक जचे है।' (पृ 52) म्हारे जांण तो इण आधार सामग्री रे निरधारण रे वास्ते ऐतिहासिक, भापा वैज्ञानिक अर साहित्यिक परम्परावा री तुल्य भावनावा माथे घणो ध्यान देवणो चइजतो कोरो भरोसो प्रकट कर देवण भी सू हीज पाण्डुलिपियां प्रामाणिक को हुय जावे।

इण दोना री सम्पादन चेष्टा टेसीटरी रे ज्यू छोटी टिप्पणिया अर थाडा बात पाठ भेदा भर सू ही जुड'र पूरी कोनी हुयगी है। इणा गम्भीर चेष्टावां वाळी सम्पादन कला दरसायी है। इण लोगा पोथी री लाम्बी भूमिका रे रूप मे कवि रे व्यक्तित्व री टीका रे अलावा 'वेलि' री टीकावा, उण रो नामकरण, उण रो प्रतिपाद्य निरूपण आदि रो भी मोकळो प्रयास कियो है। सम्पादन रे कर्त्तव्या रे पालन सारू ऐ 'वेलि' रा मूल पाठ रे अलावा सगळा पाठान्तरा ने उणा रा हिन्दी नोट ने, दाबदकोस मेलण रे सागे-सागे सैंगा सू उल्लेख जोगो कारज ओ कियो है कि इणा वेलि री ढूढाडी अर सस्कृत टीकावा ने पोथी रे सागे हीज छाप्यो है। इण सू इणारी सम्पादन चेष्टा घणी प्रामाणिक अर भरोसेमद बण सकी है। पाठान्तरा ने भी अलग सू उल्लेख कर न ऐ आपरी कोशिशा ने घणाखरी वैज्ञानिक बणावण मे सफलता पायी है।

**श्री नरोत्तमदास स्वामी सू प्रस्तुत पाठ**—श्री नरोत्तमदास स्वामी जद 'वेलि' रा सम्पादन कीयो उण टेम तई इणरा दोय सस्करण सामी आय चूका हा। इण वास्ते इणा रे सामी ज्यादातर वे दिक्कता कोनी ही जिकी के आगला सम्पादका रे

सामी ही। इण वास्ते स्वामी जी जिका प्रयास कीयो है उण मे पेलडापन री खोज चेष्टा री हुय'र विश्लेषण करण री आलोचक री निजर मोवळी ही।

स्वामी जी 'वेलि' रे मूल पाठ रे मायने दोय मुद्दा उठाया है—ऐणो पेलो मुद्दो जिको के सम्पादन कला रे हिसाब सू घणो वैज्ञानिक है, ओ है के साची अरथा माय 'वेलि' रा छन्दा री सख्या कित्ती है। इणा पाच जुदी जुदी प्रतिया रे आधार माथे 'वेलि' रा छन्दा री असली गिणती माये सवाल खडो करतां कह्यो है—'टेसीटरी री 'वेलि' माय छन्दा री गिणती 305 है। रामसिह अर सूर्यकरण पारीक सू सम्पादित सस्करण रे मायनें टेसीटरी रो हीज अनुकरण करियो गयो है। बाद मे जिकी प्रतिया मिळी (अर ऐ प्रतिया 'वेलि' री सेंगा सू जूनी उपलब्ध प्रतिया है) उणां मे छन्दा री गिणती 301 या इण सू भी कम मिले है। उक्त सस्करणा रो 305 वो पद्य जिण मायने रचना रो सवत् दियोडो है, निश्चे मे प्रक्षिप्त है, जेडो के ऊपर बताया जाय चूको है। 304 वो पद्य साखला करमसी री क्रिसन जी-री वेलि मायने भी मिळे है। करमसी पृथ्वीराज सू पला हुयो हो, अर क्रिसन जी री 'वेलि' री हस्तलिखित प्रति सवत्—1634 री लिखी मिळी है। इण वास्ते ओ पद्य भी पृथ्वीराज री रचना कोनी जाण पडे। सवत् 1969 री प्रति रे माय भी, जिकी के पृथ्वीराज रे भतीजा माणजी रे वास्ते लिखिजी ही, ओ पद्य कोनी मिळे। पद्य सख्या 126, 127 अर 176 भी जूनी पोथ्या मे कोनी मिले। सवत् 1673 री सटीक प्रति मायने भी इणा री टीका कोनी मिले। स 1667 री प्रति मे ऐ पद्य हाशिया मे लिखियोडा है। ऐ पद्य भी 'वेलि' रा मूल अग कोनी है। इण वास्ते 'वेलि' रा पद्यां री सख्या 300 रैय जाव है।

जिकी ढूढाडी टीका न टेसीटरी अर श्री पारीक जी पाठ निर्धारण रो आधार बणाया ही उण माय साची मे छन्द सख्या 126, 127 अर 176 री टीका कोनी कीयोडी है। अर ग्रन्थ री रचना ने परकट करण वालो आखिरी वो 305 वो छन्द भी कोनी है। इण खातर ई बात ने प्रमाण मान'र स्वामी जी इण तीनऊ छन्दा ने प्रक्षिप्त मान लिया है। पण हिन्दुस्तानी एकेडमी वाळी प्रति मे हीज ओ भी स्पष्ट कियो गयो है के 'सवत्–1673 री ढूढाडी टीका मे कोरा 290 दोहला तक री टीका पायी जावे है अर इण सू आगे रा 14 दोहला रो मूल पाठ दियो गयो है। टीका कोनी करीजी है।' (पृ 815) इण वास्ते कोरी टीका कोनी को जावण रे कारण स्वामीजी पोथी रा 126, 127 अर 176 वा छन्दा ने प्रक्षिप्त मानिया है तो इणी मानता रे कारण आखिर रा 14 छन्दा ने भी, जिणा री भी टीका कोनी कियोडी है, प्रक्षिप्त मानणो चाईजे। पण उणा ने ओ मानण री हिम्मत कोनी हुई। कयू के ऐडो किया सू वे मगळा छद प्रक्षिप्त हुय जावे जिणा मे 'वेलि' रो

स्पष्ट दियोड़ो है । अगर आं स्पष्ट होज प्रक्षिप्त है, जिण री की कापी गुजाईश है, तो पछे 'वेलि' रा प्रतिपाद्य निर्धारण रै वास्ते आपाने नूवा सिरा सूं सोचणो पड़ेला । इण रै बारे में आगे अलग सू चरचा करणी ठीक रैवेला अठे तो सिरफ आ बात मान लेवणी हीज पणो रैवेला के स्वामी जी भी पोथी रो सम्पादन करती व्हेला सांच सू दूर हटग्या है ।

*'वेलि' रे मूल पाठ रो निर्धारण—'वेलि' रे सम्पादन रे वास्ते कियोड़ी सगळी* कोशिशां ने देख ने आ बात साफ हुय जावे के उगूणें राजस्थान में लिखियोड़ी ढूंढाड़ी टीका होज 'वेलि' रा पाठ निरधारण रे हिसाब सू सेंगा सू मोकळो महत्व राखे है । ठा रामसिंह अर श्री सूर्यकरण पारीक इण टीका ने आपरी पोथी में छाप'र तारीफ जोगो कारज कियो है । इण टीका रे वास्ते टेसीटरी ओ सकेत दियो है कि इण माय मोकळो परिवर्तन अर सशोधन हूया है— अर हिन्दुस्तानी ऐकेडमी वाळा दोनऊ सम्पादक छद सख्या 126, 127, 176 अर 209 सू लेयर 304 तक रा आखिरी 14 दोहला रे *वास्ते आगा न सूचित किया है के टीकाकार उणा री टीका कोनी की* है । स्वामी जी इणी तर्क रे आधार सू वेलि रा पाच छन्दा ने जाळी मान'र उणा न पोथी सू निकाल दिया है ।

*तीनऊँ सम्पादकां री चष्टावा ढूंढाड़ी टीका माथ टिकियोड़ा हावता थका भी* इण माय मोकळी कमजोरिया हूवण री माकळी सम्भावना देखे है । अस्तु, ढूंढाड़ी टीका रे बारे में चोखी तरासू विश्वस्त हुया बिना 'वेलि' रो आज मिलण वाळा पाठ ने प्रामाणिक केय सकणो सम्भव कोनी व्है । इण वास्ते अठे उण रो थोड़ो सा विवेचन करणो जरूरी है ।

टेसीटरी अर श्री पारीक दोनऊ ही इण ढूंढाड़ी रा रचना काल सवत् 1673 माने है । ओ सवत् इणी दोना री इण मानता री पुष्टि करै है के ऐ लोगा वेलि रा रचना काल (1637 सवत्) रे पचास साला रे मायने मायने उण री टीका भी सामी आय चूकी ही । पण ऐ विधिया होज टेसीटरी री इण धारणा ने गलत सिद्ध करे है के टीकावा पृथ्वीराज री जीवण वेळा माय हीज सामी आय चूकी ही क्यू के पृथ्वीराज री मृत्यु रो टेम सगळा विद्वाना एकमते सू सवत् 1657 बतळायो है । इण वास्ते जद आ टीका कवि री मृत्यु रे पछे लिखी गई है तो पछे आ बात अधिकार सू को केह्यो जाय सक है के आ टीका कवि री समसामयिक है । आ मान लियां पछे इण टीका रे वास्ते वो अटूट विश्वास कोनी रैवे के समसामयिक हूवण मात्र सू हीज आ प्रामाणिक भी है । इण वास्ते इण टीका ने अजे तईं जित्ती प्रामाणिक मान'र देखता हा उण तरीका सू नी देख'र इण ने तटस्थ हुय'र देखणो चाईजे ।

इण टीका सू उठो हूवण आळो दूजो सवाल ओ है के इण टीकाकार बीच बीच मे थोडा सा छन्दा री टीका क्यू कोनी की है ? जेडो के पेला साफ कीयो जाय चुका है कि– इण म 126, 127 अर 176 वा छन्दा री टीका कोनी कीयोडी है। इणी भात छद सख्या 291 रे पाछे रा भी सगळा छन्दा री टीका छोड दीवी है। स्वामीजी रे तर्का रे मुजब अगर आपा ऐ सगळा ने प्रक्षिप्त मान लेवा तो पोथी रे मुजब मोकळा नूवा सवाल खडा हूय जावे। उणा न समझण सारू पेला कथा रा दीयाडा क्रम न अर कवि सू दीयोडी छन्दा री व्यवस्था ने समझणा जरूरी है।

पाथी म कृष्ण अर रुकमणी री कहाणी 278 वा छन्द साथ आय ने खतम हुय जावे। उण रे पाछे 279 वा छन्द सूं लेय 290 वा छन्द तई जूनी परम्परा रे मुजब पोथी रा महातम बतलायो गया है। उण रे पाछे 219 वां छन्द सू लेय ने 304 वा छद तई 'वेलि' रो रूपक दीयोडो है। 305 वें छन्द म वेलि रो रचना सवत् दीयोडो है। इण वास्त जदे आपा वेलि रा लारला 15 छन्द प्रक्षिप्त मान लवां तो इण रो अरथ हा हूय जावे क वेलि रो रूपक, प्रकट करणवाळा सारा छन्द फरजी है। अर इण रे पोथी सू हटावण रो अरथ ओ हुवे के फेर पाछे इण रूपक सू प्रकट हूवण वाळो आध्यात्मिक रूपक वेलि रो मूळ स्वर कोनी रैय जावे। अर्थात्–वेलि भक्ति परक रचना नी हूय र शृगारिक रचना भर है। फेर पछे इण में धरम भावना ढूढणा फिजूल व्है जावे।

इण खातर पोथी र वास्त टीकाकार रा खुद रा मन्तव्या री ओळखाण करणो जरूरी है। वेलि रो टीकाकार निश्चै ही कट्टर धरम भावना रो लेखक हो। इण री गवाही इण र द्वारा कीयोडी टीकावा रा आखीर रो छन्द (सख्या 290) देवे है। जिण मे कवि पृथ्वीराज सू गगा न 'एकदर्शीय' अर वेलि ने सार्वदर्शीय रे बडपोलापण र कारण उणा इणरी टीका तक कोनी कीवी है। आपरे हिसाब सू टीकाकार कवि न गगा री निंदा करता देख'र उण ने माफ कोनी कीयो है अर टीका करण री जागा ओ लिख राख्यो है—'गगा जी री निंदा करी छै। तार्कलियां या दुबाला को अरथ में नही लिख्यो छै' ऐडी कट्टर धरम भावावाळी टीकाकार वेलि रा आध्यात्मिक पक्ष ने प्रकट करणवाळो रूपक ने क्यू छोड दियो आ बात विचारण जोग है। म्हारी समझ म तो ओ रूपक पृथ्वीराज कोनी लिखियो हो। ओ हिस्सो प्रक्षिप्त है। इण वास्ते दूढाडी टीकाकार रो अठै मौन व्है जावणों जाच सकें।

**वेलि रे प्रतिपाद्य रो निरधारण**—अगर आपां वेलि रा रूपक ने फरजी अश मान लवा तो पछे उण रे प्रतिपाद्य न तय करण म मोकळी दिक्कता खडी हूय जावे। जिण रूपक रे आधार माथे अजे तई वेलि ने भक्ति भाव री रचना मानियो जाय रह्यो हो वे सगळा तर्क भूटा पड जावे। अर आपां ने मजबूर व्हैय ने एक

शृंगारिक रचना मानणी पडेला। तदे आपा ने वेलि रा प्रतिपाद्य ने ढूढण खातर दूजा स्रोता रो सहारो भी लेवणो पडेला। अठे वेडा तीन स्रोता ने माडणो अर विवेचित करणो जरूरी है जिणा रे आधार सू कोई भी सम्पादक पोथी रे प्रतिपाद्य रो आसानी सू निरधारण कर सके। वै वातां इण मुजब है—

(1) दूजी पोथ्या सू 'वेलि' रा रूपक री तुलना।
(2) कवि रै व्यक्तित्व सू उण री रचना दृष्टि ने पकडण री चेप्टा।
(3) पोथी रा तात्पर्य निरणे रा आधरा सू उण रे प्रतिपाद्य रो निरधारण।

पोथी रे आखिर मे दिया जावणवाळा दूजा कविया रा रूपका सूं 'वेलि' री तुलना कर ने उपरला तथ्या ने परखियो जाय सके है। दूजा साक्ष्या सू ओ माळम व्है के पृथ्वीराज रा पेला जायसी अर उण रा समकालीन महाकवि गोस्वामी तुलसीदास भी आप आप री पोथ्या माय कथा रो आध्यात्मिक रूपक दीनो हो। पण जठे तुलसीदास आपरा 'रामचरितमानस' मे दीयोडो मानसरोवर री सात सीढ़िया रो रूपक *कथा रा प्रामाणिक आध्यात्मिक भरोसो दिरावे है उठे जायसी रे* 'पद्मावत' रे आखिर मे दीयोडा रूपक माथे विद्वाना मोकळा ऐतराज किया है। 'वेलि' रा रूपक री भी इसी हीज हाळत है। क्यूके इण मे साग रूपक रो चोखी तरऊ निभाव कोनी हूयो है अठे आ वात ध्यान देयणजोग है कि पृथ्वीराज आपरी इण पोथी मे मोकळा साग रूपक खडा कीया है। जिणा मे वसन्त अर शिशिर रो रूपक (229 सूं 238), युद्ध अर विरखा रो रूपक (117 सू 129) तो बेजोड रूपकां म गिणिया जाय सके। इण सू ओ सिद्ध हुवे है के पृथ्वीराज रूपक चित्रण म मोकळो सिद्धहस्त हो। पण इण कवि रो आपरी पोथी रा खास रूपक चित्रण मे गडबडीज जावणो मोकळा सन्देहा ने पैदा करे।

रूपकां रे सम्बन्ध म एक औरू वात माथ भी अठे ध्यान देवणा जरूरी है क पृथ्वीराज सू पेला रा अर उणरा समकालीन जिण कविया 'वेलि' काव्य रच्या हा उणा कोई भी पोथी रे आखिर म ऐडो आध्यात्मिक रूपक कोनी दीयो है। साखला करम सी रूणेचा री 'किसन जी री वेली' (सवन्–1680 रे लगेटगे), चूडोजी री' वाणिक वेलि' (पृथ्वीराज सू पेला री पोथी), महेसदास री 'रघुनाथचरित नवरस वेलि' (सवत् 1876), किसनऊ री 'महादेव पार्वती री वेलि' (1660 रे लगेटगे) *इण सगळी पोथ्या म पोथी रे आखिर म रूपक कोनी दीयोडो है। ऐ सगळी पोथ्या* कथा रे महातम परकट करण रे सागे हीज पूरी हुयगी है। इण वास्ते आ वात थिरपी जाय सके है के 'वेलि' ग्रन्थां री परम्परा पोथी रे आखिर मे आध्यात्मिक रूपक देवण रो इशारो कोनी करे। 'वेलि' रो ढूढाडी टीकाकार भी इण छन्दा री टीका कोनी

करी है। इण सू ई विचार ने मोकळी ताकत मिळे के बेलि रा ऐ सारा छन्द प्रक्षिप्त हुय सके है।

**कवि रो व्यक्तित्व**—पृथ्वीराज रा व्यक्तित्व ने खडो करण माय भी म्हेने राजस्थानी विद्वाना री एक मोत बडी कमजोरी निजर आवे है। टेसीटरी सू लेय'र वेलि साहित्य माथे काम करण आळा डा नरेन्द्र भानावत तई रा सगळा समीक्षका, सम्पादका पृथ्वीराज रा व्यक्तित्व ने खडो करण खातर किंवदतिया रो सहारो लीयो है।ऐ किंवदतिया उणरा चरित्र रा दो पहलुवा – वीरता अर भक्ति भावना - ने स्पष्ट करण खातर भेळी करीजी है। पृथ्वीराज री वीरता अर निडरता ने सामी लावण री खातिर राणा प्रताप ने लिखियोडो उणा रो कागद, आपरा विद्रोही भाई री (अकबर री बिरोध करने) समर्थन देवणो, नारीज रा मेला माय पृथ्वीराज री लुगाई सू अकबर न पटरारणो, चारण डावडी राजबाई रो प्रकट हुय ने पृथ्वीराज री लुगाई री रक्षा री खातिर शेरनी वण'ने अकबर करने जावणो आदि किंवदतियां न आखिरी साच मान'र विद्वाना पृथ्वीराज रो व्यक्तित्व खडो किया है। इण भात पृथ्वीराज री भक्ति भावना न दरसावण खातर प्रमाण रे रूप मे लक्ष्मीनाथ जी री शोभा यात्रा री कल्पना, आपरे मरण री भविष्वाणी, द्वारका यात्रा री टेम खुद भगवान रो सेठ रा भेष मे आवणो आदि किंवदतियो ने पूरी साच बणाय दियो गयो है। पण किंवदतिया रै आधार माथे मनघडन्त वाता न तूल देवणो साची साहित्यिक कोशिशा कोनी बण सके। असल मे ओ कवि रसिक स्वभाव रो कवि हो। तीन-तीन ब्याव करण रो प्रमाण अर माथा री सुफेद केस ने तोडती व्हैला लुगाई ने मूडो फेर'र हसण री व्हैला हिन्दी रा कवि केशवदास ज्यू हीज निराश हुय ने केवणो—

> पीथल धोळा आविया, बहुली लग्गी खोड
> कामण मत्तगयद ज्यू, ऊभी मुक्ख मरोड।

आदि प्रमाण इण कवि ने शृंगारिक अभिरुचि आळो कवि सिद्ध करो। ऐडी दशा म 'वेलि' री आध्यात्मिक रूपक कवि रे व्यक्तित्व सू मेल खावतो कोनी दीसे। जदे आपा इण तथ्य ने मान लेवा तो पाछे 'वेलि रो प्रतिपाद्य निर्विवाद रूप सू शृंगार मात्र हीज सिद्ध हुवै। अर सू ढूढाडी टीकाकार सू रूपक प्रकट करण वाळा छन्दा री टीका नी करण री बात भी तर्क सू समझाई जा सके है।

**बेलि रो तात्पर्य निर्णय**—पोथी रो तात्पर्य निर्णय करणवाळा विद्वाना रे मुजब बेलि री परख करण सू भी आ बात सामी आवे है के इण कवि रो पोथी लिखण रो खास अभिप्रेत शृंगार री पोथी लिखणो हो भक्ति री लिखणो कोनी हो। वमुके पोथी रे मुण्णोत मे हीज ओ केयो है—

गुरुदेव ब्यास जैदेव सरिखा, सुकवि एक ते एक सन्थ
श्री वरणन पहिलै कीजै, गूथियै जेणि सिगार ग्रन्थ

आ बात कवि री शृंगाराभिमुखता ने प्रारम्भ मे ही थिरपै। पोथी रे विचाळै कृष्ण-रुक्मिणी रा मिळण खातिर षडऋतुवा रो वरणन करीजियो है। पोथी रो नाव भी नायक नायिका रे प्रेम री बेल रे रूप म दिरीजियो है। ऐ सागळी बाता इण पोथी ने शुद्ध शृंगार री रचना हूवण रो प्रमाण प्रकट करे है।

निष्कर्ष—'वेलि' सू मिलणवाळा अतर्साक्ष्या कवि रो व्यक्तित्व अर वेलि काव्या री परम्परा आपा ने इण तथ्य तई पहुचाय देवे के 'वेलि' रा रूपकवाळा छन्द सायत प्रक्षिप्त है। ढूढाडी टीकाकार इणा री टीका कोनी की है। आ बात भी इण विचार ने थिरपण री प्रेरणा देवे है। इण वास्ते 'वेलि' रा दूजा पाठा ने इण आप त्तियो रे रेवता स्वीकार करणो सम्भव कोनी हूय सके। इण रे अलावा वे तथ्या री खोज भी की जावणी जरूरी है के इण री टीका मे टेसीटरी कई परिवर्तन, सशोधन सवर्द्धन कीया हा। उण जागावा माथे टेसीटरी अवसकर आपरा निजरा विचारा ने थिरपिया व्हैला। म्हारी समझ मे तो एक विदेशी आदमी राजस्थानी री सास्कृतिक धरोहरा सू भरियोडी पोथी रे सागे कित्तो न्याव कर सकगो व्हैला इण री खोज करणो भी जरूरी है। क्यू के किणी भी भाषा री पेतडी जाणकारी रे रूप मे कोई भी विदेशी भाषा री सास्कृतिक परम्परावा सू जुडाव माड'र उण ने समझण री जागा शब्दा रा साधारण अरथा सू जुडण री घणी कोशिश किया करे। इण खातिर टेसीटरी री कोशिशा ने आधी वृद्धा सू लेवण री जागा परख री विवेक भावना सू लेवणो जरूरी है। 'वेलि' रा मूल पाठ री पिछाण री खातर इण बात री खोज भी जरूरी है के इण री ढूढाडी टीका ने कोरा विश्वास र आधारा सू जूनी मानणो चाईजे के भाषा शास्त्र अर ऐतिहासिकता रे आधारा माथे मानणी चाईजे ? 'वेलि रा मूल पाठ री पिछाण रे वास्तै आ जरूरी है के उण रा मूल्याकन ऊपरला सवाला रे मुजब कियो जावे। इण मू ही ज 'वेलि री साची साहित्यिकता आपा सामी लाय सका ला।

☐

(राजस्थानी साहित्य अकादमी रे वास्ते पत्र वाचन)

# १६८३ री पुरस्कृत पोथ्यां : एक बेबाक टीप

पुरस्कार पोथ्यां री स्तरीयता री पिछाण करावे के कोनी करावे ओ सवाल घणो पुराणो है। पुरस्कार रै ब्याज सू मानवीय अनुभवा रो ऊजलो रुप सम्मानित हुवै के कोरो मोरो रचनाकार हीज आनन्द पाय'र रै जावे ऐड़ा मोकळा सवाल पुरस्कारा रे साथै हीज हरमेस सामी आवता रैवे। राजस्थानी साहित्य मांय आलोचना री पागळी हालत देखता थका अजे तईं ऐड़ा सवाला री चरचा कम हुई है।

राजस्थान अर राजस्थानी दोना रे वास्ते अकाल कोई अजूबो कोनी है बल्के ओ तो अठे री पिछाण रो एकूको आधार है। जमी ने आली भर करण आळा छांटा सू ज्यू जमी री प्यास कोनी बुझ सके इयांहीज भरती री दोय चार किताबा सू राजस्थानी साहित्य री निजू पिछाण कायम हूयने उण रो टोटो कम कोनी हूय सके। इण वास्ते राजस्थानी साहित्य माय तो ओ सवाल घणो महत्व राखे है के इण रा साहित्य री पिछाण रो आधार आखिर कई है ? अठै अनुभवा रा उजास ने'के रचनावा री स्तरीयता ने के जीवण रा साचा चितरामा ने'के जिनगाणी रो जगामग रुप ने'के मिनख री आपरी चेतनावा रे विस्तार ने आख्वर किण ने ध्यान मे राखर पुरस्कार दिरीजे है। क्यू के अजे तईं रा हालाता ने देखता तो आ बात थिरपीज गवे है के अठे रचनावां पुरस्कारा रे लारे भाज रैयी है। पुरस्कार रचनावां रे लारे चालता कोनी दीसे। रचना रो हक रचनाकार ने अधिकारी कोयनी बणावे पुरस्कार उण ने अधिकारी बणवतो दीसे है। पुरस्कृत होवण आळो रचनाकार तो पुरस्कार मिलियां पछे आपरे सिरजण ने घणकरो गौरव देवण लाग जावे पण दूजी कानी ओरां रे मनां मांयने ममं रो बीज बापीज जावे। वे रचना री स्तरीयता ने ताक माथे म्हाक-र सिरजक रै व्यक्ति रुप ने देखण लाग जावै। इण बात री अपूठी कोसिस हुवण लाग जावे के पुरस्कार ने किणी तरऊ विवाद रो मुद्दो बणाय दियो जावे। ऐड़ी चेष्टा मांय दोनऊ पख इण बात ने जरूर अण देखणो करै के इण सूं रचनाकार ने रचना रे ब्याज सूं सगळै साहित्य रो बडो साम हुय रह्यो है। इण वास्ते पुरस्कार री बात की नूवा सवाल भी पैदा करण लाग जाया करे। आज पुरस्कार साहित्य री सम्वादी आवाज ने बुलन्द करे है के विवादी आवाज ने ? पुरस्कारां सूं लिखवा ने ओत्साहित करण री बात सामी आवे है के साहित्य रै सिरजण री प्रेरणा मिले ? पुरस्कार कोरो-

मोरो पोथ्या तई हीज थम्योडो रै जा वे के सागीडी होड करणाआळी भावना ने जनम देवे ? ऐडा और भी सवाल सामी आयर विचारा री सामग्री सामी ले आवे।

ऊपरली विवेचनावा सू ओ विचार माडणो गलत हूवे के राजस्थानी मे पुरस्कृत पोथ्या स्तर सू गिरयोडी है। दूजी कनी पुरस्कृत हूय जावण सू हीज रचना ने श्रेष्ठतम् जाण लेवणो भी गलत है। रचनाकार री अनुभूति रो सम्मान आपो आप साहित्य री जीवन चेतना ने पकडण आळी चेतना रो सम्मान हुया करे इण माय विवाद री को भी गुंजायश कोनी है। राजस्थानी रो आज रो रचनाकार सस्कृति रा सतरंगी आकर्षणां ने छोड'र जुग सत्य ने चित्त मे धार रैह्यो है। उण री लेखनी रा ऊजला आखर मिनख रे अर उणरा जीवन रै ओळू दोळू घूमण लागग्या है। अवे गोरडी री सुन्दरता ने हीज के प्रेम री ओळया ने हीज माडण री चेष्टावा समाप्त हूयगी है। रचनाकार री आ नूवी पिछाण जाणे करवटीजती जिनगाणी री आपरी पिछाण है। इण वास्ते आज री रचना प्रेरणा रो बदलाव रचनावा माथे भी साफ साफ आकीजियोडो दीसे है। पुरस्कृत पोथ्या रो रचनाकार भी इण हीज मानसिक्ता सू रचना प्रेरणा लेय रह्यो है इण पर अदेशो करणो फिजूल है। समीक्षक री आस्था मू इण पोथ्या री जाच जाणे उण मानसिकता री परखण चेष्टा हुय जावे है।

**अमूजती चेतना रो कवि : मोहम्मद सदीक**—मोहम्मद सदीक अमूजती चेतना ने चवडे लावण आळो रचनाकार है। इण कवि सामाजिकता रा अंतर्विरोधा सू अर आम आदमी रे दर्द सू'माय ही माय खदबदाय रह्यो है। एक लम्बी उडीक रे पछे री तल्खीजियोडी बेचैनी इण री रचना प्रेरणा है तो जिनगाणी रो मूड बोलतो दर्दीलो रूप इण री कवितावा री खाद है। पण इण दर्द ने कविता री एक ही लीक माथे न्हाक'र आस मूद'र बेवतो जावणो मोहम्मद सदीक कोनी सीखियो है। ओ उण सू दोवडे स्तरा माथे जूझतो दीसे है। एकणकनी ओ बनियान री बारादरी रे मायने भाक'र मिनखा ने चेतण रो हेलो मारतो दीसे है तो दूजी कनी व्यवस्था री गैर जिम्मेदार ओछी हरकता ने देख'र व्यग्य रे हथोडे सू उणा माथे चोट करता निजर आवे है। आ बात जुदा है कि सदीक रा व्यग्य तो आपरा अनूठापणा सू आम लोगा री जबान माथे सीधा चढ जावे पण उण री चेतावणिया कोरी मोरी कविता री ओळो बण'र नैतिक्ता री पाखण्डू बीला माथे अटकीज'र रेय जावे है।

*नागा मिनखा रे देस रो दर्द इणा री जादातर कवितावा रा विषय है।* इण लोगा री जिनगाणी ऊचा टीला सू टिल्ली खायोडी दडी ज्यू गुलाचिया खावती बेवती रेवे। इण वास्ते इण जिनगाणी री तिस निलावा न जनम देवे तो भूख भूतलिया उगलती रेवे। पण सम्वेदना रे राज मे उण रो कीं भी अरथ कोनी है।

कवि पण निराशा न स्वीकारण री जागा जादातर मिनख ने भोलावण देवण में जूझतो दीस है। उण री आ भावना कदे ही आशावादिता ने नकार ने तीखा सूला ने स्वीकारती दीस है तो कदे ही आ भावना भम्पीड वण र मांयला अमूर्ज ने उकेरण म लागती दीस है। पण सदीक री ऐड़ी रचनावां मे सुधारवाद रो कोरो मोरो परिभाषावा आळा रूप ही उकरीजियो है। इण माय ऊडी अनुभूत्या री जागा भावुकता रो दूध रा ऊफाण जादा निजर आवे है। इण कारण इणा री मोकळी कवितावा फिसफिस हुयनै रै जावे है।

व्यग्य माहम्मद सदीक री कविता रो धारदार हथियार है। इण री तीखी नोक सू ओ व्यवस्था रा सगना तामझाम ने ध्वस्त करण में सफल रेह्यो है। साची बाला रा डाम लगाय र आ खोखला आवरण ने नागो करण मे देर कोनी लगावे। खेत ने खावती वाड, सप्पम पाटा री जुगालिमा, आदमी रे भहटिया भरण आळा आदमी जेडा ऊडा भावा ने व्यग्य बणाय'र बोधामय रूप देवण म ओ कवि सफल है। व्यग्य रे वास्ते भाषा रो चलतो रूप, सीधा सादा मुहावरा रो उपयोग व्यग्यार्थ ने पकडण सारू शब्दा रो लचीलोपण इणारी कवितावा ने जीवन्त बणाय देवे। पण व्यग्य भावना होज मोहम्मद सदीक री कवितावा री सीमा भी है। मुहावरा री गुलामी अर कवि सम्मेलनी कविता चतुराई इणा री गम्भीरता ने तोड देवे जिण सू इण री कवितावां व्यग्य ने विचार जोगो बणावण री जागा उण ने हास्य जोगो भर बणाय देवे। 'जूझती जूण' री कवितावा माय सू जादातर कमजोर है। इण री कमजोरी कवि री सीमा ने चवडे लावती दीसै है।

**बीरयोडी नैतिकता रो रचनाकार : मूलचन्द प्राणेश**—आपरी पोथी री भूमिका माय नूवी कहाणी री बात ने घणे मान सू उठायां रे बावजूद मूलचन्द प्राणेश एक रचनाकार रे रूप म निराश ही करे। कहाणी रो आज रो रूप जिण बोध ने समेटण में सचेप्ट है प्राणेशजी री लिखणी उण रे नेडेछेडे भी कोनी है। इणां री लखणी रो विषय गाव है। पर उण री जिनगाणी रा आख्या दीसता आखर भर ऐ बाच्या है। अर्थ अर राजनीति रा दवाव गाव री जीवण दसावां ने जिण रूप म बदल दियो है उणा रो इणो री कहाण्या म दरसण कोनी हुवै। कथा मांय आदर्शां री स्थूलता माकळी हावी है। कथ्य ने साहित्य रो रूपदिरावण री जागा, नैतिकता सू बाधण भर री चेप्टावा इणा री रचनावा माय दीसे है। कहाण्या रो चरित्र समाज सू हैं ज्यू रा ज्यू लेय'र थिरपीजियोडा है। उण री मनाभावनावां, सामाजिकता ने निभावण में उभारता दोवडो पण, मांयली छटपटाहट अर जुगसत्य सू जूझती चेतना इणां रा नायक म कोनी है। जिन्दगाणी रा ऊपरला रूप अखबारी घटनावा जोसा प्रसग अर बीरयोडी नैतिकता ने घीस र पाछी लावण री चेप्टावा इणा री

लेखक री शोध भावना ने उजागर करे। पण दूजा निबन्धा माय विवेचन अर निरूपण मे पूर्व धारणावा साफ दीसे है। आलोचना म तर्कां री थिरपणा करने विचार माडीजिया करे। विचारा ने माडण खातर तर्क कोनी ढूढिया न्रे। पण 'घिन प्रिथीराज रग प्रिथीराज' या 'नेणसी' जेडा निबन्ध मांय लेखक आपरी पूर्व धारणावा ने शोध रो चोगो पहिरावण री चेष्टा कीनी है।

जहूर खा रा चितराम सस्कृति ने आकण माय पूरा सफल रह्या है। सस्कृति म मिठास घोळणियो उणरो आचार पक्ष लेखक बारीकी सू पकडियो है अर उणा ने सब'र माडण म कन्जूसी कोनी की है। जहूर खा कने भाषा रो रूपाळो खजानो है अर उणरो असरदार इस्तेमाल करण री भी इणा कने पूरी ताकत भी है। आम लोगा री भाषा इतो कसीजियोडी, मारक अर अपणायत सू भरीजियोडी हुय सके इण बात ने अे आपरी पोथी सू प्रत्यक्ष कर सकिया है। ओ गुण हीज इण पोथी ने थोडो सीक साहित्यिकता दिराय देवे नही तो रचना म इतिहास हावी है।

**सामाजिक जडता रो चितेरो सत्येन जोशी**—सत्येन जोशी सामाजिकता री जडता री बुराइया ने मिनख रे आचरण माय सू पकड र सामी लावण म सफल रेह्या है। समाज री अगति लोगा रा चरित्रा माय असामान्यता भर देवे। अज्ञान रा आधा कूआ माय डूबियोडा ऐडा लोग तेजी सू बेवती दुनिया रे बिचाळे भी कोरी मोरी कूपमण्डूकता ने जीवता रेवे। परम्परा ने मुरदा ज्यू ढोवे तो मूरखपणा री सीमा तई घमण्ड म भरभीजता रेवे। ऐडा लोग खुद न समझ रा भाड मान र खोखळो व्योहार करता रेवे। सत्येन जोशी शहरा रा मध्यवर्ग म नीपजणआळा ठेठ परम्परावा ने जीवण आळा लोगा रा रेखाचित्र इण पोथी मे आकिया है। इणा म फूहडता छलकती रेवे अर ठीठता ऐणा आचरण रो अग बण जावे। भाषा रो ओछोपण इणा री मानसिकता री पिछाण करावे ता नागो हरकता इणा रा व्यक्ति ने परिभाषित करती दीसती रेवे।

'रोवणिया दासा' मरियोडा मूल्या रो जनाजो है। लेखक री व्यग्य री ताकत हास्य रा पुट सू पाठका माथे मोकळो असर डालण री सिमरथ राखे। पण लगभग एक जेडा आचरण करण आळी मानसिकता रा हीज जुदा जुदा चितराम हुवण रे कारण पोथी अच्छी खासी ऊब भी पैदा करे। लखक रेखाचित्र आंकण माय एकसी भाषा अपणाई है जिको भी एक दोष है। चितरामा माय जथार्थ व्यक्ति रूपा न साहित्यिक चरित्र बणावण माय भी पूरी सावधानी कोनी बरतीजी है जिण सू ऐ गहराई सू पाठका न प्रभावित कोनी कर सके। हल्का मूड री पोथी सू ज्यादा रचना रो महत्व कोनी है। साहित्य रो ऐडो सम्मानित पुरस्कार पावण जोसी बात रचना म निजर कोनी आवे।

एक टीप—ऐ पोथ्या सू आज रा राजस्थानी साहित्य री दशा रो अन्दाजो लगायो जाय सके। आज रा रचनाकार पुरानी जकडण सू छूटण री चेष्टा में तो है। पण उणा ने नूवो रस्तो हाल तई कोनी मिलियो है। बल्के ऐ लेखक हकबकीज ने चारऊ फेर हाथ मारता दीसे है। बोध रो नूवो रूप लगभग गैर हाजिर है अर व्यग्य रा हथियार सू इण कमी ने पूरण री चेष्टा करण मे ऐ लोग भी कमी कोनी राखे है। भाषा रे वास्ते जरूर लेखका री सजगता सामी आई है पण कथ्य रे अभाव मे उण रो कीं लाभ ऐ कोय ले सकिया है। ऐडी पोथ्या ने पुरस्कार देवण री मजबूरी भी साफ साफ देखी जाय सके।



(जागतीजोत में प्रकाशित)

# परिवार अर परिवेश : साहित्य रे संदर्भ सूँ

*परिवार एक टाबर र वास्ते सँगाऊ मोटो* पाठशाला है। *जन्म सू लेयने जठे* तक वा मुट्यार कोनी व्है जावै तठे तई उण रो घणो वगत घर मे हीज गुजरिया करै। घर मे रेवता थकां हीज उण रो सस्कार हुया करै। चालणो, उठणो, बैठणो, बोलणो, आदि सू सुरु कर ने वो नैतिकता, धर्म न सामाजिक व्यवहारा रो पेलडो पाठ घर रे मायने हीज पढिया करे। परिवार रा सस्कारां रो असर इत्तो ऊडो नै *इत्तो पक्को हुया करे के वो वडो होने वेणऊ बच कोनी सके। आपरा चेतन मन मे* भला ही कोई आदमी बारला प्रभावा मू खुद रा स्वतन्त्र विचार वणा लेवे पण परिवार म रेवता थका पडियोडा सवारा सू खुदरा अवचेतन मन सु अलग कोनी कर सके। वक्त जरूरत वे प्रकट हो जावे ने उणरे व्यवहार ने आपरे अनुरूप ढाळ लिया करे। गीता मे अर्जुन ने कृष्ण भी आ बात हीज समझाई है कै अर्जुन ! युद्ध भूमि मे खुद रा रिश्तेदारा ने सामने खडा देख नै तू सकोच भले ही करले पण क्षत्रियपणा रा थारा सस्कार थने लडाई सू विरत कोनी रेवण देवेला। इण वास्ते बच्चा रे विकास म *परिवार रो प्रभाव सस्कार निर्माण री दृष्टि सू घणो हीज महत्वपूर्ण है।*

टाबर न परिवार जेडो परिवेश प्रदान करे उण रो व्यक्तित्व भी अपणे आप वडोहीज घडीज जावे। परिवार रा पडियोडा प्रभावा रै कारण हीज लुहार रो बेटो *लुहार, सुनार रो बेटो सुनार आसानी सू बण जावे। क्यूंके घर रे मायने टाबर जेडी* बाता देखे वेणऊ ऊने अप्रकट प्रेरणा मिलती जावे ने वो भी वेडोहीज आचरण करण लाग जावे। जिका घरा म मा-बाप धर्म भीरु हुवै ने परम्परित विचारा रा पालण करण वाळा हुया करे वैणा टाबर भी वेडी हीज अभिरुचिया वाळा हुवै ने वेडोहीज आचरण करण लाग जावे। दूजी कनी जिका घरा म टाबरा रा मा बाप माडर्न वणन री अभिलाषा राखे वेणा टाबर भी बचपण सू हीज प्रदर्शनप्रिय ने महत्वाकाक्षी हू जावे।

आ बात भी इणी तरऊ घ्यान म राखणी जरूरी है के अगर टाबर घर रा परिवेश ने नकार न नूवी रीत रो पालण करण री चेष्टा करे तो घर वाळा ऊन ज्यादातर अवस्था म प्रोत्साहन कोनी देवे। उण री जगा ऊने डरा धमका ने या कूट-पीट न मा-बाप खुद री रुचिया रे अनुरूप ढाळण री भरपूर चेष्टा किया करे।

इण कारण मजबूर व्है ने टाबर या तो विद्रोही व्है जावे ने उग्रता सू बडा लोगा री बाता ने नकारण लागजा। जिकारो विकसित रूप हीज आज री युवा पीढी रो असन्तोष, कुण्ठित आचरण ने विद्रोही रुख है। आज री युवा पीढी जेनेरेशन गेप (पीढिया मे दूरी) री जिकी बात किया करे उण रो आधार भी ओ विद्रोह हीज हुया करे। परिवार मे करडो नियन्त्रण रो दूजो रूप टाबर रे मन मे निराशा री भावना ने जन्म दे देवे। वो बात बात मे खुद ने नियन्त्रित करण लागजा। इण कारण वो आपरी इच्छावा ने दबावण वालो हू जावे ने खुद रो सर्वांगीण विकास कोनी कर सके। मनोविज्ञान मे ई ने दमन री सज्ञा दी जावे जिण रे कारण बडो हुवे ने टाबर कायर, डरपोक ने बिना बात घबरावण वाळी आदता वाळो व्है जावे। अे दोनऊ स्थितिया चोखी कोनी है। अैणी बनिस्पत टाबर रे विकास रे वास्ते आ बात जरूरी है के उण माथे खुद ने आरोपित करण देवण री जागा उणरे आगे बढण रे वास्ते मा-बाप ने सहायक बणनो चाईजे।

परिवार मे बच्चा रो विकास उणी अवस्था मे सहायक सिद्ध हो सके जणा उण री मानसिक अवस्था व उण रे उमर रे अनुपात सू मा-बाप उण री बाल जिज्ञासावा ने विवेकपूर्ण ढग सू सन्तुष्ट करता जावे। टाबर री स्थिति ऐडी हुया करे के वो धीमे धीमे मा-बाप री निर्भरता ने छोड ने आत्म निर्भर बणन री चेष्टा किया करे। आ बात सब लोग चोखी तरेऊ जाणे है के अन्य जीव जन्तुआ री बनिस्पत मनुष्या रा टाबर घणी लम्बी उम्र तक मां-बाप माथे निर्भर रेह्या करै। बयू के दूजोडा जीवा मे कोरो शारीरिक विकास होवण तक हीज निर्भरता रेह्या करे पर मिनखा रा टाबर शारीरिक विकास रे साथ मानसिक विकास भी प्राप्त किया करे। जठे तक टाबर शारीरिक विकास रे साथ ही साथ बोध री दृष्टि सूं भी समुन्नत कोनी हूजावे तठे तक उण रो सच्चो विकास कोनी हुया करे। अठे ई बात ने देखण री जरूरत है के परिवार किण उपाय सू बालक उभयपक्षी विकास मे सहायक सिद्ध हुया करै।

**टाबर रो शारीरिक विकास**—उम्र रे बढण रे साथे साथे टाबर रो शरीर भी अपणें आप बढ़तो जावै। पण शरीर रे सन्तुलित विकास रे वास्ते ई बात रो ध्यान राखणो जरूरी है के उणरे भोजन मे शरीर रे विकास री सारी बाता सम्मिलित हू जावे। इण दृष्टि सू सन्तुलित भोजन रे मांय ने प्रोटीन, वसा, खनिज लवण, विटामिन कार्बोहाईड्रेट, ने जल री समानुपातिक मात्रा होवणी जरूरी है। ऐणें मायने सू एक री भी कमी कौं न को शारीरिक विकास में दोष पैदा कर देवे।

भोजन रे पछै सरीर रे विकास मे दूजी जरूरी बात व्यायाम है। खेलण-कूदण सू हड्डिया, पेशियां समुन्नत हुया करै रुधिर रो सचार चोखी तराऊ हुया करे ने बळ

रे साथे साथे स्फूर्ति भी आया करे। आजकल रे प्रतिस्पर्द्धा रा जमाना में घणा मा-बाप टाबर री पढ़ाई रे वास्ते इत्ता सचेष्ट रेवे के वे उने मेलण भी कोनी देवे। इण सू टाबर रे शरीर रो साचो विकास कोनी हो सके। शरीर री सफाई, वस्त्र आदि भी शरीर रे चोखे विकास रे वास्ते जरूरी है। स्वच्छता सू व्यक्ति नीरोग व्है जावे ने उण री बुद्धि भी परिष्कृत हुया करे।

**टाबर रो मानसिक विकास**—टाबर रो साचो विकास उण रे मस्तिष्क रो विकास है। उण अवस्था म टाबर री जेडी रुचियां हुया करे वेनैं देखा तो ई बात रो ध्यान पडे के उण टेम टाबर खासतौर सू धर्म, नैतिकता, यौन सम्बन्ध ने जीवण रा खास खास मूल्यां रे सम्पर्क मे आवे अर वेणे मे खुद रो मानस बणावणो चावे। परिवार ऐडी अभिरुचियां ने कीकर परिष्कृत कर सके उणरी जुदी जुदी चर्चा करणो अठे सगत रैसी।

**यौन जिज्ञासा**—फायड जड़ा मनोवैज्ञानिक अे विचार सामो राखिया है के हरेक आदमी हरेक काम की न की काम प्रेरणा सू परिचालित हुया करे। फायड तो वासना ने हीज हरेक क्रिया रो प्रेरक बतळायो है। उण रे अनुसार सैं ठेठ सैसवावस्था सू हीज टाबर यौन सतुष्टि प्राप्त करण लाग जावे छोटा शिशु मा रा स्तन पान रे रूप मे, अर उण सू बडा मल उत्सर्जन रे रूप मे। इण भांत अवस्था बढण रे साथे साथे ज्यू ज्यू टाबर रो शरीर बढतो जावे फायड रे अनुसार त्यू त्यू वो वासना री पूर्ति करतो आवे। फायड री बात सू असहमति प्रकट की जा सके। आपा उण री स्थापनां ने नकार भी सका पण ई बात सू इन्कार कोनी कर सका क टाबर मे भी यौन जिज्ञासावा हुया करे। सैसवावस्था पार करता करता वो स्त्री पुरुष रे शारीरिक बनावट रे अन्तर ने पेछाणवण लाग जावे। पशु पक्षियां रा यौन सम्बन्धा ने देख ने उण री जिज्ञासा बढे ने वो मा-बाप सू इण बारे मे पूछताछ करणी चावे। ज्यादातर दसावा मे परिवार वाळा बालक री ऐडी जिज्ञासावा ने सन्तुष्ट करण री जागां ऊने डाट-फटकार ने चुप कर देवे। इण कारण ऊणरी बाल-जिज्ञासा सन्तुष्ट कोनी हुवै ने वो छुप छुप ने वेडी बाता मे रुचि लेवण लागजा। आ बात टाबर रे विकास री दृष्टि सू ज्यादा हानिकारक है।

*यौन व्यवहार रे अग रे रूप म हीज सन्तानोत्पत्ति सू सम्बन्धित बात भी* सामनें आवे। पक्षियां ने अण्डा देवता देख ने घर मे आस-पडोस मे नूवा टाबरा ने जन्म लेवता देख नें ऊरे मन म आ जिज्ञासा पैदा हुया करे के टाबर ने जीव जन्तु कीकर पैदा हुया करे? उण री उत्पत्ति रो कई कारण हुया करे? परिवार मे ज्यादातर दसावां म उण ने फुसळा दियो जावे के भगवान पैदा करे या अस्पताल सू आया करे। आज रा वैज्ञानिक युग म जदे के टाबर पग पग माथे सच्ची बातां सू